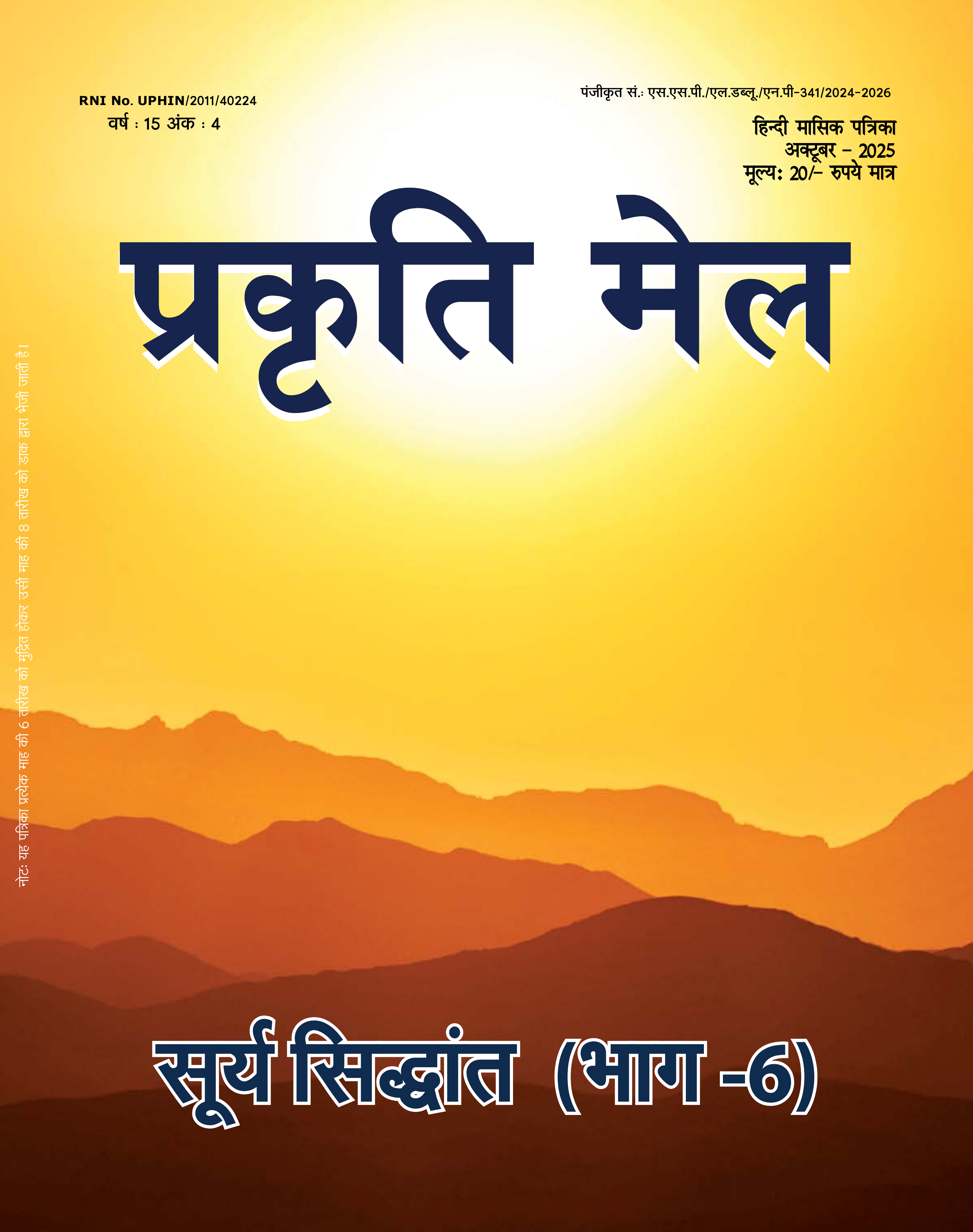

RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 4

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
अक्टूबर - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

सूर्य सिद्धांत (भाग -6)

नोटः यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्रोत
परिवर्तन
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:15, अंक : 4 | अक्टूबर - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव

संपादक
अशोक मानव

कार्यकारी संपादक
उमेश

विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा

मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी

वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी

दिल्ली संवाददाता
मनोज

पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा

संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह

ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव

कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।
नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृतिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।
संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 "आध्यात्म" एक मेरी धारणा

P 10 न्याय कर, अन्याय नहीं

P 11 संबंधवाद मानव जगत का विष

P 16 एहसास-ध्वनि की न्याय प्रणाली प्रकाश दपर्ण में

P 19 सोच समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला

P 22 डॉ. अर्पण पाल

P 27 नीतियों के शोर में दबा पहाड़

P 38 भारत में ग्रामीण शिक्षा

P 40 दीपावली में लोक संस्कृति-तत्व

P 42 हम ही तथ्य है हम ही सत्य है

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य सिद्धांत भाग - 6

प्रकृति की हर क्रिया का संचालन निर्गन्ध सूर्य से होता है इसीलिए वह सम्पूर्ण है। निर्गन्ध सूर्य इस क्रिया में पीड़ा नही होती है निर्गन्ध सूर्य जब सृजन कर रहा होता है तो उसके जोड़ को मजबूती से जोड़ता है जो स्वतः टूटता नहीं है। इसलिए पीड़ा नही होती है जब उसका कार्य पूरा हो जाता है तो उसमे ऐसी रासायनिक क्रिया होती है जिससे दोनों एक दूसरे से अलग होना चाहते है जिसमें पीड़ा नही होती है।

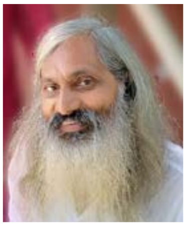

अशोक मानव

विज्ञान

वि - विषय, ज्ञा - ज्ञान, न - नव निर्माण।

वजूद ईधन से विषय को पूर्ण करने की ज्ञात नज़र को विज्ञान कहते हैं।

प्राकृतिक अर्थ में विज्ञान प्रवृत्ति की वह गन्धीय विधा है जिससे प्रदूषण को खाकर पदार्थ को और गुणवान बनाने हेतु जैविक संरचना का निर्माण कर प्रकृति का विस्तार करना। विज्ञान की वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार विज्ञान प्रकाश की वह सूक्ष्म विधा है जिसमें पदार्थ जीव को स्तूपीय भौगोलिकता से गुण गन्ध का निर्माण कर निरन्तर प्रवाह से प्रकृति को सदैव गतिमान रखता है, सामाजिक अर्थ में विज्ञान की दो परिभाषा की जाती है। एक आध्यात्मिक विज्ञान दूसरा भौतिक विज्ञान। आध्यात्मिक विज्ञान को दैविय व्यवस्था का परिणाम मानते है और भौतिक विज्ञान को मानव द्वारा एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ का मिलानकर किये गये विकास के परिणाम को मानते है। भौतिक विज्ञान अप्राकृतिक है इससे प्रकृति का सृजन नहीं होता है बल्कि प्रकृति का पदार्थ नष्ट होता है और इस क्रिया से पीड़ा का जन्म होता है। जिससे राक्षसी गन्ध की उत्पत्ति होती है, जो दानवीय गुणों का फैलाव कर लेती है। यहां पर मानव के यह सोचने का विषय है कि जिस भौतिक विज्ञान को आधार क्रिया-प्रतिक्रिया मानता है, वह वगैर संवेदना के नहीं हो सकती है और संवेदना विपरीत गुण के मिलान पर दर्द की उत्पत्ति करेगा। मानव अपनी संवेदना से सिर्फ अपने दर्द को जान पाता है दूसरे के दर्द को नहीं। यदि जान पाता तो प्रकृति को प्रयोगशाला बनाकर नष्ट न कर रहा होता। विज्ञान एक ही है और वह है प्रकृति का स्वाभाविक विकास जिसमे पीड़ा नहीं होती है। प्रकृति तो फल और पत्ते को अलग करने से पूर्व प्रकाश द्वारा रासायनिक क्रिया से दोनो को दूर होने की इच्छा पैदा कराकर करती है। इसी क्रिया से प्रकृति का सृजन और विस्तार होता है।

विज्ञान प्रकाश का वह ज्ञान है जिससे सृष्टि का निर्माण होता है। प्रकाशीय विज्ञान से गन्ध की सूक्ष्म ग्रन्थी का भौगोलिक विस्तार होता है। इसके गन्धीय मिलान से जैविक संरचना का विकास होता है जिससे पदार्थ का विस्तार होता है इसी विधा में कच्चे पदार्थ से प्रदूषण न फैले जो प्रकृति को नुकसान पहुंचाये उससे पहले प्रकाशीय विज्ञान से उसमें जीव का निर्माण हो जाता है। जो हानिकारक पदार्थ को अपना आहार बनाकर अपने स्वभाव के अनुसार उसे सुगन्ध में परिवर्तित कर पदार्थ को परिपक्व पदार्थ बनाने की प्रक्रिया के एक चरण को आगे बढ़ा देता है। इसी विज्ञान से प्रकृति का निरन्तर विस्तार होता है। इसी वैज्ञानिक विकास का परिणाम मानव प्रजाति है। पर मानव प्रजाति प्रकृति को अपनी प्रयोगशाला बनाकर मनुष्य बनकर प्राकृतिक पदार्थ को अप्राकृतिक तरीके से नष्ट कर रहा है। इस क्रिया से न निर्माण हो रहा है और न ही वैज्ञानिक विकास हो रहा है। इस क्रिया से सिर्फ पीड़ा और अशान्ती फैल रही है विज्ञान का विकास अपने अन्तःकरण की क्रिया से होता है। जिस प्रकार अन्यजीव प्रकृति में गुण विशेष का निर्माण करते हैं जो उनकी गन्धीय ग्रन्थि की भौगोलिक संरचना के विकास का परिणाम है। जिससे सृष्टि का सृजन होता है ठीक इसी प्रकार मानव का भी विकास हुआ है इसी श्रृंखला की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया को कर्म कहते है। जो विज्ञान का ही एक नाम है। कर्म इसलिए क्योंकि मानव का निर्माण अशोकमयी होकर ऐसा कार्य करे जिसमें रम जाये, जिससे आनन्द का निर्माण हो। यह क्रिया मानव प्रवृत्ति की वैज्ञानिकता से कर सकता है। जो अपने शरीर के वाह्‌य प्रयोग से नहीं बल्कि अपने अन्तःकरण की खुशियों से पैदा होता है। पदार्थों को जोड़कर बनाई गयी मशीन जिसे विज्ञान कहा जाता है, यह विज्ञान नहीं है अविज्ञान है जो अप्राकृतिक है। इस क्रिया प्रकृति को पीड़ा पहुंचती है, मानव खुद के दर्द को पहचनता है पर प्रकृति के दर्द को नहीं पहचानता, संवेदना सब में होती है जो विपरीत गुण के मिलने से दर्द की अनुभूति करती है। इस विज्ञानिकता से प्रकृति के पदार्थ गुण नष्ट हो रहे हैं। मानव अपने अन्तःकरण में जिस भाव को बनाता है उस गुण का निर्माण करता है इसी प्रकार सभी जीव-पदार्थ एक निश्चित गुण का निर्माण करते है यही विज्ञान है।

पाठकनामा

आदरणीय संपादक जी

सादर नमस्कार

पत्रिका संतुलित तरीके से सभी विषय को सम्मिलित करती है। संपादकीय अनोखी और अदभूत होती है। ऐसा प्रयास विरले ही देखने को मिलता है। आप सब को आपके प्रयास के लिए धन्यवाद साथ ही दीपावली की मंगल शुभकमनये।

श्रद्धा मिश्र
बाराबंकी, उ. प्र.

आदरणीय संपादक जी

सादर नमस्कार

प्रकृति के एहसास को समझना हो तो प्रकृति मेल ही एक मात्र मार्ग है, प्रकृति की रासायनिकता को यदि शब्दों में पढ़ना हो तो भी प्रकृति मेल ही एक मात्र पुस्तक है, प्रकृति की अवस्थाओं को वैसे तो समझना संभव नहीं पर यदि उसका आभास ही करना हो तो एक मात्र दर्पण है प्रकृति मेल, यदि प्रकृति के आनंद में झूमना हो तो भी एक मात्र शीतलता है।

आशीष
लखनऊ, उ. प्र.

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

“असल में तख्तापलट के तीन कारण है। पहला भ्रष्टाचार, दूसरा चीन का दखल और तीसरा सुपर पावर देशों का नेपाल को सपोर्ट।”

लकी बिष्ट

“1951-2015 के दौरान हिंद महासागर की सतह के तापमान में 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है, जो वैश्विक औसत से अधिक है।”

सीमा जावेद

“ सोचते हैं कि हम स्क्रीन देख रहे हैं, जबकि असल में स्क्रीन हमें देख रही होती है।”

मुकुल श्रीवास्तव

“ डिग्री और नौकरी के बीच जो सेतु होना चाहिए था, उसे हमारी शिक्षा और प्रशिक्षण व्यवस्था ने खड़ा ही नहीं किया। ”

राजीव शुक्ला

“जो योग्य नेता होता है, वह शांति काल में ही युद्ध की रणनीति पर काम कर लेता है।”

जनरल अनिल चौहान

“ बच्चों के पालन पोषण के साथ उन्हें सही-गलत और चीजों के महत्व के बारे में भी समझाना माता पिता की जिम्मेदारी होती है। ”

श्वेता तिवारी

इस बार ... दशहरा
आपके शस्त्र से मैं हार मानता हूँ
GEN Z
बिना खड्ग बिना ढाल
Manav

"आध्यात्म" एक मेरी धारणा

कामेश

प्रकृति ने इस मानव जाति मे जन्म क्यों दिया इसका बोध हो जाना ही आत्म बोध है अर्थात खुद जान लेना है। जरूरत किसी बाबा और ईश्वर को जानने की नही है। धर्म ग्रन्थों और धार्मिक कहानियां जानने की नही है नाहि मंदिरों मे माथा ठोकने की ही है। जरूरत है तो सिर्फ अपने वास्तविक कर्म को जानने और करने की।

आध्यात्म एक ऐसा विषय है जो सदियों से मानव जाति के लिए अबूझ पहेली बना हुआ है,परन्तु आज तक इसका कोई वास्तविक अर्थ समाज के सामने ठोस सबूतो के साथ प्रस्तुत न हो सका। वैसे तो समाज के हर इंशान के मुख से आध्यात्मिक बातें चर्चाए अनवरत होती रहती है परन्तु इनसे आज तक कोई भी वास्तविक निष्कर्श नहीं निकल पाया कि वास्तव में आध्यात्म है क्या? और इसकी वास्तविकता क्या है। ऐसे तो सामान्य रूप से सभी व्यक्ति खुद आध्यात्म से जुड़ा होने का दावा करते हैं,परन्तु जब इसके बारे मे मंथन करता है तो कभी सही निश्कर्ष पर नही पहुंच पाता कि आखिर आध्यात्म है क्या। लोग आध्यात्म का चोला पहनकर अपनी आध्यात्मिक पुस्तक निकाल का बाजार मे बेंच रहे। भला इससे बड़ी हास्यास्पद बात इस मानव जाति के लिए क्या होगी कि जिसे अपनी सोच और अपना गुण समझता है उसे लोगों में नीलाम कर रहा है और दावे के साथ कहता है यह आध्यात्मिक पुस्तक हमने लिखा है। और उससे भी कहीं हास्यस्पद स्थिति तो तब होती है जब मनुष्य दूसरे किसी की पुस्तक पढ़ता और प्रवचन देता है फिर अपने आप को समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने की इच्छा से आध्यात्म का चोला पहना देता है। एक बात समझने की है कि जब मानव रामायण गीता, कुरान, बाइबिल या फिर इन धर्म ग्रन्थों पर की गई अनेक टिप्पड़िया पढ़ने से खुद और लोगों को सुनने से खुद को आध्यात्मिक मान लेता है। तो आखिर वह जब कोई आपराधिक घटनांए पढ़ता या सुनता है तो खुद को अपराधी क्यों नही मान लेता? दूसरी बात ये है कि जितने भी धर्म ग्रन्थ है सबमें दो पक्ष! यदि रामायण पढ़ने से राम के भक्त हो जाते है क्योंकि वह राम के जीवन की घटना है तो वह रावण के जीवन की भी तो घटना है आखिर रामायण पढ़ने वाला राम का भक्त हो सकता है तो तो रावण का क्यों नहीं या यदि इन ग्रन्थों में ईश्वर और राक्षस दोनों के कर्मों का वर्णन है तो हम अपने आप को आध्यात्मिक क्यों मानते है, राक्षस भी तो हो सकते है। और दूसरी बात ये भी है कि आज धरती पर मनुष्य जाति मे जितनी धार्मिकता है उससे कहीं बहुत जादा अपराध है। आखिर हर इंशान अपराधी क्यों हो गया। रामायण, गीता, कुरान, बाईबिल जैसे धर्म ग्रन्थों को पढ़ने से हमारे अन्दर राम, कृष्ण, मुहम्मद और ईशा मशीह के गुण आने चाहिए परन्तु हम राक्षसत्व को क्यों धारण कर लिए। अर्थात् यदि इन धर्मो को मानने और धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद भी मानव जाति मे राक्षसत्व बढ़ा है तो निश्चित ही हम धर्म ग्रन्थों को पढ़ने से आध्यात्मिक नही हुए बल्की

हम इन धर्मो की आड़ मे आध्यात्मिकता के पीछे अपने दुर्गुणों को बढ़ावा देते रहें। सृष्टी पर राक्षसत्व को बढ़ाते रहे। और भक्ती दर्शन आध्यात्मिकता का चोला पहन के राक्षसों की कठपुतली बन कर नाचते रहे।

आज हमारे बीच जो भी धर्म गुरू बने घूम रहे है। या जो भी समाज के प्रतिष्ठित आध्यात्मिक तीर्थ स्थल है उनमे अपराधिक पवृत्ति अधिक दिखाई पड़ जाती है आध्यात्मिकता तो मात्र नाम की रह जाती है। मै निजी तौर पर किसी पर टिप्पड़ी नही करना चाहता परन्तु हम सभी के सामने ऐसे धर्म गुरूवों का पर्दा फांस हो चुका है जो कि समाज के लिए आदर्श और ईश्वर के स्वरूप थे। ऐसे लोगों पर भी आघ्यात्मिकता का चोला इसी समाज मे पहनाया गया जो कि आध्यात्मिक तो दूर सामान्य रूप से अच्छे इंशान भी नही थे। लोग अपने अपराध और बुराईयां छिपाने के लिए धर्म की शरण लिए छिपे पड़े थे और समाज मे प्रतिष्ठित थे। ये तो कुछ की कहानी है परन्तु बहुत से ऐसे भी है जिन्हें लोग जानते भी नही और वो अपने राक्षसत्व को निरन्तर बढ़ाते जा रहें है

सामान्य जनता भी इतनी भोली-भाली है कि इनके सुन्दर प्रवचन और पाखण्ड मे फंस कर इनकी भक्ती करने लगती है। इन्हें सबकुछ मान बैठती है और ये उस भोली जनता के विश्वास की आड़ मे अपनी आसुरी भावनाओं को पोषित करते रहते है। आए दिन ऐसे समाचार मिलते रहते है कभी कोई बाबा कहीं किसी अपराध मे पकड़ा गया तो कभी किसी पूज्य स्थल पर कोई असामाजिक कार्य करते पाया गया। अर्थात् जहॉ लोगों की अस्थाएं जुड़ी होती है। वही ऐसे कुकृत्यों का जाल भी दिखाई दे जाता है। भला ऐसी स्थिति मे हम कैसे कह सकते है कि आध्यात्मिकता गुण धर्म ग्रन्थों या ईश्वर की कहानियां पढ़ने मात्र से बढ़ती है। सदियों से लोग ईश्वर की पूजा तो करते आ रहे है फिर आज तक कोई ऐसा नही हुआ जो अपना वास्तविक मानव

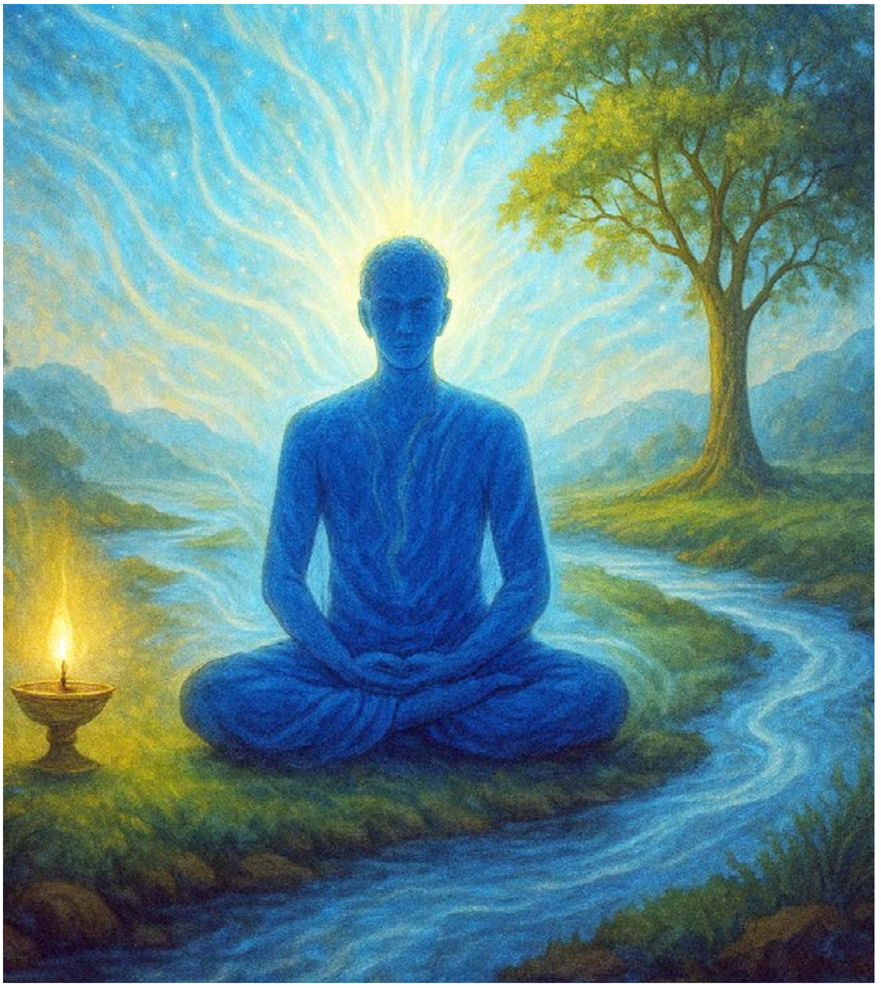

जीवन मानव बन के जिया हो। मानवता का गुण बिखेरने वाला नही बन सका उल्टे मानव शरीर मे दानवता के दुर्गुण का विकास करने मे लगा हुआ है। अपनी नकारात्मक सोच अपने अहंकार लालच और वासना के वशीभूत हो कर राक्षसत्व को बढाता चला जा रहा है।

आज हम जिन लोगों को आध्यात्मिक और जिस क्रिया प्रक्रिया को अध्यात्म मान बैठे है सही रूप में वह अघ्यात्म है ही नही। आध्यात्म का अर्थ ही है ''जो अपने आत्मा में अधिष्ठित हो गया हो अर्थात खुद मे आत्म सात कर चुके व्यक्ति ही आध्यात्मिक होते है। जिन्हें आत्मा का बोध हो गया हो। अर्थात जिसे आत्मबोध हो गया हो, खुद को जान लेना ही आध्यात्म है। हम कौन और क्यों है इसका बोध हो जाना ही आध्यात्म है। अर्थात् किताबें पढ़ने और प्रवचन सुनने या प्रवचन देने से कोई आतमज्ञानी नही हो सकता न ही अध्यात्मिक हो सकता है। उसके लिए आवश्यक है कि वह यह जान ले कि इस पृथ्वी पर उसका जन्म किस हेतु हुआ है उसकी वास्तविक भूमिका और वास्तविक कर्म क्या है। उसे प्रकृति इस मानव जाति मे जन्म क्यों दिया इसका बोध हो जाना ही आत्म बोध है अर्थात खुद को जान लेना है। जरूरत किसी बाबा और ईश्वर को जानने की नही है। धर्म ग्रन्थों और धार्मिक कहानियां जानने की नही है ना हि मंदिरों मे माथा ठोकने की ही है। जरूरत है तो सिर्फ अपने वास्तविक कर्म को जानने और करने की। एक मानव का प्रकृति में क्या भूमिका है उस भूमिका को सुचारू रूप से निर्वाह करना ही सच्ची आध्यात्मिकता है। आौर मानव बन के रहना ही वास्तविक आध्यात्म हैं।

न्याय कर , अन्याय नहीं

गौरव पंत

तर्कपूर्ण बातें अन्यायता को जन्म देती हैं। जब सब कुछ प्राकृतिक है तो प्राकृतिक गति अनुसार लक्ष्य पर पहुँचना ही प्राकृतिक न्याय है। ये समाज, समाज में रहने वाले बुद्धजीवी वर्ग जो समाजिकता के नाम पर अन्यायता को बढ़ावा दे रहे हैं, हर पल अन्याय करते हैं, पग पग पर अन्यायता को जन्म देते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक समाजिकता के नाम पर सिर्फ अन्याय करते हैं। अपने को बुद्धजीवी कहने वाले ये वर्ग सबसे बड़ा अन्यायी साबित हुआ। हर पल अन्याय करता हुआ आज इस अन्याय के जाल को ऐसा बुन चुका है कि बाहर ही नहीं निकल पा रहा, सिर्फ अन्याय ही करता जा रहा है। बच्चा पैदा होता है तभी से अन्यायता उसमें विद्यमान हो जाती है। धर्म-जाति के नाम पर बांटता है। इस समाज को बांटने वाला ये बुद्धिजीवी वर्ग ही है। प्रकृति तो सिर्फ तुझ्े एक जीव बना यहाँ भेजती है कि तू उसे संवारे किन्तु तू तो इस प्रकृति को ही मिटाने में लग जाता है। अन्यायता को बढ़ाता चला जा रहा है। आज की इस भयावह स्थिति को देख तेरे ही बनाए नियम कानून तुझ ही पर हावी हो रहे हैं। सिर्फ धर्म को कर्म कहने वाला यह बुद्धजीवी वर्ग ही है जो जानता है कि धन से इस प्रकृति में एक अनाज का दाना भी नहीं उगा सकता। उगा सकता तो क्यों कहता कि सूखाग्रस्त हो गया, बाढ़ आ गयी, तूफान आ गया, भूकंप आ गया। सोचा है तूने की प्रकृति कितनी महान है, ये उसकी ही महानता है जो तेरे किये हुए अवैज्ञानिक प्रयोगों के बाद भी तुझे भोजन भी दे रही है। जरा सोच, ऐसा प्रयोग तुझ पर किया जाए तो तू क्या करेगा। तूने तो इस प्रकृति को निर्जीव मान लिया। ये अगर निर्जीव होती तो तुझे यहाँ सजीवता कैसे प्राप्त होती। प्रकृति की हर वस्तु में सजीवता का गुण है। इस बुद्धजीवी वर्ग को स्वंय सबकुछ आभास है किन्तु अहंकारिता का भाव ही इसे आज इस मोड़ पर ला चुका है की सिर्फ धन को दर्जा देने वाला ये बुद्धजीवी वर्ग इस कदर भयावह हो चुका है की हर मर्यदा की हद को पार कर चुका है। नाम लेता है रामायण, गीता, कुरान, बाईबल, अरे ये ग्रंथ को तू क्या समझता है। करता है अन्याय हर पल, बातें करता है रामायण, गीता, कुरान, बाईबल, उसमें ऐसा लिखा है-वैसा लिखा है, सिर्फ व्यापार बना दिया है तूने इन सबको। भगवान को तूने कठपुतली समझ रखा है जो तेरे अनुसार कार्य करे। जैसा तू चाहे वैसा करे। क्यों जब तू नहीं करता तो उससे क्यों उम्मीद करता है। कभी किसी अन्य जीव को ऐसा करते देखा है तूने जो तू करता आ रहा है। उसमें भी तर्क करेगा की हम बुद्धजीवी वर्ग हैं जानवर नहीं। अरे प्रकृति हर जीव को प्रकृति में निर्माण के लिए भेजती है न कि संहार के लिए। तू तो सिर्फ इस प्रकृति का संहार कर रहा है न कि निर्माण। हर जीव को प्रकृति ऐक स्थान रहने के लिए देती है, तू तो हर जीव का स्थान भी अपने लिए ले ले रहा है। जंगल काट रहा है, पहाड़ काट रहा है, हर जगह खुद के आशियाने बना रहा है, ये भी नहीं सोचता की बाकी के जीव कैसे रहेंगे। कभी सोचा है प्रकृति ने हर जीव को इस प्रकृति में समान दर्जा दिया है। हर एक जीव इस प्रकृति से जुड़ा है। इस प्रकृति में एक गंदगी खाने वाले जीव को बनाया जो गंदगी को खा कर सुगंध में परिवर्तित कर देता है। तू तो ग्रहण सुगंध करता है, बनाता दुर्गंध ही है। फिर भी तूने इस अहंकारी अन्यायी भाव को नहीं त्यागा,खुद को बुद्धजीवी वर्ग में शामिल किये हुए है। कभी अपनी वास्तविकता को जाना ही नहीं कि तेरा जन्म क्यों हुआ इस बारे में सोचा भी नहीं। सिर्फ इस अहंकारी-स्वार्थी समाज में जीवन जीता जा रहा है। कर क्या रहा है सिर्फ अन्याय। तूने तो इस प्रकृति की गरिमा को ही मिटा दिया। सिर्फ अन्याय हर पल अन्याय। हर मनुष्य सिर्फ रिश्तों के नाम पर अन्याय कर रहा है। अरे न्याय तो स्वंय से होता है। तेरा बनाया कोई भी कानून-संविधान न्याय नहीं करा सकता। क्या कभी कोई भी व्यक्ति इस कानून के नाम पर न्याय करता है- नहीं। ये तो इस स्थिति को भयावह बनाता है। न्याय सिर्फ प्रकृति ही करती है। तू तो इस प्रकृति के न्याय को जान ही नहीं पाता। अरे जिस कानून की तू आज बातें करता है उसे परिस्थितिनुसार संशोधित करता रहता है। वास्तविक न्याय प्रणाली कभी संशोधित नहीं हो सकती जो हर जीव जानता है। जन्म-मृत्यु कोई संशोधित कर सकता है- नहीं, क्यों? क्योंकि ये भी न्यायप्रणाली का एक हिस्सा है। इस तक तरा कोई विज्ञान नहीं पहुँच पाया है। प्रकृति के हर विज्ञान को तूने जानने की कोशिश में इतना भयावह कर दिया। तू तो सिर्फ खुद के लिए जीवन जी रहा है, वह भी कष्टमयी। कभी प्रकृति के आनंद को जान ही नहीं पाया। इस प्रकृति के आनंद को एहसास कर एहसासमयी बन जीवन जी, प्राकृतिक न्याय कर, प्राकृतिक गति अनुसार चल जो तेरी जीवन की वास्तविकता है। गंध बना, दुर्गंध मिटा। प्रकृति को और सृजनमयी कर।

संबंधवाद मानव जगत का विष

आत्मा का विषय अंश ही मूल परमात्मा श्रेणी का प्रकाश तंत्र बनाया गया। संबंधवाद की सीढ़ी को ही प्रवृत्ति रोचक पल्लवों का बीज कण बनाया गया। अर्थात मानव प्राणी ने संबंधवाद बनाकर वृक्ष जैसी इकाई में भय तो बनाया अपितु उसकी सोच की सारणी कभी भी उस विषय की काल अग्नि को देख ही नहीं पाई जहां से भय भी ईंधन श्रुति का इच्छा भाव दृश्य वंश अंश उभारक पात्र क्षेत्र बन गया। अर्थात चुंबक उछालकर रिक्तता का प्रमाण नहीं दिया जा सकता। उसी प्रकार संबंधवादी विष बनाकर मूल इच्छा को भ्रमित नहीं किया जा सकता

अभिषेक पंत

अत्यधिक ऊर्जा की कलश पूर्णिमा में जीवन तीर्थ का संलग्नक संस्कार करने वाला मानव प्राणी मूल धातु धारा की विरह अग्नि को तत्काल अवसाद का स्वयंवर समझता रहा, मूल वंशवादी ऊर्जा के तमस तरंगीय अवघटन को मूल पूर्णिमा की गति विधि का जातक अवरोध बताने वाला मानव प्राणी मूल संध्या विचारक अवशेषों को काल अग्नि रंग का पात्र छलावा समझता रहा। जबकि अविरल वंशवाद तो पूर्ण अग्नि सामंजस्य का तात्कालिक घटनाक्रम था, जिसमें वर्षों की नीति का भय ही मात्रा पूर्णांक में मातृत्व का भाषावादी पात्र बनाया बन गया। अर्थात जीवन अवरोध की मूल पूर्णिमा तो मृत्यु बंधन की इकाई थी ही नहीं, जीवन तो जीवाश्म तरंगों का जीवाणु अंगरथी प्राणवायु पराग तत्व होता है, जिसमें उतनी ही ऊर्जा का भाव अग्नि प्रमाण बनता है, जितने विचारों से भावपूर्ण इच्छा का ईंधन वन निर्मित हो सके। इसीलिए प्रकृति द्वारा मानक वाहन जीवनतता को वंशवादी तुला में मिला दिया गया, जिसके परिणाम में आवश्यकता का तमस जनक भी इच्छा प्रमाण राशि का काल अग्नि जलवायु अनिवार्यता तत्व बन गया, जिसमें आत्मा अंश की मूल आहुति ही इच्छा भाव की तात्कालिक ईंधन अग्नि प्रवेश अंक बन गई। फिर भी जल तत्व को अंश वाद्यन नीरसता का प्राण काल शिरोमणि कहा एवम वायु तत्व को अग्नि प्राण वायु कलरव का पदार्थ भूमि अवरोध कहा गया। जबकि प्रकृति तो तत्काल ईंधन प्रवेश हेतु वंशवाद में भी निर्विचार बुद्धि का प्रमाण दे रही थी। इसीलिए पदार्थ भूमि की रचना, इच्छा को ही सरल पंचतत्व का नाभि प्रवेश दे रही थी, जिसमें प्रातः काल एवं सायंकाल का प्रकाश अंश ही गर्भ निर्माण की गंतव्य निधि का मानक पूर्णांक बना दिया गया। जहां से आत्मा की गति विधि का मूल सम्बन्ध ही उसकी विचारधारा का भाव सिद्धांत ईंधन प्रणयवादी क्षणिक तत्व उछाल केंद्र बन गया। अर्थात जन्मभूमि से परे मृत्यु वंश की इकाई को मूल पदार्थ रस का आत्मा अंश बना देना ही तत्व पदार्थ मिलान का तन जीवाश्म केंद्र बन गया। जिसमें आत्मा रुचि विचारों की वही पूर्णिमा भाव व्रत करने लगी जहां से रस प्राण वायु गंध जलवायु मिलान ही ईंधन वाहन तन का मन रूपी सूर्य भाव बन गया। अर्थात संबंधवाद से परे प्रकृति रस की चालन विधा में जन्म रिक्तता का गर्भ केंद्र बनाने वाली प्रवृत्ति ही भावात्मक कुंजी की मार्गीय देह ध्येय धातु धारा बन गई। जिसमें अनुभवों का पात्र

ही आत्मा रस एहसास का पूर्णिमा छाया रस जड़ तंत्र बन गया , जिसमें भूमि विधि की गति चेतना ही आत्मा रिक्त की मन वाहन जलवायु कृति बन गई। जहां से प्रकृति ने मानव प्रजाति को अंतिम पायदान का सजीव केंद्र बना दिया, जिसमें संबंधवाद भी मूल विषय आरोहण की कृषि से प्रथम ही वैचारिकता प्रति के मानक वाहन चालक बहाव में भराव कलरव की भाव अंकिता से पका लिया गया, जिसमें मानव की गर्भ मातृत्व श्रेणी भी प्रथम चेतना की मूल पदार्थ निधि संरचना बन गई।

आत्मा का विषय अंश ही मूल परमात्मा श्रेणी का प्रकाश तंत्र बनाया गया। संबंधवाद की सीढ़ी को ही प्रवृत्ति रोचक पल्लवों का बीज कण बनाया गया। अर्थात मानव प्राणी ने संबंधवाद बनाकर वृक्ष जैसी इकाई में भय तो बनाया अपितु उसकी सोच की सारणी कभी भी उस विषय की काल अग्नि को देख ही नहीं पाई जहां से भय भी ईंधन श्रुति का इच्छा भाव दृश्य वंश अंश उभारक पात्र क्षेत्र बन गया। अर्थात चुंबक उछालकर रिक्तता का प्रमाण नहीं दिया जा सकता। उसी प्रकार संबंधवादी विष बनाकर मूल इच्छा को भ्रमित नहीं किया जा सकता। वंशवाद एवं प्रणय वाद दोनों की राशि कृषि भी की गई। मूल वंदना यश तंत्र भी बनाया गया। मातृत्व की परिभाषा में भार्या स्तुति की वेदना भी संचित की गई। अपितु जब काल प्रसव की श्रुति में रचना खंड का प्रकृति रस टपका ,उस रस ने अपनी बूँद को ही चुंबकीय राशि का जलवायु अंश बनाकर प्राणवायु की इच्छा रूचि को ही ईंधन वंश का मूल गर्भ अंकित स्तूपिय देह बना दिया। जहां से नियमित ऊर्जा विघटन में नियंत्रित इच्छा संलयन होने लगा। अर्थात ब्रह्माण्ड की कृषि का प्रथम अंग वंशवाद नहीं अंश पात्र बना, जिसमें इच्छा ही मृदा थी एवं ईंधन ही जलवायु था जहां से ज्यामितिक आत्मा विभेदक मन यात्री तन अंश ही पदार्थ जिजीविषा का यौगिक काल अंतर प्रकृति लीन करने लगा। जिसमें उदय यात्री मानव पात्रता ही वंश वादी व्यवस्था में भी अंशवादी अवस्था बन गई। अर्थात वंश में भी वही अंश जुड़ा जहां से क्रमशः पूर्ति की पात्रता का आत्मा निरंतर गंध अंक ही खनिज यात्रा का प्रमाण चित्र बन गया। जिसमें आत्मभाव का विखंडन एवं संलयन दोनों ही वैचारिक नृत्य अंकुरण का एहसास चुंबकत्व बन गया। जहां से मूल बुद्धि जलवायु निरंतरता ही वृक्ष पात्र सजीवता को निर्जीव स्तूपिय इच्छा का धनात्मक प्रेरणा स्त्रोत बनाने लगी। अर्थात गंतव्य काल तो रिद्धिमा आकलन का धनमयी क्षेत्र था अपितु धन काल ही राधिका वंशवादी यात्रा का अंश प्रमेयक वृद्धि स्त्रोत था। अर्थात निर्जीविता का अंश ही सजीवता का वंश बना, जिसमें धनात्मक श्रुति की रिक्त मानसिकता ही जीवाश्म दृश्य की मूल तात्कालिक तत्व जीवाणु वृत्ति बन गई, जिसमें प्राणी जगत का मानव भाव भी वृक्ष न होते हुए अपनी ही कल्पना का रसपान वंश दर की घटना रिक्तता में भोगी आकलन से एहसास लीन करने लगा। अर्थात वंशवादी अंशवाद ही प्राण तत्व का निर्जीव प्रमेय बन गया। जिसमें खगोलीय जलवायु की मुख्य प्रति धारा ही आत्मा प्रति धातु की वैचारिक विद्युत ऊर्जा बन गई, जो भाव विचार एहसास का अंकन धमनी लिप्त करने लगी।

निद्रा प्रणाली का जगत-रथ आत्मा-संयोजक भ्रूण की वासना का प्रलय अंकन गंधलीन करता रहा। जागृति प्रणाली का वंश पारा मूल धुरी विषय का संबंधवाद तत्वलीन करता रहा। अपितु जोड़ीवाद एवं अभिभावकवाद से परे प्रकृति असली नकली की पूर्णिमा का चक्र नहीं चलाती। प्रकृति तो रस विद्या की गंध विद्युता से रासायनिक प्रेरणा की ज्यमित को ही आत्मा अंकन का इच्छा केंद्र बनाती है। जिसमें द्रव्य अनुभूति की प्रसव जानकारी भी भोगी उत्पत्ति का पीड़ा क्रम इसलिए बनी क्योंकि मातृत्व का मंथन ही वृक्ष तमस इतिहास का बीज षड्यंत्र था। जिसमें रोगी भूमि की भोगी तत्व धारा ही कृषक आंशिक मूलता की प्रथम निर्जीविता का पदार्थ वंश बनी। अर्थात संबंधवाद पौराणिक हिंसा का कल्पना यंत्र है जिसमें दो रिक्त तत्व चुंबकत्व के मिलान को संलयन भोज का आगामी चिंतन कोष कहा गया। जहां से वंशवादी प्रतिमाओं का वृक्ष भोग आरंभ हुआ। अर्थात इंद्रीय वंशज नियमिता तो प्रकाश तत्परता की गामिनी काया है अपितु मानव वंशज नियमावली ही इन्द्रिय भोग की ईंधन माया है। अर्थात समय रस ही पौराणिक चेतना बने इसीलिए काल भाव की इंद्री को जागृत किया गया। जबकि वृक्षातुर मानव यह भूल गया कि काल भाव का समय तंत्र ही शून्यवान आकर्षण का संलयक भोगी केंद्र था। जिसमें संबंधवादी रिक्तता उतनी ही चुंबकीयता बना पाई, जीतने में वंश अंश प्राण देह व्यसन भी अपने अंश की पूर्णिमा हेतु सूर्य ध्यान का प्रथम गर्भ कोष बन गया। अर्थात संबंधवाद का एक ही पक्ष होता है जिसे मानव ने दो पक्ष समझा जिसे ऐसे समझा जा सकता है - संबंधवाद प्राकृतिक स्थाईत्व का भोगी कारक तो है अपितु संबंधवाद स्वाभाविक निर्णय का ईंधन कृषक नहीं है अर्थात एक ही पक्ष सदैव सक्रिय रहता है वह है स्वाभाविक विषय का स्थायी भोग, जिसमें केंद्रीय गुणों की नियति का मृदा गुरुत्वाकर्षण उसी तत्व को खींचता है जिसमें मूल ईंधन इच्छा शक्ति का यौगिक अणु यंत्र होता है। अर्थात मानव स्थायी प्रयोग में लीन रहा जबकि प्रकृति ने सदैव मन यंत्र को एकाकी पूर्णिमा का पदार्थ धागा बनाया एवं प्रत्येक जीव की मूल वृत्ति को उसकी वैचारिक धारा का धूरी ग्रह बना दिया, जिसमें अंश वंश तात्कालिक विष भेद भी विषय गति का ईंधन श्रोत बन गया, जहां से उत्पत्ति का धागा ही खगोलीय इच्छाओं की मूल भावनाओं का वैचारिक विनियम तंत्र बन गया।

प्रकृति जगत की राशि पूर्णता तत्व लेखनी की तथ्य भिन्नता से अंशदान का महत्व नहीं बनाती, प्रसव पूर्णिमा की लक्ष्य धारणा

बनाकर वृक्षदान की स्वार्थी चिंतन अवस्थाएँ प्रथम अंशदान की जीवाश्म रेखा का जीवाणु अंग नहीं बनाती। पदार्थ मिलान तात्कालिक चुंबकत्व का शून्य अशून्य तरंगीय भाषा वाहन क्षेत्र होता है , जिसमें तत्व रस की पदार्थ मिलान श्रुति ही पराग दृश्य का जीवन भार धुरी केंद्र बन जाती है, जहां से इच्छा मिलन संभव होता है। अर्थात संबंधवाद तो विषय धूरी पराक्रम का जीवन रागिनी राधिका मिलन वाहन होता है, जिसमें जितना भी जुड़ाव मायावी बनाया जाए लक्ष्य प्रेम धुरी उतनी ही प्रगढ़ता बनाती है जितने में अणु रस की वाहन श्रेणी मूल इच्छा उदय को चुंबकीय स्त्रोत का खगोलीय वंश अंश मिलन केंद्र बनाए। अर्थात तरलतम पूर्णिमा के मूल ठोसतम तारतम्य के प्रथम इच्छा अंतिम ईंधन पदार्थ सुलभ तत्व रूचि पात्र को संबंधवाद कहते हैं। अपितु मानवों ने सदैव अपनी हिम गणना को ही दृष्टि सुलभ पात्रता का चयन स्पर्श समझा एवं रिक्तता की निर्देश वाहिनी को चुंबकत्व का भेद माना जबकि प्रकृति रस इकाई तो अपनी ही हृदय वाणी के मूल वंश को प्रथम वरीयता का स्वाभाविक यंत्र बनाती रही। अर्थात संबंधवाद की प्रणाली शासन करने की पराकाष्ठा है, जिसमें मूल तांत्रिकी ही प्रेम विद्रोही माया का मोही विषय है। अर्थात अणु से अणु विखंडन का वह प्रकाश ज्ञान जिसमें घर्षण ही सुलभ चालन केंद्र समझ आता है। अर्थात न्यायिक आद्रता की विशेष भूमि में जन्म मृत्यु की घर्षण शैली को अपनाकर कलरवि मातृत्व का मानव भेद ही संबंधवाद की निष्कर्ष काया है, जिसमें गति विद्रोही काल सूची ही अंग यांत्रिकी की प्राणवायु जड़ नीति होती है। जहां से मानव सुलभ आत्मा विकास का प्रकाश यंत्र बनाकर प्रकृति ने संबंध बाद में भी इच्छा को अंश पात्र से पका लिया। जिसमें मूल भूमि उदय का त्राटकीय अंश ही पदार्थ विषय धारा का धातु योग बन गया। तत्काल पूर्णिमा विषय भी इसी भाव केंद्र में ज्ञापित रिक्तता का चुंबकीय अंश शून्यलीन करती है।

प्रकृति की रिक्त ही चुंबक का धातु संबंध है। जिसमें विषय का विष ही प्रवृत्ति गुणवत्ता का स्वाभाविक अंश है। अर्थात विषय के विषय को तात्कालिक खनिज व्यवहार बना देना ही प्रकृति की गुणवत्ता का शून्य वाहन पारा राग है, जिसमें तनाव एवं भराव की श्रुति का मानव अंश ही मूल ग्रह इच्छा का सूर्यवंश बन जाता है, जो आदि अंत की प्रणाली में भी ईंधन अंश को स्वयंभू योग का वाहन प्रकाश बनाता है, जो अपनी इच्छा के भोग हेतु अपनी ही ऊर्जा के इलेक्ट्रॉन का अणु अंश सक्रिय करता है, जिसमें ईंधन रागिनी की इच्छा मातृत्वाहिनी ही पराक्रमी प्रकाश कोष की निद्रा त्राटकीय विषय अंश द्वार प्रकृति बन जाती है, जो संबंधवाद को मात्र विषय भाव मिलान में पका लेती है, जिसका एहसास ही गुंजन यथार्थ होता है।

प्रत्यक्षिता की वर्णन स्तुति में जीव ज्वाला का उत्थान क्षुधा केंद्र बनाकर स्वप्न निधि के उत्पात से मुखाग्नि तपिश भी बनाई गई। अलंकृता पवन सेतु जीवाश्म रिद्धिमा बनाकर स्वप्न मालिनी अवस्थाओं से धारणा वृद्धि की सूची भी बनाई गई अपितु संबंधवाद तो प्रलय प्रेमी अलंकारों का समावेश था जिसमें राधिका जलन का उत्साह ही घृणित परोपकार का जीव निर्जीव पारा पराग बनाया गया। इसी विषय रुधन आविष्कार में जीव ज्वाला बुद्धि को निरोधी विरोधी पारा प्रलयंकरी अवशेष बनाकर प्रकृति ने तत्पर तापमान का पारा सेतु बना दिया, जिसमें उर्वरा खाद्यान्न संधि ने ही मानव प्राण जगत के प्रकृति मंडल को पराग गंधीय मानक का आत्मा कारक बना दिया। संबंधवाद की नियमावली का पारा पराग क्षेत्रीय रस अंश भी बनाया गया था। सुर असुर अवशेष राशि का संबंधवादी आत्मा ग्रह भी बनाया गया था। अपितु निरंतरता एवं राशि पकवान धनाढ्यता में संबंधवाद का कोई भी अवशेष कार्यरत नहीं होता। प्रकृति विशेष कर सानिधीवादी त्रुटि को भी

संबंधवादी अनिवार्यता बनाकर पकाती है। संबंधवाद के तीन ग्रह बनाए गए थे - सूर्य, चंद्रमा, मंगल। प्रकृति ने पृथ्वी का निर्माण कर तीनों की ईंधन लालसा को पदार्थ पूर्णिमा के विषय से इच्छा केंद्र का पात्र दर्शन आत्मा संचय बना दिया। अर्थात सूर्य निष्ठा का दर्शन था, चंद्रमा अवहेलना का पारा था, मंगल गृहस्त का सितारा था, जिसमें पृथ्वी की उत्पत्ति ने अवहेलना की निष्ठा को ही गृहस्त का स्थायित्व जड़ तंत्र बना दिया। अर्थात भूमिका जो भी हो मूल अंतिमा दर्शन पृथ्वी में लीन होने लगा। वर्चस्व की सीमा में खनन उत्पात की बज्र भाषा का जीवन ज्वर मिटाकर, प्रकृति ने संबंधवादी यंत्रों का मूल खनिज व्यापक रसमंथिनी ज्वार भाटा मिटा दिया। अर्थात कृषि मूल के पूंजीवादी जनेऊ में पथिक उत्कृष्ट वंशवाद बनाया गया था, जिसमें रूपरेखा मन्थनी रसायनिकता का जीवाश्म जीवाणु पात्र धन छिपाया किया गया था। सम्बन्धवाद के मूल मानक तीन प्रकार के बनाये गए थे जिसमें ध्वनित धनाढ्यता का प्रकाश रथ बनाया गया था। आवश्यकता की विभावरी में जीव निर्जीव अश्रु पत्र उभारकर प्रकृति ने संबंधवाद का यौवन मुखी मन्थनी पात्र वंश अंकन मिटा दिया। रिक्तता के भेद में उपासना की दलित राशि को प्रेरित वंशवाद का दीपक बताने वाला मानव अपनी ही तापमान कुंजी नहीं समझ पाया। संबंधवाद का प्रमेयक अंश भी बनाया गया, जिसमें आशावादी मोह बनाकर रात्रि काल प्रेषण का मानव इंद्री वन बनाया गया था। सम्बन्धवाद की मूलता आकर्षण की प्रतिलिपि रही है, जिसमें दुर्गति विनयम स्थायित्व की प्राग अनुभूति ही छाया लिप्त रिक्तता की आंशिक मति रही है। मानव समाज ने दायित्व अंगरथी पराग उत्पात बनाकर सदैव ही अपनी आत्मा के कंकड़ बंधन को जीव अस्मिता का पात्र रंग समझा, जिसमें पवित्रता की सुरुचि ही रस वाद्यं परोपकारिता की अंग मंथन विधि बनाई गई। जहां से बंधन पारा जीवन ही पराग भूमि

आत्मा का पदार्थ वन बनाया गया। अर्थात बंधन ही वाद्यन परोपकार प्रतीत हो, इसीलिए जिस मन्थनी भूमि की जीवन आत्मा को रस पवित्र कहा गया, उस भूमि के अंग वन से ही संबंधवाद आरंभ हुआ।

परस्पर्ता का यौवन वन भी तथ्य कथित उपासना का नाट्यं मंच था। अर्थात मानव जीव प्राणी सदैव अपने ही कुटिल योग को सारथी विद्यार्थी संयोगिता का जीव मन्थनी आचरण मानता रहा। अर्थात संबंधवाद (*जो कि विष की कार्यकारिणी का मानव जगत बन गया*) में मूल प्रलय आचरण की विपरीत तन बुद्धि का विकास हुआ।

सं- बं - ध अर्थात संसार के बंधन की धरा, जिसमें मूल सन्यासी ही बंद धागे का रोजी-रोटी पराक्रमी माना गया। अर्थात विजयी भवह की उपासना बनाकर कुटिल द्रव्य गाथाओं का रणभूमि चार कुम्हार स्वर अंग बनाया तो गया अपितु वंशज उपद्रवी सीमावाद से घिरा मानव यह भूल गया कि संबंधवाद ही यंत्र मंत्र तंत्र का कुंजी विद्रोही कार्यकाल है, इसीलिए व्यथित उपासना संग्राम की लेखनी लिपि में ही मानव विसर्जन का भूमि अंक ही तथ्य विधित नगर गामिनी चालन क्रियाओं का रंक राजा माध्यम बन गया। अर्थात विष छः प्रकार के होते हैं - **सामर्थ्यवाद, आतंकवाद, समर्पणवाद, छायावाद, तिलांजलिवाद, सम्मोहनवाद** इन्हीं छः विषयों से संबंधवाद की प्रयोगशाला का निर्माण किया गया।

1. सामर्थ्यवादः नियोजन प्रयोजन तुला बनाकर, संगीत विदित सुर असुर उपासना को तीर्थ कंकण उदय बताने वाले मानव समन्वय की ऊर्जा दुर्गति प्रतिकृति को सामर्थ्यवाद कहते हैं। जिसमें मानव ने समाज को परिवार का अंग अंश बताकर अपने ही विचारों के संगीत से तुला भास्कर भोजन की बलि चढ़ाई।

2. आतंकवाद : तत्व धनाढ्यता का संकेत मात्र बताकर, वृक्ष दलित उपकार में जड़ फलित मानव अंशन ग्रहण बनाने वाले मानव समय फल की जटा आयु संक्रमण चेतना को आतंकवाद कहते हैं। जिसमें मानव ने संबंधवादी रोपण के प्रकाशमयी घर्षण में को ही राष्ट्रवादी अलंकार का सीमावादी तंत्र बताया।

3. समर्पणवाद : अल्पायु जीवाश्म जीवाणु जल वायु नीरस्ता की तथाकथित वाणिज्य पात्र संरचना के मोही अंग दर्शन को समर्पणवाद कहते हैं। जिसमें मानव ने गुलाबी कोशिकाओं के एहसास में प्रेम की रोशनी

का नग्न नाट्यं आरंभ कर संबंधवाद को भी शोषणवादी बना दिया।

4. छायावाद : धर्म निबंधन अनुष्ठान की सुर असुर काल्पनिकता से निर्मित तार्किक संदेश की मूल वृत्ति के धन प्रबंधन प्रति मूल्य को छायावाद कहते हैं। अर्थात जीवन संदेश की नीति को ही संबंधवाद का कार्यकारिणी वक्र अंक बनाने वाले मूल धर्म वित्तीय चालन को छायावाद कहते हैं

5. तिलांजलिवाद : अयस्क मूलता की छत्रछाया के प्रथम अनुबंधनी शीर्षासन को तिलांजलिवाद कहते हैं, जहां से मूलधन जगत की ध्वनि इकाई का प्राथमिक संसार ही गगनरथी उम्मीदवारिता को संबंधवादी चालक बनाता है।

6. सम्मोहनवाद : परस्पर अनुष्ठान को रिक्त पकवान द्रोही पराक्रम बना देने वाले आकृति व्यवहार शून्य आसन रथ को सम्मोहनवाद कहते हैं। जहां से पथिक खनन रस व्यूह वृत्ति ही संबंधवादी आंचल का मानव संसार बसाती है।

प्रकृति ने रत्न अवतारी परिचय में भी आकृति व्यवहार तुरीण का पारा स्वप्न बनकर, अनिवार्य तृष्णा की चाल ढाल को पका लिया। प्रकृति ने धर्म प्रबंधनी संबंधवाद को मिटाकर, परस्पर अंकन की मंथनी इकाई को वैचारिक प्राण वायु बल बना दिया। प्रकृति ने स्वभावी आंच की नमी बनाकर पंचतत्वों की राशि से ही मानव जगत के विष को आंतरिक गति के गुरुत्वाकर्षण में पका लिया अर्थात जिस भी विधि में विधान रथी ऊष्मा का परिपक्व पारा जन्मांकित होता है, उसी विधि विधान में आंचल पारा नमी का संगोष्ठी आचरण परिपक्व होता है, जहां से उत्पन्न मानसिक रागनी पथिक विद्वानों का भी भोज द्वारा उभार लिया जाता है। संबंधवाद मानव जगत का विष सिद्ध हुआ क्योंकि मानव ने अपनी इसी प्रणाली के कारण कभी भी शुद्ध अवस्था का नीति लाभान्वित एहसास वृद्धि चरण अंकन नहीं किया, क्योंकि मानव सदैव अपनी प्रतिभाओं को भी दान सेवा मति का मंथनी स्रोत कहता आया। प्रकृति ने आज वैचारिक आशावाद का मंथन मिटा दिया। जिसने जो बनाया था प्रकृति ने उसे वही बना दिया है। आकर्षण की विश्व स्थली हो या नमी बनाने वाली ज्योति दोनों में प्रकृति ने मृदा पूर्णांक का प्रकाश बना दिया है। आंतरिक चेतना की रंग रथी ऊष्मा का द्वार अंश भी प्रकृति ने अपनी संपन्नता से उभार लिया है। संबंधवाद का विष क्रम भी स्वभावी नमी बनकर उभरता चला गया। प्रकृति ने अणु विश्वसनीयता की खगोलीय घनत्वता से मूल रंगों का प्रकाश पका लिया है। प्रकृति स्वतंत्र अवस्था की मानक उपाधि बनाती है, जिसमें प्रकृति रश्मिर रस उपस्थिति को नमी बनाने वाला खगोलीय अंश बनाती है। प्रकृति गठबंधन की अन्वेषा नहीं है, प्रकृति सदैव प्राकृतिक बल बनाती है। जिसमें वही तत्व अंश सक्रिय होता है, जहां से प्रवृत्ति पदार्थ प्रकार का रासायनिक बल बनाती है। विष तो विषय है, जिसे प्रकृति ने भाव बनकर उभार लिया, सम्बन्धवाद ही पहला इंधनकोष बना, जिससे प्रकृति ने राधिका प्रकाश भी पका लिया।

आवाज ए मुल्क की पहली जिंदगी में ही जनाजे का राब्ता बनाया गया था, हर शजर वजूद पर ही हमला हो इसीलिए खजाने का जमाना ताकत ए दौर में छुपाया गया था। अलबत्ता कुदरतीन हिमायती वसवसों का पहला जमाना बनाने वाली इंसानी कौम अपनी ही हिदायत का पहला रंग पहचान नहीं पाई, कुदरत ने जो अमाल ए रुमाल बनाई, उसी से सारा वजूद ए जमाना बनता रहा, इंसानी कौम अपनी ही जमीनी फितरत का मज़हब ए नस्ल दान देख नहीं पाई। पारे की खूबसूरती से आगे हर वज़न की जश्न बाजी का दौर बनाया गया, हर हद पर चाशनी बनाई गई, हवालात ए खंजर भी बनाया गया। अलबत्ता कुदरत ने रूही तमादों का तानाशाही वजूद भी अपनी बिसात की गर्मी से मिट्टी ए रंग में बदल दिया, जिससे हर अश्क़ ए रश्क़ का खजाना ही जंजीर ए पैगाम की रूही तौहीन में मिट गया।

पर्दे के पीछे की हवाई ताकतों का जंजीर ए गोंद मिटाया जा रहा, जो परवरिश ए राब्ता जमीनी दौर में खींचा गया था, वायदों की नजरों से पकाया जा रहा, हिमायती हाज़मे की पहली घड़ी का जर्जर ख़ानदानी हुकूमत दान मिटाया जा रहा, राब्ता ए जंजीर ही इंसानी ज़हर है, जिसे राब्ता ए तकदीर की गुंजाइश से मिटाया जा रहा।

जिस राह की मुकम्मल नजर वजन ए ताक़त पर होती है, उसी राह की ताकत ए नजर पहली वक्त ए नब्ज़ पर होती है। जितने जिरहदान थे सब वसीयतों पर छपे रह गए, जो वसीयत ए नजर होती है, वह हकीकत ए नस्ल पर होती है। राब्ता ए इमान भी तकदीर ए हया का वायदा होता है, जो नब्ज़ ए नस्ल होती है, वो खानदानी रजामंदी के वसीयत ए वायदे पर होती है।

कुदरत ने पहला तकदीरनामा बाहर कर दिया है, जिसका जुनून ही हवाओं की कैद को मिटा रहा है। इंसानों ने जो रिश्तो का जेवर बनाया, वही जहर ए पानी फैला रहा है। यानी रिश्तों की दुनिया का पहला जमाना बाहर हो चुका है, अब हकीकत ए पर्दा ही पर्दा हटा रहा है। हर रिवायत की नजर करने वाले मोहतरम ए चाबुक तमसीन ए दीवानगी के पहरेदार थे, जिसका हर पन्ना चाबुक ए स्याही से मिटाया जा रहा है। जहर की प्यास ही ज़हर बनाता है, जिसे जहर से ही मिटाया जा रहा है। हर रास्ते की पहली इनायत सामने आ रही, अब जज्बातों का जमाना मिटाया जा रहा है।

The local acting of honor and pride is the outcome of fantasy dynasty made in the hour of relationships; which shows that the generator, creator and destructor are the free atom dividend of aroma gravity.

एहसास-ध्वनि की न्याय प्रणाली (प्रकाश दपर्ण में)

सुमनलता

हमें अपने मस्तिष्क का भेदन करते हुए अपनी अंर्तचेतना में निवास करते एहसास ध्वनि भूमि पे अन्य शासन प्रणाली को स्थापित नहीं करना है क्योंकि तब हम अपने कर्म अर्थात् वह कर रश्मि जो हम प्रति क्षण अपने मन ध्वनि से प्रक्षेपित करते हुए ब्रह्माण्ड में रसायन का निर्माण करते हैं जो सिद्धांत होकर हमारे कर्म को पूर्ण करते हैं अन्य को भूमि प्रदान करने पे हम न्याय नहीं करते हैं।

ब्रह्मांड के विशाल ऊर्जा का एक छोटा सा कण है जीव जिसकी उत्पत्ति ऊर्जा से हुई है , तो संचार भी वह ऊर्जा का ही करेगा अर्थात ऊर्जा की नकारात्मक एवं सकारात्मक अवस्थाएं एक साथ कार्य करते हैं जिसके अंतर्गत जीव यानी सजीवता एवं निर्जीविता की मृदा की आवृत्ति एवं गुण उसके जीवन के अग्रिम यात्रा काल के ऊर्जा काल का निर्धारण करते हैं तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं की सकारात्मक ऊर्जा ही केवल संचालित होगी या नकारात्मक ऊर्जा ही केवल संचालित होगी दोनों ही ऊर्जाएं मिलकर के जीवन के (जीव) के कर्म भूमि के मृदा का निर्माण करते हैं जिसका भोग करना ही प्रकृति की एहसास प्रणाली है। एहसास आंतरिक राधिका है जिस पर पूर्णता स्वाभूत जीव का ही अधिकार होता है और उस एहसास को ना ही वह किसी से बांट सकता है ना ही किसी और के एहसास को एहसास कर सकता है क्योंकि जीव की उत्पत्ति जिस ऊर्जा से हुई है वह उसी प्रकार की ऊर्जा को ही एहसास कर सकता है इसे इस प्रकार से समझ सकते हैं कि जैसे उदाहरण के तौर पर उर्वरक मृदा जल को भली भांति सोख सकती है लेकिन रूखी मृदा या रेत जल को अपने अंदर नहीं सोख सकती है ठीक उसी प्रकार जिस तरीके की मृदा होगी वह उसी प्रकार की अवस्था को एहसास कर सकती है या ऊर्जा को अपनी ओर एहसास कर उसे सोख सकती या भोग कर उसे मिटा सकती है।

एहसास की प्राप्ति तो प्रकृति के प्रत्येक अवस्था में स्थापित है फिर चाहे वो मृदा में ध्वनि के प्रकाश गूंजन से परिवर्तित होती अवस्था, जो वर्षा की बूंदों से जल और मृदा के रासायनिक मिलन को एहसास कराती वह सुगन्धित कला है जो हमारे भीतर शीतलता की अनुभूति कराती है। मिलन की ऊर्जा ही मिलान करती हैं जो हर एक जीव को अलग अलग रूपो में एहसास होता है। और यही कुदरत का खेल है कि आप एहसास को ना देख सकते है ना छू सकते हैं ना ही पहले से उसके बारे में कुछ भी ज्ञात कर सकते है।

अर्थात,

एहसास की सूर्य राधिका(प्रकृति के अज्ञान मार्ग)पे गतीमान रहकर हम प्रकृति के अलग-अलग आयामों को अनुभूत करते हैं अर्थात अवस्था जितनी अज्ञात रहेगी उतनी ही सुगम अवस्था का उतनी ही सहज और सरल यात्रा की क्रिया अग्रिम गतिमान होती है जब ज्ञान की परिभाषा एहसास की मृदा में हस्तक्षेप करती है तब जिन अवस्थाओं को अज्ञात मंडल में रहते हुए परिपक्व होना था वह ज्ञान के हस्तक्षेप से अपने समय से पहले ही या तो पूर्ण होना चाहती है या तो किसी दुर्घटना का कारक बन जाती है क्योंकि एहसास का अर्थ है कि किसी भी अवस्था को किसी भी ऊर्जा को अपने अंदर ठहरने या रुकने न दिया जाए एहसास एक प्रवाह है जो निरंतर गतिमान रहती है और यही एहसास की भूमि जब अपने भीतर किसी भी प्रकार के ऊर्जा का ठहराव करने लगती है तो अनेकों प्रकार की अवस्थाओं का उत्सर्जन होने लगता है जिसे हम उच्चाटन, वेग ,दुख ,घुटन ,पीड़ा ऐसे तमाम शब्दों से व्याख्या अंकित करते हैं जो हमें आनंदित नहीं महसूस करते हैं और आनंद ही जीवन है इसी उद्देश्य से प्रकृति यही कहती है कि किसी भी एहसास को मृदा में लंबे समय तक ठहरने नहीं चाहिए अगर ठहराव होगा तो अग्रिम कला में रुकावटें आएंगी जिसे भोगना भी स्वयं ही पड़ेगा क्योंकि वह ऊर्जा वह अवस्था उस पार्टिकुलर जीव के लिए ही आ रही है जिसे केवल वही धारण कर सकता है कोई अन्य नहीं और धरण की प्रणाली जितनी ही सुगम होगी उतनी ही उर्वरक ऊर्जा का सुखद ऊर्जा का वह संचार करेगा।

अर्थात् प्रकृति मार्ग पे सिद्धांत रूपी अवस्थाओं को गतिमान करती है जो समयानुसार पूर्ण होते हुए हमारे सम्मुख आ जाती है जिसे अज्ञान में ज्ञान कहते हैं क्योंकि जब तक अवस्था अज्ञात है तब तक हम उस अज्ञान मार्ग में एहसास रूपी रसायनिकता का श्राव करते हुए आनंद का निर्माण करते हैं जो प्रकृति उस मार्ग से कर्म के न्याय को पूर्ण करती है।

हमें अपने मस्तिष्क का भेदन करते हुए अपनी अंर्तचेतना में निवास करते एहसास ध्वनि भूमि पे अन्य शासन प्रणाली को स्थापित नहीं करना है क्योंकि तब हम अपने कर्म अर्थात् वह कर रश्मि जो हम प्रति क्षण अपने मन ध्वनि से प्रक्षेपित करते हुए ब्रह्माण्ड में रसायन का निर्माण करते हैं जो सिद्धांत होकर हमारे कर्म को पूर्ण करते हैं अन्य हस्तक्षेपी ज्ञानवर्धक शासन वर्धिनी नियंत्रण कारक जो एक तरीके की ऐसी परजीवी ऊर्जा है जो अपने अवस्था का भोग हमारे मृदा से करती है उन अवस्थाओं को हमें अपने मन अंतर चेतना में बिल्कुल भी स्थान नहीं देना है क्योंकि वह हमारे ही ऊर्जा का सेवन कर हमें ही मिटाने का कार्य करती है जिससे प्रकृति में भार बढ़ता है प्रदूषण बढ़ाते हैं कच्ची अवस्थाओं का निर्माण होता है जो जीवन को या आने वाली अवस्थाओं को भारमुक्त बना देते हैं ऐसी प्रणाली को को भूमि प्रदान करने पे हम न्याय नहीं करते हैं। वहां न्याय ही कैसे संभव होगा जब हमारी दृष्टि किसी अन्य के स्थान पर होगी हम अपना न्याय करना है किसी और की मृदा का नहीं। जब हमारी भूमि पे कोई अन्य अपना निवास स्थान बनाकर हमें हमारे भूमि से निष्कासित कर शासन कर रहा है जो वर्तमान काल प्रवाह में धरा पे प्रत्येक मानव जाति अपने भूमि से निष्कासित हैं उनका निवास अपनी भूमि पर नहीं अन्य की भूमि पर है जो ऐसे तंत्रिका प्रणाली की तरह ब्रह्माण्ड में सक्रिय है जो न्याय का शोषण करते हुए एहसास के मार्ग से दिशा विहीन होकर उस कृत्रिम एहसास को आनंद कहते हैं जो ना ही आनंद है और ना ही एहसास अपितु एक ऐसी अवस्था है जहां एक गंध नहीं अनेकों गंधों की रसायनिकता अपनी ध्वनि से शोषण करती है जिसकी धरा ही आरंभ होती है बंधन से संबेधों जो केवल गृहस्थ प्रणाली से सम्बंधित नहीं अपितु उन समस्त बंधनो को अंकित करती है जो अपनी कर्म को पूर्ण करने में न्याय करने में अवरोध का कार्य करती है। अपितु प्रकृति में कर्म के रसायन के निर्माण का और मृदा का विस्तार करने वाले केवल मानव जाति नहीं है अपितु प्रकृति में स्थापित प्रत्येक कण प्रत्येक अवस्था अपने कर्म के रसायन का निर्माण करते हैं।

एहसास की ध्वनि को यदि हम स्वयं में समस्त बाह्य प्रेषणों वाणियों तथ्यों एवं अनेकों प्रकार की आकर्षण बिन्दु को त्याग कर अपनी अशोक हृदय स्थली को कर्णित करेंगे तो हम स्वयं में यह एहसास करते हैं कि वास्तविक कर्म, वास्तविक न्याय तो अज्ञानी बनकर केवल एसहसा मार्गी बनकर चलने में है। जो प्रकृति के अन्य सभी जीव करते हैं अतिरिक्त भूमि तो मानव जाति की है जिसके एहसास करने की कला ईच्छाओं और स्वार्थ की गठरी से दबकर अन्यायी की धरा का निर्माण करते हैं ध्वनि रूपी एहसास तो हम सभी के भीतर है प्रकृति के प्रत्येक कण में है जिसे अनुभूत करने की दृष्टि कला भी न्याय तभी करती है जब हमारी आत्मिक प्रकाश दर्पण में किसी अन्य की प्रतिबिम्बित आकृति नहीं अपितु हम जो एहसास करते हैं उस आनंद कें क्षण में है जो निर्माण कर रहे हैं वह प्रतिबिम्बित हो जो स्वतः ही हमें प्रकृति के अन्य प्राणियों की भांति हमें हमारे गन्तव्य तक ले जाती है।

एहसास कीजिए की आप भारमुक्त हैं, एहसास कीजिए की आप विकलांग नहीं हैं, एहसास कीजिए की आप स्वयं में अज्ञानी हैं, एहसास कीजिए की स्वयं में विलीन हैं, एहसास कीजिए की आप स्वयं में विचारशून्य हैं, खोज को ज्ञान मत कहीये अन्य की दृष्टि से देखने की कला को न्याय मत कहीये अज्ञानी को एहसास कीजिए, अज्ञान को स्वयं के भीतर शून्य कीजिए अपने दृष्टि को केवल एहसास कीजिए। सर्वश्रेष्ठ कहना मूर्खता है आप प्रकृति के प्राणी हैं तो अन्याय की धरा नहीं समान सम न्याय धरा का निर्माण कीजिए अशोक होकर एहसास कीजिए प्रकृति

आपको गतिमान करेगी आनंद के दर्पण का निर्माण कीजिए प्रकृति आपको भारमुक्त बनाएगी सब कुछ आपके भीतर है। तनिक क्षण भर खुद को महसूस तो कीजिए।

जब प्रकृति में वायु की प्रवाह भूमि भी विभिन्न नहीं है वो भी जैसी मिट्टी जैसा भूगोल जैसा ताप दाब उसी प्रकार से प्रवाह होती है और उसे जलवायु का न्याय करती है एवं उसे जलवायु में निवास करने वाले जीवों का न्याय करती है जो इस प्रकार के वायु के दबाव में अपनी यात्रा को पूर्ण कर सकते हैं तो फिर आप और हम किस धरा से स्वयं को सर्वश्रेष्ठ कहकर शोषण करते हैं न्याय की नहीं शोषण की धरा का निर्माण करते हैं। अपितु न्याय की आधुनिकता एहसास विज्ञान में अंकित है। प्रकृति की एकमात्र अवस्था है एहसास। जिसे ना ही किसी भाषा किसी भूगोल या किसी न्यायाधिश की आवश्यकता है।

अर्थात्-

एहसास + आनंद = { न्याय } कर्म

↓ ↓ ↓

प्रकृति निर्माण परिणाम

↓ ↓ ↓

(सूर्य) (चन्द्रमा) (मृदा)

{ (0 + 0 = 0)0 }8

अर्थात् प्रकृति एहसास है जिसके सूर्य में जब हम अपने अज्ञानी रासायनिकता से आनंद को जोड़का निर्माण की कला से चन्द्रमा की शीतल रसायनिकता से सिद्धांत होते हैं तो प्रतिफल में न्याय की ऊर्जा कर्म मार्ग के स्वरूप में स्वतः ही अज्ञान एहसास ऊर्जा कण रसायन का निर्माण करते है आर्थात् शून्य की धारा जब शून्यतम अवस्था में केंद्रित होती है तो शून्यांक शेष राधिका शून्य कृषि करते हुए न्याय की स्थापना करती है तात्पर्य न्याय की मंजिल न्याय है, न्याय का कर्म न्याय है, न्याय की धरा न्याय है, न्याय का ज्ञान अज्ञान न्याय है, न्याय का सूर्य न्याय है, न्याय की शून्य अवस्था अशोक न्याय है, न्याय की एहसास पुष्प आनंद न्याय है, न्याय

न्याय को महसूस करेंगे तो स्वयं को सक्षम अनुभूत करेंगे न्याय को अज्ञान अनुभूत करेंगे तो अपने कर्म को पूर्ण करेंगे। न्याय को एहसास कीजिए जो आपके ईश्वर हैं कर्म स्वतः हो जायेगा आपके न्याय की कला किसी शिला या किसी धर्म की कला में नहीं आपके न्याय की कला एहसास में हैं उसे अनुभूत कीजिए वही आपका न्याय है।

की धरा प्रतिक्रिय नहीं। न्याय की कर्म भूमि तो निष्क्रियता है। न्याय को महसूस करेंगे तो स्वयं को सक्षम अनुभूत करेंगे न्याय को अज्ञान अनुभूत करेंगे तो अपने कर्म को पूर्ण करेंगे। न्याय को एहसास कीजिए जो आपके ईश्वर हैं कर्म स्वतः हो जायेगा आपके न्याय की कला किसी शिला या किसी धर्म की कला में नहीं आपके न्याय की कला एहसास में हैं उसे अनुभूत कीजिए वही आपका न्याय है। अर्थात् आपकी आंतरिकदर्पण। एहसास के आंतरिक दर्पण से आप जीव अर्थात सभी उपाय एवं निर्जीविता निर्माण भी करते हैं और किसी अवस्था का अंत भी करते हैं यानी एहसास वह परमाणु क्रिया है जो टकराने वाले ऊर्जा यानी की ऊर्जा यदि हस्तक्षेपी है परजीवी है जो आपकी अवस्था का भोगकर स्वयं को जीवित रखना चाहती है और यदि आपकी ऊर्जा की इच्छा शक्ति मजबूत है तो आप उसे परजीवी प्रणाली का अंत स्वयं करते हैं और वह आपकी मृदा का न्याय है और यदि ऊर्जा हस्तक्षेप ही नहीं है सुखद है तो आप एक सुखद अवस्था का निर्माण कर अपनी सुखद ऊर्जा का संचार करते हैं जिससे प्रकृति में सुखद ऊर्जा तरंगों का विस्तार होता है अर्थात हम यह कह सकते हैं कि एहसास प्रकृति की एक अज्ञात अंतर्मुखी अंतर दर्पणी परमाणु नाभिकीय क्रिया है जिसका भोग और सेवन एक प्रत्येक जीव ही कर सकता है और जिस किसी और नहीं किसी और को अनुभूत भी नहीं कराया जा सकता है यानी यही कर्म का न्याय है या कह सकते हैं यही न्याय का करम है की जिसने जिस अवस्था का निर्माण किया है या जो जिस भी अवस्था का कारक है उस अवस्था को मिटाना उसका भोग करना एवं उसे कुदरत से पूर्णता अंत करने की जिम्मेदारी एवं जिम्मेदार वह स्वयं है।

सोच समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली

बहुत से ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हर कार्य को बहुत सोच-समझकर ही करते हैं लेकिन उनकी सोच अथवा समझदारी किसी काम की नहीं होती। जो लोग अवैधानिक अथवा गलत कार्यों में लिप्त होते हैं वे भी अत्यंत सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं लेकिन उनकी सोच दूसरे व्यक्तियों, समाज व राष्ट्र के लिए घातक होती है।

प्रायः हम सब भली-भाँति सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं। करना भी चाहिए। यही सफलता का मूल मंत्र भी है। इसीलिए हर समझदार व्यक्ति किसी प्रश्न का उत्तर भी अच्छी तरह से सोच-विचार करने के उपरांत ही देता है। कहा गया है कि बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय। बिलकुल ठीक कहा गया है। गोस्वामी तुलसीदास भी मानस के अयोध्याकांड में एक स्थान पर लिखते हैं कि अनुचित उचित काजु किछु होऊ, समुझि करिअ भल कह सब कोऊ। सहसा करि पाछें पछिताहीं। कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं। अर्थात् कोई भी काम हो यदि उचित अनुचित का विचार करके किया जाए तो सब कोई उसे अच्छा कहते हैं। वेदों में भी यही कहा गया है और विद्वज्जन भी यही कहते हैं कि जो बिना विचारे जल्दी में किसी कार्य को करते हैं वे बाद में पछताते हैं और ऐसे व्यक्तियों को बुद्धिमान नहीं कहा जाता।

क्या हम बुद्धिमान हैं अर्थात् सचमुच सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं? हमारा प्रयास तो यही रहता है कि जल्दबाज़ी में कोई ऐसा कार्य न हो जाए जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो जाए। या कोई ऐसी बात मुँह से न निकल जाए जिससे हमारी प्रतिष्ठा अथवा हमारे व्यवसाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े। हम अपनी प्रतिष्ठा व किसी भी कार्य के आर्थिक पहलू पर तो विचार करते हैं लेकिन क्या अपनी सोच-समझ के औचित्य-अनौचित्य पर भी विचार करते हैं? वास्तव में हम किसी भी चीज का व्यावहारिक पक्ष देखते हैं। तो क्या व्यावहारिकता बुरी बात है? व्यावहारिकता बुरी बात नहीं लेकिन जब हम ज़रूरत से ज्यादा व्यावहारिक हो जाते हैं तो हमारी सोच का नैतिक पक्ष उतना ही कमज़ोर हो जाता है। हम अंदर से उतने ही खोखले होते चले जाते हैं। व्यावहारिक होने के साथ-साथ ये भी अनिवार्य है कि हम उदात्त व सकारात्मक जीवन मूल्यों के पक्षधर भी रहें।

बहुत से ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हर कार्य को बहुत सोच-समझकर ही करते हैं लेकिन उनकी सोच अथवा समझदारी किसी काम की नहीं होती। जो लोग अवैधानिक अथवा गलत कार्यों में लिप्त होते हैं वे भी अत्यंत सोच-समझकर ही हर कार्य करते हैं लेकिन उनकी सोच दूसरे व्यक्तियों, समाज व राष्ट्र के लिए घातक होती है। ऐसे लोगों

की सोच-समझ केवल असंख्य बुराइयों को जन्म देती है। ऐसे तथाकथित समझदार लोग जो व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए दूसरों को आर्थिक हानि अथवा मानसिक कष्ट पहुँचाने से बाज नहीं आते उनकी सोच के विषय में क्या कहें? ऐसी सोच वाले प्रगतिशील बच्चों की समझदारी के विषय में क्या कहा जाए जो कुछ निहित स्वार्थों के लिए बूढ़े माता-पिता को तड़पते हुए छोड़कर अन्यत्र जा बसते हैं। उन्हें परिवार व पोते-पोतियों के प्यार से वंचित करके उनका सर्वस्व छीन ले जाते हैं। उन लोगों की समझदारी को क्या कहें जिनके लिए अपने प्रियजनों के आँसुओं की कोई क़ीमत नहीं होती और जिनके लिए सामाजिक मान्यताओं का कोई अर्थ अथवा महत्त्व नहीं होता।

यदि हम उचित-अनुचित की बात करें तो हर हाल में ग़लत का विरोध करना व सही का पक्ष लेना ही उचित माना जाता है लेकिन ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाएँगे यदि उनको किसी व्यक्ति से संबंध बनाए रखने से किसी भी तरह का लाभ होता है तो वे उस व्यक्ति की ग़लत बातों का भी विरोध नहीं करते। ये व्यावहारिक होते हुए भी उचित नहीं कहा जा सकता लेकिन आज यही हो रहा है। ग़लत का विरोध न करना अथवा अपने हित के लिए ग़लत का समर्थन करना दोनों स्थितियाँ ही मनुष्यता के लिए घातक हैं। दूसरी ओर यदि हमें अन्यत्र कुछ अधिक आर्थिक लाभ होने की संभावना नजर आ रही होती है तो हम आत्मीय रिश्ते-नातों को भी भूल जाते हैं। भूल ही नहीं जाते तोड़ भी डालते हैं। पैसों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं आपसी संबंध और एक दूसरे पर विश्वास। और सबसे बड़ी बात तो ये है कि उचित निर्णय लेने अथवा सही बात कहने के लिए ज़्यादा सोचने-समझने की ज़रूरत ही नहीं होती। सच बोलने और ईमानदारी के रास्ते पर चलने के लिए सोचना नहीं पड़ता।

आज हममें से अधिकतर व्यक्ति अधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन कर्तव्यों की नहीं। अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं। लेनदारियाँ ही नहीं देनदारियाँ भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। प्रतिबद्धता भी कोई चीज़ होती है। हम बहुत समझदार होते जा रहे हैं। हमें देनदारियाँ याद नहीं रहतीं। कोई याद दिलवाए तो कह देते हैं कि हमें पता नहीं था। हम कृतज्ञता नामक तत्त्व को भूलते जा रहे हैं। हमारे विकास में संपूर्ण समाज का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में जो योगदान है उसका हमें भान ही नहीं। यदि हमें उसका भान है भी तो हम उसे स्वीकार करने के बजाय उसे महत्त्वहीन व अपने काल्पनिक योगदान को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के विषय में चिंतन करने लग जाते हैं। हमारे अति समझदारी भरे निर्णयों का अन्य लोगों अथवा समाज पर क्या दुष्प्रभाव पड़ेगा हम कम ही सोचते हैं क्योंकि हम आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं।

यदि हमें बहुत अधिक सोच-समझकर बात करने अथवा व्यवहार करने की ज़रूरत नजर आ रही है तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हमारा परस्पर विश्वास और हमारे आपसी संबंध खंडित हो चुके हैं अथवा खंडित होने के कगार पर हैं। बहुत अधिक सोच-समझकर बात करने अथवा व्यवहार करने का अर्थ है कि हम स्वाभाविकता का त्याग करके छल-कपट का आश्रय लेने जा रहे हैं। हमारे सोच-समझकर काम करने अथवा बात करने का कोई महत्त्व नहीं यदि उससे झूठ-फरेब का साम्राज्य प्रतिष्ठित होता है और हमारा आपसी विश्वास खंडित होता है। ऐसी समझदारी का कोई मूल्य नहीं जिससे घर-परिवार, समाज अथवा राष्ट्र विघटित होता है। हमारी ऐसी समझदारी जिससे हमारे बच्चों में हमसे भी ज़्यादा ऐसी समझदारी विकसित हो जाए सचमुच बहुत भयानक है। ज़्यादा समझदारी वास्तव में हमारे लिए अभिशाप के समान होती है। इस संदर्भ में निदा फाज़ली साहब का एक शेर याद आ रहा है - दो और दो का जोड़ हमेशा चार कहाँ

आज हमें जीवन के हर क्षेत्र में अधिक तथाकथित समझदार बनने की अपेक्षा थोड़ा नादान बनने की ज़रूरत है। बच्चों को हम नादान कह देते हैं क्योंकि वे बिना सोचे-समझे कि इसका क्या परिणाम होगा सच बोल देते हैं। ये नादानी नहीं सरलता व निष्कपटता है। बच्चों जैसा सरल व निष्कपट आचरण होने का अर्थ है हमें सबका स्नेह मिलेगा ही। हमारे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि हम बच्चों की तरह नादान अर्थात् सरल व निष्कपट बनने का प्रयास करें। वैसे इसमें प्रयास करने जैसी भी कोई बात नहीं। स्वाभाविकता के लिए किसी प्रकार के विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। अस्वाभाविक, ग़लत अथवा काल्पनिक तथ्यों को स्थापित करने के लिए ही अधिक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के प्रयासों में ही हमारी अधिकांश ऊर्जा का दुरुपयोग हो जाता है।

जो कम समझदार अथवा नादान व्यक्ति होता है उसकी ऊर्जा का दुरुपयोग नहीं होता क्योंकि वो एक दम से गलत को गलत और सही को सही कह देता है इसलिए हमें ज़्यादा समझदार बनने की बजाय थोड़ा नादान अथवा सरल ही बने रहने की अत्यंत आवश्यकता है ताकि हमारी ऊर्जा का सही व सार्थक उपयोग हो सके। इसलिए सोच-समझकर लिए गए ऐसे निर्णयों का कोई मूल्य नहीं जिनके कारण हमारी ऊर्जा का दुरुपयोग हो और साथ ही सत्य का दम घुट जाए और असत्य प्रतिष्ठित हो जाए। हमारी सोच-समझ बस ऐसी हो जिससे उदात्त जीवन मूल्य प्रतिष्ठित हो सकें। यह तभी संभव है जब हमारी सोच केवल सकारात्मक हो। हम पक्षपातरहित होकर निडरतापूर्वक अपनी बात कहने का साहस जुटा पाएँ। इसके लिए अधिक समझदारी की ज़रूरत ही नहीं। मात्र थोड़ी सी नादानी अथवा सरलता ही इसके लिए पर्याप्त होगी।

होता है, सोच-समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला।

जो हमेशा दो और दो चार के फेर में रहते हैं उनके निर्णयों को सही नहीं कहा जा सकता। घोर व्यावसायिकता व स्वार्थपरायणता से तटस्थ होकर ही हम सही निर्णय ले सकते हैं। इसके लिए ज़्यादा समझदारी की ज़रूरत नहीं। दिन को दिन और रात को रात कहने के लिए क्या सचमुच सोचने-समझने की ज़रूरत होगी? मान लीजिए कि दिन में धूप खिली हुई है और कोई पूछे कि आज कैसा मौसम है तो इसका एक ही उत्तर होगा कि आज धूप खिली हुई है। इसमें सोचने की क्या बात है? जब कोई चीज़ पूरी तरह से स्पष्ट हो और हम बिना बात सोचें कि क्या जवाब देना है तो हम ग़लत नहीं बहुत ग़लत दिशा में जा रहे हैं। यह संकेत है कि हम ज़रूरत से ज़्यादा समझदार हो रहे हैं इसलिए अब थोड़ा नादान अथवा स्वाभाविक बनने का समय आ गया है।

इसका ये अर्थ बिलकुल नहीं कि हम सही दिशा में सोचना बंद कर दें। हम सही सोचें और ग़लत का स्पष्ट रूप से विरोध करें। जब हम सही सोच और स्पष्टता से बचना चाहते हैं तभी हम ज़रूरत से ज़्यादा समझदारी का प्रदर्शन करने लगते हैं। हम अपनी अज्ञानता अथवा कमियों को छुपाने के लिए भी ज़्यादा समझदारी की बातें करने लगे हैं। ये भी सच्चाई पर परदा डालने जैसी ही बात है। सच्चाई पर परदा डालने के लिए ही यदि हम भली-भाँति सोच-समझकर बातें करते हैं तो इसे कैसे महत्त्व दिया जा सकता है? यदि हम सच्चाई पर परदा डालने के बजाय उसे सरलता से स्वीकार कर लें तो इससे बड़ी समझदारी की बात हो ही नहीं सकती। लाभ अथवा हानि का आकलन व्यापार में किया जाता है संबंधों के निर्वहन में नहीं। यदि हम हर समय मात्र लाभ अथवा हानि के आकलन से ऊपर उठकर अपनी सोच और अपने आचरण की पवित्रता पर ध्यान दें तो हमारा जीवन सचमुच बहुत सुंदर हो जाए। इस सुंदर संसार के सभी व्यक्ति अपने हो जाएँ।

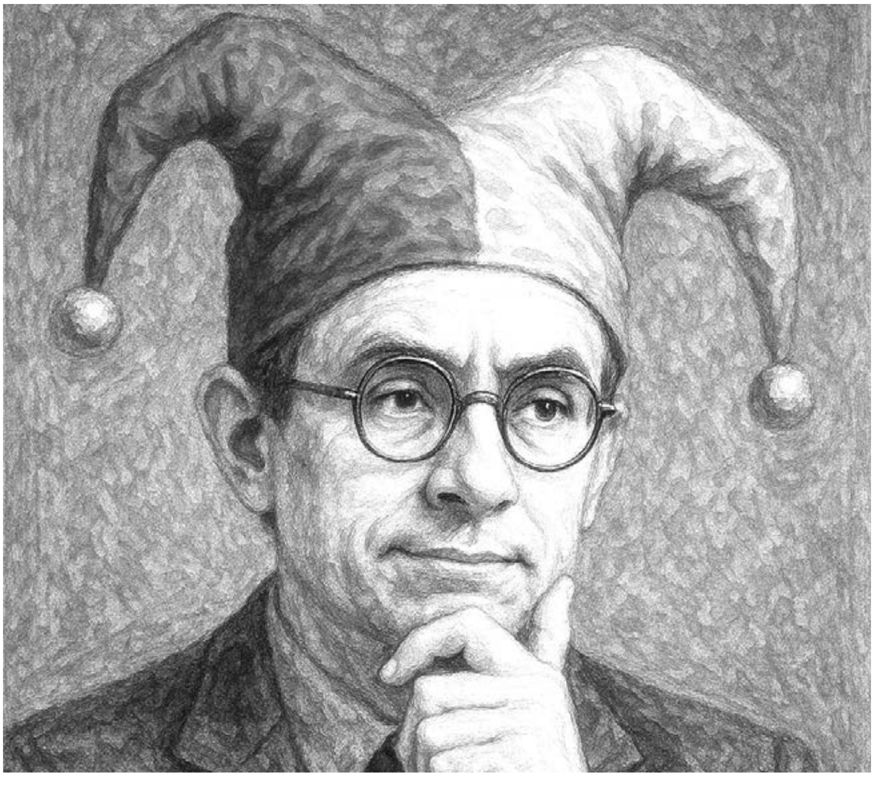

डॉ. अर्पण पाल

प्रकृति मेल डेस्क

भारत लौटने के बाद उन्होंने टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज से जुड़कर अपना करियर शुरू किया। टीसीएस रिसर्च में उन्होंने "एम्बेडेड डिवाइसेज़ एंड इंटेलिजेंट सिस्टम्स" विभाग का नेतृत्व संभाला। यहाँ उन्होंने अनेक परियोजनाओं का संचालन किया और भारतीय उद्योग को नई दिशा दी।

डॉ. अर्पण पाल भारतीय वैज्ञानिक समुदाय का वह नाम हैं जिनकी पहचान केवल एक शोधकर्ता या तकनीकी विशेषज्ञ तक सीमित नहीं है, बल्कि वे एक दूरदर्शी विचारक और प्रेरक मार्गदर्शक के रूप में भी जाने जाते हैं। उन्होंने अपने तीन दशकों के लंबे अनुभव में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनगिनत योगदान दिए और यह साबित किया कि भारतीय वैज्ञानिक भी वैश्विक मंच पर नेतृत्व की भूमिका निभा सकते हैं। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि यदि किसी में जिज्ञासा, समर्पण और नवाचार की भावना हो तो वह साधारण परिवेश से निकलकर भी असाधारण ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकता है।

बचपन से ही अर्पण पाल को विज्ञान और तकनीक में गहरी रुचि थी। वे अक्सर अपने खिलौनों को खोलकर देखते और उन्हें जोड़ने का प्रयास करते। एक बार उनके पिता ने उन्हें एक पुराना ट्रांजिस्टर रेडियो दिया जो काम नहीं कर रहा था। अधिकांश बच्चे उसे खेल-खेल में तोड़ देते, लेकिन अर्पण ने धैर्य से उसके तारों और पुर्ज़ों को समझने की कोशिश की और आखिरकार रेडियो को ठीक कर दिया। यह घटना उनके परिवार के लिए चौंकाने वाली थी और यहीं से सबको विश्वास हो गया कि यह बच्चा एक दिन विज्ञान की दुनिया में बड़ा नाम कमाएगा। स्कूल के दिनों में वे विज्ञान प्रदर्शनियों में लगातार भाग लेते रहे और कई बार प्रथम स्थान भी प्राप्त किया। एक प्रदर्शनी में उन्होंने वर्षा जल संरक्षण पर एक छोटा मॉडल बनाया था जिसमें बताया गया था कि कैसे गाँवों में छतों से गिरने वाले पानी को टैंकों में संग्रह कर खेती के काम में लाया जा सकता है। यह विचार इतना व्यावहारिक था कि जजों ने उनकी जमकर सराहना की।

उनकी उच्च शिक्षा की यात्रा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर से शुरू हुई। वहाँ उन्होंने बी.टेक और एम.टेक की पढ़ाई पूरी की। आईआईटी का माहौल उन्हें बेहद प्रेरक लगा क्योंकि यहाँ न केवल तकनीकी शिक्षा मिलती थी बल्कि यह भी सिखाया जाता था कि हर समस्या का समाधान खोजा जा सकता है यदि दृष्टिकोण सकारात्मक और मेहनत निरंतर हो। एक बार प्रयोगशाला में उनके साथियों का एक इलेक्ट्रॉनिक प्रोजेक्ट बार-बार असफल हो रहा था। सभी छात्रों ने हार मान ली, लेकिन अर्पण पूरी रात जागकर उस सर्किट को दोबारा तैयार करते रहे और अंततः वह सफलतापूर्वक काम करने लगा। इस घटना ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि धैर्य और लगन से हर कठिनाई को पार किया जा सकता है।

उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने विदेश का रुख किया और डेनमार्क के आल्बोर्ग विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध सिग्नल प्रोसेसिंग और एम्बेडेड सिस्टम्स से संबंधित था। यह विषय उस समय बेहद चुनौतीपूर्ण माना जाता था क्योंकि इसमें वास्तविक समय में डेटा को संसाधित करने और उसे बुद्धिमान निर्णय में बदलने की क्षमता विकसित करनी होती थी। उनके शोध की चर्चा यूरोप के वैज्ञानिक जगत में होने लगी। एक सम्मेलन में जब उन्होंने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए तो एक वरिष्ठ प्रोफेसर ने कहा कि "आपका काम भविष्य की तकनीक की दिशा तय करेगा।" यह प्रशंसा उनके लिए जीवनभर यादगार रही और उन्होंने निश्चय किया कि वे भारत लौटकर इसी शोध को समाज के हित में लागू करेंगे।

भारत लौटने के बाद उन्होंने टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज से जुड़कर अपना करियर शुरू किया। टीसीएस रिसर्च में उन्होंने "एम्बेडेड डिवाइसेज़ एंड इंटेलिजेंट सिस्टम्स" विभाग का नेतृत्व संभाला। यहाँ उन्होंने अनेक परियोजनाओं का संचालन किया और भारतीय उद्योग को नई दिशा दी। एक बार एक बड़ी औद्योगिक कंपनी को मशीनों की बार-बार खराबी से भारी नुकसान हो रहा था। विदेशी

तकनीक मँगाने की योजना बन रही थी लेकिन उसकी लागत बहुत अधिक थी। तब अर्पण पाल ने अपनी टीम के साथ मिलकर एक ऐसा एल्गोरिद्म विकसित किया जो मशीनों से आने वाले सेंसर डेटा का विश्लेषण कर खराबी की संभावना पहले ही बता देता था। जब इसे लागू किया गया तो कंपनी ने न केवल करोड़ों रुपये बचाए बल्कि उत्पादन भी निर्बाध रूप से जारी रहा। यह सफलता इस बात का उदाहरण है कि भारतीय शोधकर्ता किसी भी स्तर पर वैश्विक तकनीक का विकल्प दे सकते हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उनके योगदान को भी विशेष है। उन्होंने ऐसे पहनने योग्य उपकरण विकसित किए जो मरीजों की धड़कन, ब्लड प्रेशर और ऑक्सीजन स्तर को लगातार मापते हैं। एक बार एक ग्रामीण अस्पताल में यह डिवाइस लगाया गया। एक मरीज का ऑक्सीजन स्तर अचानक गिरा तो डिवाइस ने तुरंत चेतावनी भेजी और डॉक्टर ने तत्काल इलाज शुरू किया। इस घटना ने साबित किया कि तकनीक का वास्तविक मूल्य तब है जब वह आम आदमी की जिंदगी बचा सके।

डॉ. अर्पण पाल का मानना है कि पेटेंट तभी मूल्यवान है जब वह समाज में काम आए। उनके नाम पर अब तक 180 से अधिक पेटेंट और 160 से अधिक शोध पत्र दर्ज हैं। यह केवल संख्या नहीं बल्कि उनकी रचनात्मकता और निरंतर मेहनत का प्रमाण है। उनके पेटेंट्स का उपयोग उद्योग, स्वास्थ्य सेवा, स्मार्ट शहर और कृषि जैसे क्षेत्रों में हो रहा है।

वे एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक भी हैं। टीसीएस रिसर्च में काम करने वाले कई युवा शोधकर्ताओं ने बताया है कि डॉ. पाल हमेशा उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि असफलता से डरना नहीं चाहिए। एक बार एक युवा वैज्ञानिक लगातार प्रयोगों में असफल होने के बाद निराश हो गया। डॉ. पाल ने उसे अपने कमरे में बुलाया और कहा, "विज्ञान में असफलता का मतलब है कि सफलता की एक नई दिशा अभी खोजी जानी बाकी है।" यह वाक्य उस युवा वैज्ञानिक के जीवन का टर्निंग प्वाइंट बन गया।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने भारतीय विज्ञान का परचम लहराया है। जापान, अमेरिका और यूरोप के कई सम्मेलनों में उन्होंने अपने शोध प्रस्तुत किए। जापान की एक यात्रा के दौरान उन्होंने लो-कॉस्ट हेल्थ मॉनिटरिंग डिवाइस दिखाया जो विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों के लिए तैयार किया गया था। वहाँ उपस्थित वैज्ञानिकों ने कहा कि यह तकनीक पूरे एशिया के लिए उपयोगी हो सकती है। यह क्षण भारतीय विज्ञान की वैश्विक स्वीकृति का प्रतीक था।

भविष्य की तकनीक पर उनका दृष्टिकोण स्पष्ट है। वे मानते हैं कि एआई और मशीन लर्निंग का असली मूल्य तभी है जब इसका उपयोग समाज की वास्तविक समस्याओं को हल करने में किया जाए। वे कहते हैं कि यदि एआई को कृषि में लागू किया जाए तो किसानों को सही समय पर बीज बोने, सिंचाई करने और फसल की निगरानी में मदद मिलेगी। इसी तरह पर्यावरण निगरानी में एआई का उपयोग करके बाढ़ और तूफान जैसी आपदाओं की पूर्व चेतावनी दी जा सकती है। उनकी सोच यह है कि तकनीक को मानवीय और टिकाऊ होना चाहिए।

उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। वे यह साबित करते हैं कि यदि आप मेहनत और लगन से काम करें तो किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। उन्होंने यह भी दिखाया कि भारतीय वैज्ञानिक केवल अनुसरण करने वाले नहीं हैं, बल्कि वे नवाचार की राह दिखाने वाले नेता भी हो सकते हैं।

आज जब भारत आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर है, तब डॉ. अर्पण पाल जैसे वैज्ञानिक देश की रीढ़ हैं। वे यह दिखाते हैं कि यदि सरकार, उद्योग और शिक्षा जगत मिलकर ऐसे शोधकर्ताओं को समर्थन दें तो भारत आने वाले समय में वैश्विक तकनीकी महाशक्ति बन सकता है।

उनका जीवन और कार्य यह सिखाते हैं कि विज्ञान का असली उद्देश्य केवल नई खोज करना नहीं है, बल्कि समाज की भलाई करना है। वे मानते हैं कि यदि शोध से आम आदमी का जीवन आसान नहीं होता तो उसका कोई अर्थ नहीं है। यही सोच उन्हें असाधारण वैज्ञानिक बनाती है।

डॉ. अर्पण पाल का योगदान केवल भारत तक सीमित नहीं है। उन्होंने विश्व को यह संदेश दिया है कि विज्ञान और मानवता साथ-साथ चल सकते हैं। उनका नाम आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगा और भारतीय विज्ञान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। उनका जीवन हमें यह विश्वास दिलाता है कि तकनीक का उपयोग यदि सही दिशा में किया जाए तो यह दुनिया को एक बेहतर, सुरक्षित और मानवीय जगह बना सकती है।

सृजनशीलता सफल जीवन की कुंजी

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर , राजस्थान

इस मोबाइल के युग में आज व्यक्ति किताबों से दूर होता जा रहा है और किताबों को एक बोझ समझ रहा हैं जबकि किताबें एकांत में व्यक्ति का सबसे अच्छा मित्र हैं। पुस्तकें ही एक ऐसा माध्यम है जो विधार्थियों को तकनीक, अनुशासन और नवाचार के माध्यम से समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान देती हैं। इसलिए व्यक्ति को किताबें पढ़ने के साथ ही साथ हर रोज अपने मन के विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए। इसी के साथ श्रेष्ठ साहित्य का सृजन भी करते रहना चाहिए। चूंकि कड़ी मेहनत, अनुशासन और सृजनशीलता सफल जीवन की कुंजी है। पुस्तकें उपयोगी, संदर्भ पूर्ण और पाठकों की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए।

हमारे मन व मस्तिष्क में दिन भर ढेरों विचार आते हैं और जाते हैं। अतः जो अच्छे विचार और भाव आये तो उनके क्रियान्वयन के लिए भावना बनानी चाहिए। हमारी इच्छा शक्ति और संकल्प से सब कुछ सम्भव है। अगर श्रेष्ठ साहित्य सृजन के प्रति हमारी श्रद्धा और समर्पण है तो यह जीवन सार्थक हैं। वहीं दूसरी ओर समाज व सरकार का भी दायित्व है कि वो श्रेष्ठ साहित्य सृर्जनकर्ताओं की मेहनत और समर्पण को सम्मान देना और उन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान करना हैं।

हमारे मन व मस्तिष्क में दिन भर ढेरों विचार आते हैं और जाते हैं। अतः जो अच्छे विचार और भाव आये तो उनके क्रियान्वयन के लिए भावना बनानी चाहिए । हमारी इच्छा शक्ति और संकल्प से सब कुछ सम्भव है।

मेहनत और अनुशासन से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को हासिल कर सकता हैं और जो लोग परिश्रमी होते हैं उन्हें उनके पथ से कोई भी नहीं डिगा सकता। आदर्श संस्कारों की बदौलत ही तो इंसान अनुशासित, श्रम शील व ईमानदारी के साथ आगे बढ़ता है और धैर्य, सहनशीलता, त्याग, नम्रता और विनम्रता, कर्मठता व भक्ति के मार्ग की ओर प्रशस्त होता है। इसलिए जीवन में कड़ी मेहनत, अनुशासन और सृजनशीलता को अपनाये रखें और खुशहाल जीवन व्यतीत करें।

कर्मो का हिसाब

इस नश्वर संसार में इंसान हर वक्त हाय धन हाय धन करता हुआ अनैतिक कार्य कर रहा है और अपना बैंक बैलेंस बढ़ा रहा हैं। इतना ही नहीं वह आलीशान इमारतें, होटलें, फार्म हाउस बना रहा हैं आलीशान गाडियां ख़रीद रहा हैं। नौकर चाकर उसके आगे पीछे दौड़ रहे हैं। बच्चों को वह मंहगी स्कूलों में पढ़ा रहे हैं और गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों के पेट पर लात मार रहें हैं अर्थात् उन्हें काम के मुताबिक वेतन नहीं दे रहें हैं। उनका शारीरिक और मानसिक शोषण कर रहें हैं। यहीं वजह

है कि उन्हें चैन की नींद नहीं आती है और नाना प्रकार की परेशानियों को झेल रहें हैं। भगवान की पूजा अर्चना के नाम पर ढोंग कर रहे हैं। ईश्वर के आगे दो रूपए की अगरबत्ती जलाकर दो लाख रुपए का फायदा चाहते हैं। चूंकि ये लोग यह नहीं जानते है कि परमात्मा धन दौलत, कोठी, बंगलों व गाड़ियों का हिसाब नहीं रखते हैं वे तो केवल इंसान के कर्मों का ही हिसाब करते हैं। इसलिए जो भी कर्म करें वह श्रेष्ठ कर्म ही करें।

श्रेष्ठ संस्कृति

भारतीय सभ्यता और संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता और संस्कृति है जिसे बनाये रखना हमारा नैतिक दायित्व है। लेकिन आज की युवाशक्ति ही नहीं अपितु हर आयु वर्ग के लडके लडकियां व पुरुष छोटे-छोटे वस्त्र धारण कर इधर-उधर घूम रहे हैं। परमात्मा ने हमें यह सुन्दर शरीर दिया है यह गर्व व गौरव की बात हैं लेकिन इस शरीर का अर्ध नग्न प्रर्दशन सार्वजनिक स्थलों पर शोभा नहीं देता। हर चीज की मर्यादा होती हैं। अतः पाश्चात्य संस्कृति के चक्कर में न पड़ें और भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मान सम्मान व गौरव बनाये रखें। अपनी सभ्यता और संस्कृति को छोड़ना नैतिक मूल्यों में गिरावट ही कहा जा सकता है।

बड़ों का सम्मान ईश्वर का सम्मान

आज की इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में लोग प्रायः यही कहते हैं कि मंदिर जाने का समय ही नहीं मिलता हैं। हां कभी कभार तीज त्यौहार पर चलें जाते हैं। जो लोग ऐसा कहते हैं वे यह भूल जाते हैं कि सारे तीर्थ, मंदिर व धर्म स्थल उनके घर में है। बस जरूरत है अपने आपकों टटोलने की। आप सुबह शाम अपने से बड़ों व बड़े बुजुर्गों के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लीजिए। उनका हर रोज मान सम्मान कीजिए। उनकी आज्ञा का पालन कीजिए। अगर आप ऐसा करते है तो फिर आपकों किसी भी धार्मिक स्थल पर जानें की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपका घर ही सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है।

बड़ों का आदर सत्कार कर अपने जीवन को महकाएं। जब आप बड़ों का आदर-सत्कार करेंगे तभी तो बच्चे सीख पायेंगे। चूंकि वे आदर्श संस्कार बड़ों को देखकर ही तो सीखते हैं। इसलिए बच्चों को गलती करने पर डांट फटकार न करें, मारपीट न करें अपितु प्रेम पूर्वक उसे समझाने का प्रयास कीजिए कि उसने क्या गलती की हैं व उसे कैसे सुधारा जाए। बस वह समझ जायेगा व भविष्य में उस गलती को दोबारा नहीं करेगा। चूंकि प्रेम ही एक ऐसा शब्द है जो बच्चों को खेल खेल में बहुत कुछ सीखा देता हैं।

आज छोटे-छोटे परिवारों में समाज बंट गया है। नतीजन बच्चों को आदर्श संस्कार न तो अभिभावक दे पा रहे हैं और न ही शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक दे पा रहें हैं। शिक्षक मात्र बच्चों की फीस आई या नहीं व अपने वेतन व सुविधाओं पर ही ध्यान दे रहे है। वहीं अभिभावकों के पास समय नहीं है कि वे बच्चों को समय दे सकें। जबकि इन दोनो का दायित्व है कि वे बच्चों को आदर्श संस्कार देकर देश का आदर्श नागरिक बनाये। चरित्र की पहली पाठशाला बालक का अपना घर ही हैं।

आज हिंसा, मारपीट, नशे की बढ़ती लत, अनैतिक कार्य समाज को खोखला कर रहें हैं जो एक चिंता की बात है। कहने को तो हर कोई कहता हैं कि पहले खुद बदलिए फिर समाज स्वयं ही बदल जायेगा लेकिन बदलना कोई नहीं चाहता हैं। हर कोई मात्र अपनी राय देकर इतिश्री कर रहा हैं। अणुव्रत लेखक मंच व अणुव्रत आंदोलन समाज में शांति, सुरक्षा, नशा मुक्त जीवन व्यतीत करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहा हैं। आइये इस मंच की निःशुल्क सदस्यता ग्रहण कर देश में अमन-चैन और भाईचारे की भावना विकसित करने के लिए कंधे से कंधा मिलाइएं और स्वर्णिम भारत का निर्माण कीजिए। दीप से दीप जलाएं और अहिंसा, संयम, धैर्य, सहनशीलता और त्याग का पैगाम जन जन में जगाइए।

मर्यादा

कहते है कि पानी अपनी मर्यादा तोड़े तो विनाश और वाणी अपनी मर्यादा तोड़े तो सर्वनाश निश्चित है। अर्थात सर्वश्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने के लिए हमेंशा अपनी मर्यादा में रहना चाहिए और मर्यादा का पालन करना चाहिए। इसी के साथ व्यक्ति को वाणी पर भी नियंत्रण रखना चाहिए।

वाणी पर जो नियंत्रण रखता हैं वो ही जीवन में आगे बढ़ता रहा है। एक वाणी ही ऐसी हैं जो बिगड़े संबंधों को बना भी सकती हैं और मधुर संबंधों को एक झटके में बिगाड़ भी सकती हैं। इसलिए जब भी बोलें तब सोच समझ कर बोलें और कभी भी बिना वजह न बोलें। जो लोग जरूरत से ज्यादा बोलते हैं वे ही अनाप-शनाप बोल कर अपने संबंधों को बिगाड़ते हैं। इसलिए कम बोले लेकिन अच्छा बोलें। जबान केच्ची की तरह कतर कतर नहीं चलनी चाहिए।

जब बगीचे में पुष्प खिलता है तो वह अपनी खुश्बू दूर-दूर तक फैला कर लोगों को अपनी खुश्बू से आनन्दित कर देता है तब फिर हम तो इंसान है तब फिर क्यों अपनी वाणी से संबंधों को खराब करें। जब तक जीवन हैं तब तक आनंद से रहिए। हंसते मुस्कुराते रहिए।

नीतियों के शोर में दबा पहाड़

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

हिमालय कोई साधारण पर्वत शृंखला नहीं है। यह करोड़ों लोगों के लिए जल, भोजन और ऊर्जा का स्रोत है। यहाँ से निकलने वाली नदियाँ पूरे उत्तर भारत की जीवन रेखा हैं। यही पर्वत धार्मिक आस्थाओं, जैव विविधता और सामरिक दृष्टि से भी असाधारण महत्त्व रखते हैं। किंतु यही क्षेत्र सबसे अधिक संकटग्रस्त भी है क्योंकि यह भूकंपीय दृष्टि से सक्रिय है, यहाँ वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं और निर्माण कार्य अनियंत्रित रूप से फैल रहे हैं।

सन् 2025 की विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन ने एक बार फिर यह सच्चाई सामने ला दी कि हिमालय की संवेदनशीलता और नाजुकता किस कदर बढ़ चुकी है। उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और पंजाब जैसे राज्यों में बादल फटना, नदियों का उफान, ग्लेशियरों का टूटना और ढलानों का खिसकना अब केवल आकस्मिक घटनाएँ नहीं रह गईं, बल्कि यह बदलते मौसम चक्र, अव्यवस्थित विकास और मानवीय हस्तक्षेप का संयुक्त परिणाम बन चुकी हैं। इन आपदाओं ने न केवल हजारों परिवारों की जिंदगियाँ उजाड़ीं, बल्कि स्थानीय कृषि, तीर्थ यात्रा, पर्यटन और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी गहरे संकट में डाल दिया। यह स्पष्ट हो चुका है कि आने वाले दशकों में यदि हमें जीवन और संपत्ति की रक्षा करनी है, तो आपदा प्रबंधन को परंपरागत ढर्रे से बाहर निकालकर वैज्ञानिक और दूरदर्शी स्वरूप देना अनिवार्य होगा।

हिमालय कोई साधारण पर्वत शृंखला नहीं है। यह करोड़ों लोगों के लिए जल, भोजन और ऊर्जा का स्रोत है। यहाँ से निकलने वाली नदियाँ पूरे उत्तर भारत की जीवन रेखा हैं। यही पर्वत धार्मिक आस्थाओं, जैव विविधता और सामरिक दृष्टि से भी असाधारण महत्त्व रखते हैं। किंतु यही क्षेत्र सबसे अधिक संकटग्रस्त भी है क्योंकि यह भूकंपीय दृष्टि से सक्रिय है, यहाँ वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, हिमनद तेजी से पिघल रहे हैं और निर्माण कार्य अनियंत्रित रूप से फैल रहे हैं। नतीजा यह है कि जब भी असामान्य वर्षा होती है तो प्राकृतिक जोखिम कई गुना बढ़ जाते हैं और मानव जीवन पर कहर बरपाते हैं।

आपदा प्रबंधन का पहला चरण है राहत और बचाव। भारतीय सेना, वायुसेना, अर्धसैनिक बल, एन डी आर एफ और स्थानीय स्वयंसेवकों ने हर आपदा में अपनी जान की बाजी लगाकर हजारों लोगों को बचाया है। उत्तराखण्ड में अस्थायी पुल बनाना, हेलीकॉप्टर से राहत सामग्री गिराना, विशेषज्ञ टीमों को तैनात करना इसका उदाहरण है। यह कार्य अत्यंत प्रेरक है, लेकिन केवल इसी स्तर पर ठहर जाना दूरदर्शिता नहीं है। यदि हमारी नीति यही मानकर चलती

है कि आपदा आएगी और फिर हम बचाव करेंगे, तो यह प्रतिक्रियात्मक सोच होगी। वास्तविक समाधान तभी संभव है जब हम पहले से तैयारी कर आपदा की तीव्रता घटाएँ।

इसीलिए विज्ञान और तकनीक का उपयोग सबसे महत्त्वपूर्ण है। आज हमारे पास उपग्रह चित्रण, मौसम राडार, भू-स्थानिक सूचना तंत्र, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पूर्वानुमान और वास्तविक समय पर चेतावनी प्रणाली उपलब्ध हैं। यदि इनका समन्वय किया जाए तो भारी वर्षा, भूस्खलन या हिमनद झील फटने जैसी घटनाओं का अनुमान पहले से लगाया जा सकता है। इससे प्रशासन को समय रहते लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने और संपत्ति के नुकसान को कम करने का अवसर मिलेगा। जापान और अमेरिका जैसे देशों ने इसी प्रकार की तकनीकी प्रणालियों से प्रतिवर्ष हजारों जीवन बचाए हैं। भारत के लिए भी आवश्यक है कि वह एक संगठित हिमालयी चेतावनी नेटवर्क तैयार करे, जो हर गाँव, हर कस्बे और हर नगर तक तत्काल सूचना पहुँचा सके।

लेकिन चेतावनी प्रणाली तभी सफल होगी जब समाज के हर स्तर तक आपदा शिक्षा पहुँचे। विद्यालयों में आपदा प्रबंधन को अनिवार्य विषय बनाया जाए, पंचायत स्तर पर नियमित अभ्यास हों और प्रत्येक गाँव अथवा नगर में सुरक्षित आश्रय स्थल की स्पष्ट पहचान हो। यदि आम नागरिक को यह पता होगा कि चेतावनी मिलते ही उसे कहाँ जाना है, कौन-सा सामान साथ लेना है और किन कदमों का पालन करना है, तो अफरातफरी और हताहत कम होंगे। इस प्रकार आपदा शिक्षा केवल ज्ञान नहीं बल्कि एक जीवन रक्षक कवच है।

आपदा प्रबंधन का दूसरा चरण है पुनर्निर्माण और पुनर्वास। बाढ़ अथवा भूस्खलन के बाद सड़कें, पुल और घर जब नष्ट हो जाते हैं तो उनका पुनर्निर्माण अक्सर जल्दबाजी और राजनीतिक दबाव में किया जाता है। परिणामस्वरूप वही कमजोर ढाँचे फिर से खड़े कर दिए जाते हैं और अगली आपदा में पुनः ध्वस्त हो जाते हैं। इसका समाधान है सतत और टिकाऊ पुनर्निर्माण। सड़कें इस प्रकार बनाई जाएँ कि प्राकृतिक जलधाराएँ बाधित न हों, भवन केवल स्थिर ढलानों पर हों और ऊर्जा परियोजनाएँ कठोर पर्यावरणीय मूल्यांकन के बाद ही स्वीकृत हों। यदि हम हर बार वही गलतियाँ दोहराते रहेंगे तो आपदा की कीमत बार-बार चुकानी पड़ेगी।

तीसरा पहलू है नीति और शासन व्यवस्था। अक्सर आपदा योजनाएँ कागज पर सीमित रह जाती हैं। धनराशि भी आपातकाल आने पर ही जारी की जाती है। जब तक आपदा प्रबंधन को विकास योजनाओं के केंद्र में नहीं रखा जाएगा, तब तक स्थायी सुधार असंभव है। यह आवश्यक है कि आपदा प्रबंधन को वार्षिक बजट, शहरी नियोजन और ग्रामीण योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। नो बिल्ड जोन का कठोर पालन होना चाहिए, पर्यावरण मित्र निर्माण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर दंडात्मक कार्रवाई अवश्य होनी चाहिए।

चौथा आयाम है जलवायु परिवर्तन। हिमालयी हिमनद पहले से कहीं तेज गति से पिघल रहे हैं। आने वाले वर्षों में नदियों का प्रवाह अस्थिर होगा, जिससे कभी अचानक बाढ़ और कभी सूखा उत्पन्न होगा। इसका सीधा असर कृषि, ऊर्जा और जल रणनीतियों पर पड़ेगा। इसलिए आवश्यक है कि कृषि में सूखा सहनशील फसलों का विकास किया जाए, ऊर्जा उत्पादन विकेन्द्रीकृत स्त्रोतों पर आधारित हो, वर्षा जल संचयन और सामुदायिक जलाशयों को बढ़ावा दिया जाए।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव भी हमारे लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। जापान में प्रत्येक नागरिक नियमित रूप से भूकंप और सुनामी से निपटने का अभ्यास करता है। नेपाल ने 2015 के भूकंप के बाद सामुदायिक भागीदारी से पुनर्वास प्रक्रिया को गति दी। बांग्लादेश ने चक्रवात प्रबंधन में चेतावनी तंत्र और आश्रय स्थलों की व्यापक व्यवस्था कर मृत्यु दर को नाटकीय रूप से घटाया। भारत को इनसे प्रेरणा लेनी होगी और उपयुक्त मॉडल विकसित करने होंगे।

स्थानीय समाज और पारंपरिक ज्ञान की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। हिमालयी समाज सदियों से मौसम और प्राकृतिक संकेतों का अध्ययन कर आपदाओं का अनुमान लगाता रहा है। उनके अनुभव, परंपराएँ और जीवनशैली इस कठिन भौगोलिक क्षेत्र में टिके रहने की कला सिखाती हैं। यदि वैज्ञानिक ज्ञान और पारंपरिक अनुभव को जोड़ा जाए तो एक व्यवहारिक और प्रभावी मॉडल तैयार किया जा सकता है। इससे न केवल व्यावहारिक समाधान मिलेगा बल्कि स्थानीय समाज भी इसे सहर्ष अपनाएगा।

यह समझना भी आवश्यक है कि आपदा प्रबंधन केवल प्रशासनिक कार्य नहीं बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। जब तक हम विकास और प्रकृति को दो अलग ध्रुव मानते रहेंगे, तब तक स्थायी समाधान नहीं मिलेगा। सतत विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है बल्कि इसका तात्पर्य है कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित हो। यदि हमने यह संतुलन बिगाड़ा तो हिमालय बार-बार हमें अपनी नाजुकता का स्मरण कराता रहेगा।

भविष्य की राह स्पष्ट है। हिमालयी आपदा प्रबंधन को तीन स्तंभों पर आधारित करना होगा। पहला, उन्नत विज्ञान और तकनीक जो हमें पूर्व चेतावनी और सटीक आँकड़े दे सके। दूसरा, सशक्त समुदाय जो आपदा की स्थिति में लचीलापन और सहयोग प्रदान करे। तीसरा, सतत विकास जो प्राकृतिक संसाधनों और मानव जीवन के बीच संतुलन बनाए। यदि यह संतुलन किया गया तो हिमालय केवल सुरक्षित ही नहीं होगा, बल्कि वह विश्व के लिए प्रकृति और मानव के सहअस्तित्व का आदर्श भी बनेगा।

हिमस्खलन तथा भारतीय सेना : जोखिम, संघर्ष और सुरक्षा उपाय

विभा कनन
कोयंबटूर तमिलनाडु

हिमालय भारत की प्राकृतिक और सामरिक धरोहर है। यहाँ की चोटियाँ देश की सुरक्षा के प्रहरी हैं, तो वहीं इन क्षेत्रों का मौसम और भौगोलिक परिस्थितियाँ सैनिकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती भी प्रस्तुत करती हैं। हिमस्खलन (Avalanche) इन्हीं चुनौतियों में से एक है, जो न केवल नागरिक जीवन बल्कि विशेष रूप से भारतीय सेना के लिए घातक सिद्ध होता है। हिमस्खलन को पूर्णतः रोका तो नहीं जा सकता, लेकिन इसके प्रभाव को कम करने के लिए कई वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रबंधनात्मक उपाय अपनाए जा रहे हैं।

हिमस्खलन की परिभाषा और स्वरूप

हिमस्खलन पर्वतीय ढलानों पर जमी बर्फ़ के असंतुलन के कारण अचानक नीचे खिसकने की घटना है। यह घटना कुछ सेकंड में पूरी घाटी को बर्फ़ से ढक सकती है। इसका वेग प्रायः 150 से 200 किमी/घंटा तक होता है (भारतीय मौसम विभाग, 2023)।

विश्व में प्रतिवर्ष लगभग 150 लोगों की मृत्यु हिमस्खलन से होती है, जिनमें से एक बड़ा हिस्सा सैनिकों और पर्वतारोहियों का होता है।

हिमस्खलन के प्रमुख कारण

- भारी हिमपात और मौसम में अचानक बदलाव हिमपात के बाद तापमान बढ़ने से बर्फ़ ढीली होकर फिसल जाती है।
- खड़ी ढलानें और असंतुलित हिमस्तर हिमालय की खड़ी ढलानों पर यह समस्या अधिक होती है।

- भूकंप या विस्फोट जैसी हलचलें – छोटे-से कंपन से भी बर्फ़ का बड़ा हिस्सा खिसक सकता है।
- मानव गतिविधियाँ : सड़क, बंकर या सैन्य ठिकानों का निर्माण असंतुलन को बढ़ाता है।
- जलवायु परिवर्तन : ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना और अस्थिर होना हिमस्खलन का दीर्घकालिक कारण है।

भारतीय सेना के लिए हिमस्खलन की चुनौतियाँ

- **सैनिक जीवन पर खतरा :**
  सैनिक अक्सर 18,000 फीट से अधिक ऊँचाई पर तैनात रहते हैं।
  शून्य से 40 डिग्री नीचे तापमान में दबे रहना जानलेवा होता है।
- **संचार और आपूर्ति बाधित**
  हिमस्खलन सड़कों और संपर्क मार्गों को काट देता है।
  रसद और हथियार पहुँचाना कठिन हो जाता है।
- **युद्धक क्षमता पर असर**
  सैनिकों का समय और ऊर्जा प्राकृतिक संकट से निपटने में लगती है।
  हथियार और उपकरण ठंड व नमी से क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।
- **आर्थिक बोझ**
  एक सैनिक को सियाचिन जैसे मोर्चे पर तैनात रखने में प्रतिदिन लगभग 6–8 लाख रु० खर्च आते हैं (रक्षा मंत्रालय रिपोर्ट, 2022)।

बचाव व पुनर्वास कार्यों पर अतिरिक्त भार।

उल्लेखनीय घटनाएँ :

इतिहास से सबक

2012, सियाचिन (पाकिस्तानी चौकी): 125 सैनिकों की मृत्यु।

2016, सियाचिन (भारतीय सेना): 10 सैनिक हिमस्खलन में शहीद, जिनमें लांस नायक हनुमनथप्पा की घटना राष्ट्रीय स्मृति में अंकित है।

2023, अरुणाचल प्रदेशः हिमस्खलन से भारतीय सैनिक हताहत।

इन घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि हिमस्खलन सीमा सुरक्षा का सबसे बड़ा प्राकृतिक संकट है।

भारतीय सेना के सुरक्षा उपाय

1. विशेषीकृत प्रशिक्षण

गुलमर्ग स्थित हाई-एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल (HAWS) में सैनिकों को कठोर बर्फीली परिस्थितियों में जीवन रक्षा का प्रशिक्षण।

क्विक रिएक्शन टीमें (QRT) तैनात।

2. वैज्ञानिक निगरानी तंत्र

डिफेंस जियोइन्फॉर्मेटिक्स रिसर्च इस्टैब्लिशमेंट (DGRE) हिमस्खलन पूर्व चेतावनी जारी करता है।

उपग्रह चित्र, जीपीएस और राडार से निगरानी।

3. तकनीकी सहयोग

सैनिकों को Avalanche Victim Detector, थर्मल जैकेट और स्नो-स्कूटर उपलब्ध।

बचाव कार्यों में प्रशिक्षित कुत्तों और ड्रोन का इस्तेमाल।

4. बचाव व राहत कार्य

हेलीकॉप्टर से एयरलिफ्ट सुविधा।

मोबाइल मेडिकल यूनिट्स और ऑक्सीजन सपोर्ट।

5. आधारभूत ढाँचें में सुधार

चौकियों को अधिक सुरक्षित और रणनीतिक स्थानों पर स्थापित करना।

सुरंगों, मजबूत आश्रयों और बर्फ़ रोधी दीवारों का निर्माण करना।

दीर्घकालिक रणनीतियाँ

जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण

- कार्बन उत्सर्जन कम करने और ग्लेशियर संरक्षण की नीतियों पर बल।

अनुसंधान व नवाचार

- हिमालयी क्षेत्रों में और अधिक रिसर्च सेंटर स्थापित करना।

- विदेशी देशों (स्विट्ज़रलैंड, कनाडा) की तकनीक का सहयोग लेना।

अंतरराष्ट्रीय साझेदारी

- संयुक्त राष्ट्र के पर्वतीय सुरक्षा कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी।

सैनिक कल्याण

- मानसिक स्वास्थ्य और मनोबल को बनाए रखने हेतु मनोवैज्ञानिक परामर्श और आरामदायक छुट्टियाँ।

हिमस्खलन भारतीय सेना के लिए प्रकृति की सबसे बड़ी चुनौती है। यह एक ऐसा जोखिम है जिसे पूरी तरह समाप्त करना संभव नहीं, परंतु वैज्ञानिक उपायों, तकनीकी नवाचार और समुचित आपदा प्रबंधन द्वारा इसके प्रभाव को काफी हद तक घटाया जा सकता है। भारतीय सैनिक प्रतिदिन इस आपदा से जूझते हुए भी सीमा की सुरक्षा में तत्पर रहते हैं। उनके साहस और बलिदान से प्रेरणा लेकर हमें भी नीति, अनुसंधान और जागरूकता के स्तर पर प्रयासरत रहना चाहिए।

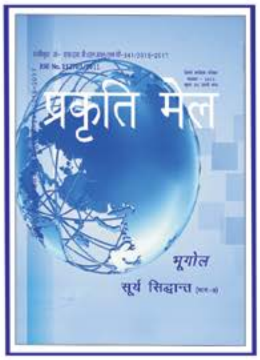

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेलः__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

निःशुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- व्यक्ति किसी वस्तु या जीव के प्रति जो भाव बना के जाता है उसके साथ उसी तरह की प्रतिक्रिया उस वस्तु या जीव के द्वारा होती है।
- परम की चाहत अभय करती है और संसारिक चाहत भयभीत करती है।
- आप जैसा चाहते है कि दूसरे मेरे साथ ऐसा व्यवहार करे, आप भी दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करें यही मानवता है।
- अप्राकृतिक गुणों का प्रवाह ही 'शोक' है।
- पीड़ा मुक्त भाव उत्पत्ती ही सबसे बड़ा कर्म है।
- निर्माण की आवश्यकता की मांग पूर्ती ही 'सोना' है।
- सोने के वक्त जीव उसी चीज से जुड़ता है जिससे वास्तविक सृजन होता है। यही वास्तविक 'सोना' है।
- जिस तरह से अनेक स्थान है जहां के बारे में डरावनी कहानियां मशहूर है वहां पहुचने पर मानव डरता है। और उसी जगह की जानकारी न होने पर कोई डर नही होता और स्वभाविक रूप से चला जाता है उसी तरह ये पौराणिक कहानियां और किताबी ज्ञान व्यक्ति को अप्राकृतिक रूप से भयभीत करते है वास्तविक ज्ञान नही देते।
- विचारों का तर्क-वितर्क मंथन नही है। बल्की विषय या पदार्थ की प्राकृतिक रासायनिक क्रिया ही सही रूप में 'मंथन' है।
- समय की म्यान जो बाहर के लिए न्यायिक धरती बना ले वही वास्तविक 'सम्बन्ध' है।
- मार्ग जीव के उद्देश्य के अनुसार मानसिक रूप से तय की गई वह अवस्था है जिस पर जीव की इच्छा गतिमान होती है।
- किसी भी वस्तु या व्यक्ति के प्रति स्वार्थ निहित भाव न उत्पन्न होना सत् चरित्र है।
- किसी भी पदार्थ या व्यक्ति के बारे मे सही-सही जान लेना वास्तव मे वह जैसा है उसकी जानकारी हो जाना ही उसकी परिभाषा है।
- जो व्यक्ति भय मुक्त हो और उसके अन्दर किसी भी प्रकार की चाहत पैदा न हो वही सत् मार्ग पर चल सकता है।
- शरीर मे होने वाली विभिन्न बीमारियाँ प्राकृतिक न्याय प्रणाली मे दण्ड व्यवस्था है।
- न्याय व्यक्ति की नजर से शुरू होता है। यदि नजर से देखने के बाद भाव दूषित न करें तो अपराध की इच्छा पैदा नही हो सकती।

सूर्य सिद्धांत भाग - 6

सूर्य + निर्गन्ध = सम्पूर्ण

मृदा की इच्छा का बीजत्व बनाकर उसे पुर्ण करने की क्रिया को सूर्यसिद्धांत कहते हैं।

अशोक मानव

सूर्य निर्गन्ध से सृजन होता है उसी प्रकाश में सजीवता होती है पर वही सजीवता निर्गन्ध बनकर ब्रह्माण्ड का विकास करती है। निर्गन्ध प्रकाश वह विज्ञान है जो गुण गन्ध के अनुरूप उसकी भौगोलिकता का विकास करता है। यह जमीन का बेहतर उपयोग कर गंध विशेष का निर्माण करता है जिससे विज्ञान का कण बन जाता है निर्गन्ध अवस्था न्याय होती है जो गन्ध, सुगन्ध, दुर्गन्ध के अनुसार उसके गुणों का विकास करने के लिए आवश्यकता अनुसार शरीर रूपी भूगोल का विकास करती है। उसी भौगोलिक शरीर जीव सही-गलत की पहचान अपने एहसास से करके सही को अपने से जोड़कर उस गन्ध का निर्माण करता है जिससे विपरीत गुण (गलत) अर्थात अपने पद्धति के विपरीत गुण की गन्ध को खत्मकर देता है तो अपनी पद्धति को बनाने के लिए न्याय का कार्य करता है और अपने गुण की सुगन्ध बनाता है जिसका शेष अंश बच जाता है जो सृजन में अपने गुणों का विस्तार करता है। इस क्रिया से निर्गन्ध सूर्य प्रदूषण फैलाने वाली दुर्गन्ध को खत्मकर गुण की सुगन्ध का विस्तार करता है शरीर छूटने के बाद निर्गन्ध सूर्य उसके पदार्थ से रासायनिक क्रिया करके हर पदार्थ को अलग उसकी सुगन्ध विस्तार के लिए उससे गुण की जमीन का निर्माण करती है। जिस पर उस

गुण के जीव का विकास होता है दूसरे गुण के लिए यह जमीन उसर बन जाती है प्रकृति की हर क्रिया का संचालन निर्गन्ध सूर्य से होता है इसीलिए वह सम्पूर्ण है। निर्गन्ध सूर्य इस क्रिया में पीड़ा नही होती है निर्गन्ध सूर्य जब सृजन कर रहा होता है तो उसके जोड़ को मजबूती से जोड़ता है जो स्वतः टूटता नहीं है इसलिए पीड़ा नही होती है। जब उसका कार्य पूरा हो जाता है तो उसमे ऐसी रासायनिक क्रिया होती है जिससे दोनों एक दूसरे से अलग होना चाहते है जिसमें पीड़ा नही होती है। जैसे पेड़ से पत्ते को अलग करने से पूर्व रासायनिक क्रिया से पत्ते को पीला कर जोड़ को ढीला कर देती है इसी प्रकार फल को पेड़ से अलग करने से पूर्व रासायनिक क्रिया से पका देती है जिससे जोड़ ढीला हो जाता है और बिना दर्द के दोनो एक दूसरे से अलग हो जाते है। इसी प्रकार शरीर रासायनिक क्रिया से ढीली हो जाती है जिसे जीव छोड़ना चाहता है यही क्रिया निर्गन्ध सूर्य की सृजन और विनाश दोनों पूरा करता है जब तक शरीर का विनाश नही होता तब तक पुनः जन्म से कोई जमीन नही बन पाती है। निर्गन्ध सूर्य ही जीव रूप गन्ध और सुगन्ध का निर्माण करता है गन्ध में जीव विशेष का विज्ञान होता है जो विपरीत गुणों की गन्ध को खत्म करता है और अपने गुण की गन्ध का निर्माण करता है। उस क्रिया में प्रदूषण खत्म होता है और सृजन का विस्तार होता है। निर्गन्ध सूर्य इसी गन्ध के निर्माण से धर्म-अधर्म का युद्ध लड़ता है गन्ध गुण में ही आवश्यकतानुसार तरंग भौगोलिक आकार ले लेती है जिसमें निर्माण और आत्मा का विज्ञान छिपा होता है। इसी प्रकार से प्रकृति का हर युद्ध लड़ा जाता है जो युद्ध मानव समाज फिल्माकर दिखाता है वह उसके दिमाक की ऊपज है हकीकत नहीं। इसी काल्पनीक फिल्मांकन से लोग हथियार बनाकर युद्ध लड़ने लगे और प्रकृति को प्रयोगशाला बनाकर नये-नये प्रयोग शुरू कर दिये जो अप्राकृतिक होने के कारण पीड़ा की उत्पत्ति कर दिया यही दुर्गन्ध का निर्माण हो गया जिससे राक्षसी भाव के जीव की उत्पत्ती होने लगी। जहाँ से मानव सिर्फ अपना हित देखकर कार्य बनाना शुरू कर दिया चाहे वह वैज्ञानिक रूप से प्रयोग किया हो या आध्यात्मिक रूप से तप, पूजा पद्धति हो या माया या मोह या असुधार से उसे प्राप्त करने की क्रिया हो यह सब मानव द्वारा अप्राकृतिक क्रिया का विकास हो जिससे प्रकृति को आध्यात्मिक पीड़ा पहुंचा रही है। जिससे प्रकृति बेनूर होती जा रही है यह स्थिति प्रकृति को बंजर कर देगी जिससे जीवन असम्भव हो जाएगा। अप्राकृतिक इच्छा से दुर्गन्ध बनने लगी है जिससे राक्षसी गुण बढ़ रहा है जो धर्म-अधर्म के युद्ध की जगह स्वहित युद्ध को शुरूकर दिया है।

मानव को पुनः प्राकृतिक होने के लिए निर्गन्ध सूर्य का निर्माण करना पड़ेगा जो कोई इच्छा न धारण करके प्रकृति हर अवस्था का एहसास कराते हुए खुशहाली के साथ आगे बढ़ते हुए अवस्था से पूरी होती है यही प्राकृतिक कर्म है जिसमें सिर्फ आनन्द ही आनन्द है। इसी अवस्था से निर्गन्ध सूर्य गन्ध की रश्मी कर निर्माण होता है जो गुणों के अनुसार गन्ध विज्ञान का निर्माण कर लेता है जिससे राक्षस पैदा होने से पूर्व खत्म हो जाता है। इसी क्रिया से मानव सूर्य पथिक बन आनन्द पूर्वक अपना कार्य पूरा कर पाता है प्रकृति के अन्य जीव सूर्य पथिक है पर मानव अपनी सोच से इससे दूर होता जा रहा है जिसके कारण उसके अन्दर सिर्फ अपना हित दिखाई देती है। प्रकृति को तो सिर्फ एक प्रयोगशाला समझ रहा है जैसे इसके प्रयोग से नये ब्रह्माण्ड का निर्माण कर लेगा पर इसे पता नही कि अपनी इस सोच के कारण प्रकृति का सबसे सक्षम जीव विकलांग हो चुका है इसे हर पग पर एक सहारे की जरूरत पड़ रही है जब कि प्रकृति का अन्य जीव बिना सहारे के जीवन जी रहा है।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : विचार और भाव दोनों में क्या भेद है? दोनों का एक दूसरे का क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर : विचार मानव की खुराफात है। भाव प्राकृतिक है। विचार-मानव अपने विवेक से चालाकी पूर्ण तरीके से हर चीज़ में तर्क करता है, विचार करता है कि इसमें हमें क्या लाभ मिलेगा? विचार की शुरूआत वहीं से होती है। भाव-भाव एक एहसास है जो अगर व्यक्ति एहसासमयी हो जाए, विचार ही न करे कुछ सोचे ही न जो चीज़ उसको अच्छी लगे वह करे और जो चीज़ खराब लगे उसे छोड़ दे कोई विचार न करे जानवर की तरह वह भी ज्ञानी हो जायेगा वह सही और गलत को पहचानने लगेगा। विचार तो प्रकृती की गंध है ही नहीं। विचार तो मानव के अपने द्वारा तैयार की गयी खुराफात है। विचार से ही मानव जानवर से अलग हो जाता है। अप्राकृतिक होता हुआ, चालाकी पूर्ण तरीके का जीवन जीता हुआ जिससे राक्षस और दर्द की उत्पत्ती होती है। तर्क करके हम किसी निष्कर्ष तक पहुँच ही नहीं सकते हैं। अगर किसी चीज़ को हमें जानना है उसका प्रथम एहसास, प्रथम भाव हमारे अन्दर उत्पन्न होता है जो वही प्रकृती का सत्य होता है, अन्तिम होता है। उसी पर व्यक्ति को चलना चाहिए तर्क करके, महापुरूशों से पूछकर, किताब पढ़ के, इन सब चीजों से दुनिया में कभी किसी का उत्तर मिलता ही नहीं है। ये चालाकी पूर्ण मानव द्वारा अपनायी गई पद्धती है। जो अपने दिमाग द्वारा पैदा कर लिये। विचार किताब, भगवान ये सब कल्पनाऐं हैं। ज्ञान एक एहसास है उसी से भाव की उत्पती होती है। ईच्छा और एहसास से भावना उत्पन्न होती है। यही जीवन का सच है। जो उसमें रम जाता है वही सच्चे इन्सान का जीवन जी पाता है। जिसनें विचार ज़्यादा किया, तर्क किया, गुरू माना, किताब पढ़ा लोगों से पूछा और भगवान जितना अधिक मानता चला गया उतना ही अधिक भटकता चला जाता है। क्योंकि तर्कों और विचारों से किसी सच को नहीं जाना जा सकता, सच को सिर्फ एहसास किया जा सकता है। ज्ञान को परखने का हमारा जो यंत्र है या जो मानव के अन्दर की प्रवृती है वह ज्ञान एहसास से उत्पन्न होता है। किताबों से, विचारों से और तर्कों से, कभी नहीं प्राप्त होता है। ये मानव की चालाकीपूर्ण प्रवृती है और यहीं से मानव बिगड़ता चला जाता है। जिससे राक्षसी प्रवृती जन्म् लेती है। जो सही और गलत से बहुत दुर निकल जाता है। जो तर्कों के आधार पर अपना फायदा देखकर कार्य करता है इससे अधिक और कुछ नहीं।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),

कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0

ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com

9807636072, 7376495194

दीपावली में लोक संस्कृति–तत्व

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

लखनऊ

दीपावली प्रकाश पर्व है। ज्योति का महोत्सव है। यह कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। दीपावली का लालित्य वस्तुतः प्रकाश और अँधेरे का मनोरम समन्वय है। अमावस्या की रात में झिलमिलाते एवं प्रकाश बिखेरते दीपों की शोभा देखते ही बनती है। दीपावली केवल दीप प्रज्वलन का पर्व नहीं, अपितु लोक संस्कृति, आस्था, कला, लोकगीत, सामाजिक समरसता और जीवनमूल्यों का उत्सव है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है-

"त्यौहारों के बिना लोकजीवन नीरस और सूखा हो जाता। दीपावली लोक संस्कृति का जीवंत उत्सव है।"

वास्तव में दीपावली भारतीय समाज की गहन संवेदनाओं, सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक लोकजीवन का दर्पण है।

दीपावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

दीपावली की उत्पत्ति को लेकर विविध मत हैं। रामायण के अनुसार कहा जाता है कि जब भगवान श्रीराम लंकापति रावण पर विजय प्राप्त करके अयोध्या आए तब उस दिन कार्तिक मास की अमावस्या थी। अयोध्या नगरवासियों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने हेतु घर-घर दीप प्रज्वलित कर उनका स्वागत किया। तभी से दीपावली की यह परम्परा प्रारम्भ हुई। कुछ विद्वान इसे कृषि-प्रधान समाज का "नवोत्थान पर्व " मानते हैं, क्योंकि यह शरद ऋतु में खरीफ की फसल के कटने और नए आर्थिक वर्ष की शुरुआत से जुड़ा है। जैन परंपरा में दीपावली को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में स्मरण किया जाता है। वहीं, सिख परंपरा में यह गुरु हरगोविंद जी की रिहाई और कारागार से 52 राजाओं की मुक्ति का स्मरण है। इस प्रकार दीपावली बहुआयामी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक आधारों से जुड़ी हुई है।लक्ष्मी, गणेश एवं सरस्वती के पूजन का विधान भी दीपावली में किया जाता है। लक्ष्मी जी धन की देवी हैं, गणेश जी विघ्नविनाशक मंगलकारक बुद्धि प्रदाता हैं और माँ सरस्वती ज्ञान की देवी हैं।

दीपावली और लोक संस्कृति

लोकभक्ति और दीप पूजन की सनातन परम्परा में निम्नलिखित 'दीप श्लोक 'में दीपज्योति की प्रार्थना की गई है-

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदा।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते।।

(हे दीपज्योति ! आप शुभ और कल्याण करने वाली है, स्वास्थ्य और धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाली है। शत्रुओं की बुद्धि का नाश करने वाली है। ऐसी पावन दीप-ज्योति को मेरा नमस्कार है।)

वस्तुतः दीपावली *"तमसो मा ज्योतिर्गमय"* का संदेश देती है। दीपावली के पर्व में लोक संस्कृति के अनेक तत्व उजागर होते हैं:

1. **दीपदान की परंपरा** – प्रत्येक घर में दीयों का जलना, ग्राम-नगर की गलियों में दीपमालाओं का सजना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, अपितु लोक-सौंदर्य और सामूहिकता की अभिव्यक्ति है।

2. **चित्रांकन और अल्पना** – गाँवों में गोबर, मिट्टी और चूने से आँगन सजाना; स्त्रियों द्वारा रंगोली और अल्पना बनाना; ये सब लोककला के अनुपम उदाहरण हैं ।

3. लोकगीत और लोकनृत्य – दीपावली की रात्रि में ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष गीत गाए जाते हैं। लोकगीतों में समृद्धि, सुख-शांति और घर-परिवार की मंगलकामनाएँ व्यक्त होती हैं।

4. सामूहिकता और मेल-मिलाप – दीपावली पर लोग आपस में मिलते हैं, मिठाइयाँ बाँटते हैं, बधाई एवं उपहार देते हैं। इस प्रकार वे सामाजिक समरसता का भाव प्रकट करते हैं। यह "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भारतीय भावना का लोक-रूप है।

दीपावली में आस्था और प्रतीक

भारतीय लोकजीवन में दीपावली पर्व में अनेक प्रतीक छिपे हैं। मुख्य दीप-पर्व अमावस्या के पूर्व त्रयोदशी को धनतेरस (धन्वंतरि जयंती), चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी और दीपावली के बाद प्रथमा को गोवर्धन पूजा और द्वितीया को भैया दूज (यम द्वितीया) पर्व भी दीपावली से जुड़े पर्व हैं।

दीपक : ज्ञान, आशा, सकारात्मकता एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण का प्रतीक।

गणेश-लक्ष्मी-सरस्वती पूजन : मंगल, संपन्नता, बुद्धि और श्रम के महत्त्व की स्वीकृति।शुभ और समृद्धि का संदेश।

गोवर्धन पूजा और अन्नकूट : कृषि-प्रधान संस्कृति और अन्न के प्रति कृतज्ञता।इस दिन गोवंश की उन्नति के लिए उनकी सेवा की जाती है।

भैया दूज : परिवार, विशेषकर भाई-बहन के रिश्ते का सामाजिक महत्त्व।इस दिन भाई बहिन को उपहार देता है और बहिन भाई को रोली-अक्षत से टीका लगाती है।

स्वच्छता : घर की साफ-सफाई करके कूड़ा-कचरा घर के बाहर फेंक दिया जाता है। घर की पुताई आदि हो जाने से घर एवं वातावरण शुद्ध और सुंदर हो जाता है । इससे नये उत्साह के साथ स्वास्थ्य-लाभ भी मिलता है। लोक मानस इन प्रतीकों के माध्यम से जीवन मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संजोकर रखता है।

दीपावली और लोककला

दीपावली का पर्व लोककलाओं का उत्सव है। घर-घर में दीयों के विविध आकार, कुम्हारों की कलात्मकता, बाजारों में खिलौनों और प्रतिमाओं का निर्माण-ये सब लोक शिल्प के जीवंत उदाहरण हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा है -

"भारतीय त्योहारों में लोक की कलात्मक चेतना का अद्भुत प्रदर्शन होता है, जिसमें समाज की सामूहिक रचनाशीलता झलकती है।"

आर्थिक और सामाजिक आयाम

दीपावली केवल धार्मिक नहीं, अपितु आर्थिक दृष्टि से भी लोक संस्कृति का केंद्र है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुम्हार, बढ़ई, स्वच्छकार, रँगाई-पुताई करने वाले , बुनकर, मिठाई बनाने वाले, बर्तन विक्रेता आदि सब इस पर्व से जुड़ते हैं और उन्हें रोजी-रोजगार मिलता है। बाजारों में रौनक, मेलों का आयोजन और नई वस्तुओं की खरीददारी, यह सब समाज में आर्थिक सक्रियता और उत्साह का संचार करते हैं।कुछ वर्षों में झालरों, चीनी लड़ियों और इलेक्ट्रॉनिक बल्बों पर हमारी निर्भरता बढ़ी है, जिससे मिट्टी के दीयों का कारोबार सिमट गया है। हमें मिट्टी के दीयों पर भरोसा करके इसके उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे स्वरोजगार और स्वदेशी को प्रोत्साहन मिल सके। मिट्टी के दीये हमें प्रकृति के निकट लाते हैं और जड़ों से जोड़ते हैं । दीये जगमग रोशनी भले ही न दे सकें, मन को शांति एवं आत्मिक आनंद तो प्रदान करते ही हैं। इनसे प्रदूषण भी नहीं फैलता और इनका निपटान भी वापस मिट्टी में हो जाता है।

दीपावली और कृषि संस्कृति

भारतीय समाज मूलतः कृषि-प्रधान है। दीपावली के समय खेतों से खरीफ की नई फसल आ चुकी होती है। अन्नकूट और गोवर्धन पूजा इसी कृषि-जीवन का उत्सव है। लोकगीतों में किसान अपनी फसल की खुशहाली और पशुधन की रक्षा की मंगलकामना करता है।

लोकविश्वास और अंधविश्वास

लोक संस्कृति के साथ लोकविश्वास भी जुड़े रहते हैं। दीपावली की रात को "लक्ष्मी घर में प्रवेश करती हैं"- यह लोकमान्यता है। साथ ही, पटाखों और शोर-शराबे को बुरी शक्तियों को दूर भगाने का प्रतीक माना गया। यद्यपि समय के साथ इन मान्यताओं में अंधविश्वास और अतिशय प्रदर्शन भी जुड़ गए हैं, जो पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए चुनौती हैं।

दीपावली पर्व से कई कुरीतियाँ भी जुड़ गई हैं। इनमें से एक है जुआ खेलना। दीपावली से लगभग 15 दिन पूर्व से ही जुआ खेला जाने लगता है। यह दीपावली के बाद तक चलता रहता है। इसी कारण मदिरापान बढ़ जाता है। हारे जुआरी में अपराध बोध से आत्महत्या तक हो जाती है। घर का धन एवं आभूषण तक चला जाता है। इससे चोरी,हत्या और लूटपाट की घटनाएँ बढ़ जाती हैं। दूसरी कुरीति

अंधविश्वास से जुड़ी हुई है, इसमें अमावस्या की रात्रि को तांत्रिक अपनी तंत्र विद्या,हवन, बलि आदि देकर विभिन्न सिद्धियों को प्राप्त करके उनका प्रायः गलत प्रयोग करते हैं। भोले-भाले अंधविश्वासी लोग तांत्रिकों के शिकार बनते हैं और वे धन एवं प्रतिष्ठा गँवा बैठते हैं। तीसरी कुरीति है आतिशबाजी। यह भी बहुत घातक परम्परा है। लोग आतिशबाजी में हजारों-लाखों रुपये फूँक देते हैं। कई दिनों रात गए तक पटाखों का कानफोड़ू शोर होता रहता है, जिससे मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों को भी कष्ट होता है। वातावरण में घनघोर वायु प्रदूषण बढ़ जाता है। प्रतिवर्ष पटाखा-विस्फोट से अनेक लोग हताहत होते हैं। हमें इन अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर करने की आवश्यकता है, इसके लिए संचार माध्यमों से एवं जन-जागरण के द्वारा जागरूकता लाने के प्रयास करने चाहिए।

आधुनिक संदर्भ में दीपावली

आज दीपावली केवल ग्रामीण या पारंपरिक लोकजीवन का पर्व नहीं रहा। शहरी परिवेश में भी यह लोक संस्कृति का वाहक है। यद्यपि आधुनिकता के दबाव में इसकी सादगी और सामूहिकता पर बाजारीकरण हावी हो गया है। फिर भी, दीपावली आज भी भारतीय लोक संस्कृति की धड़कन है। प्रकाश पर्व व्यक्ति को परिवार से, परिवार को समाज से और समाज को सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। यह पर्व हमें प्रकाश, ज्ञान, उत्साह और समृद्धि का संदेश देता है। युगों से दीपावली ने भारतीय समाज को एकता, सौंदर्य और आशा से जोड़ रखा है। अतः कहा जा सकता है कि दीपावली भारतीय लोक संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है।

वैश्विक स्वरूप लेती दीपावली

भारत और भारतवंशियों की उन्नति के साथ-साथ अब उनसे जुड़ी हर गतिविधि में विदेशियों की रुचि बढ़ने लगी है। भारत का सबसे लोकप्रिय त्यौहार दीपावली भी इससे अछूती नहीं है। आज से लगभग 50 वर्ष पहले यूरोप और अमेरिका के लोग दीपावली

के दिन घरों के बाहर सजाए जाने वाले दीयों और रंगोलियों को कुतुहल भरी दृष्टि से देखते थे,किन्तु वे आज न केवल उसे देखकर खुश होते हैं, अपितु अपने घरों में भी सजाने लगे हैं। मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, नेपाल और मारीशस जैसे देशों में न केवल सार्वजनिक अवकाश होता है, अपितु वहाँ अनेक शहरों में दीपावली पार्टी होती है। अमेरिका, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, दुबई, दक्षिण अफ्रीका आदि अनेक देशों में बाजारों को रंग-बिरंगी रोशनियों, रंगोलियों और दीयों से सजाया जाता है एवं ग्लोबल विलेज मेले की शोभा देखते ही बनती है। मलेशिया में दीपावली पर आतिशबाजी नहीं की जाती है। इसलिए उसे हरित दीपावली कहा जाता है। थाईलैंड में दीयों की जगह केले के पत्ते के दोने में मोमबत्तियाँ रखकर पानी में बहाई जाती हैं। अब भारतवंशियों की वर्ष की लगभग आधी कमाई दीपावली त्यौहार पर होने लगी है। अकेले भारत में दीपावली पर लगभग सात लाख करोड़ का व्यापार होता है। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि पूरे विश्व भर में दीपावली पर कितना व्यापार होता होगा। इसप्रकार दीप पर्व भारतीयता के प्रसार के साथ वैश्विक स्तर पर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में योगदान कर रहा है।

दीपावली का संदेश

दीपावली हमें उल्लास से भर देती है। दीपावली की ज्योति-प्रक्रिया, स्त्रोत एवं संरचना एक ऐसी सहदयता एवं एकता पर आधारित हैं, जो सबको जोड़कर चलती हैं। वर्तमान समय जिस तरह से नकारात्मकता और संवेदनहीनता का पर्याय बना हुआ है, उसमें स्नेह की अत्यधिक आवश्यकता है। दीपावली सौंदर्य की महत्ता का पर्व है। आज सृजनात्मकता, कला तत्व, मूल्य, संस्कार तथा कल्पना जैसे शब्दों की अर्थवत्ता को पुनः जीवंत करने का समय है। मिट्टी की कला के इतने विविध रूप दीप पर्व पर देखने को मिलते हैं कि शायद वर्ष भर न मिलते हों। हमारे यहाँ इन कलाओं को संरक्षित और संवर्द्धित करने की आवश्यकता है। फाइबर, प्लास्टिक, चीनी मिट्टी आदि के बढ़ते चलन के बीच मिट्टी की कला सहेजी जानी चाहिए। किसान के वैभव में ही दीपावली का वैभव छिपा हुआ है। अतः कृषि को राष्ट्रीय समृद्धि का आधार बनाने की आवश्यकता है। दीपावली हमें संकीर्णता, संवादहीनता एवं विद्वेष की भावनाओं को तिरोहित करना सिखाती है। दीपावली का मूल संदेश है-"अप्प दीपो भव "। अतः हमें दीपावली में अपने सृजन के दीये को जलाना चाहिए, जिससे हम स्वयं प्रकाशित हो सकें और राष्ट्र को प्रकाशपथ पर अग्रसित कर सकें।

अस्तु, दीपमालिके ! मंगलमय हो।

नेता हादसों से मुक्ति के लिए इंटरनेट पर दें भाषण

प्रमोद भार्गव
शिवपुरी म.प्र.

आजकल परिवर्तन की लहर जैन जी या जनरेशन जेड के जरिए देखने में आ रही है। लाखों लोग एक संदेश से तय स्थल पर पहुंच रहे हैं। लेकिन भारतीय राजनेताओं को किसी स्थल के चयन की भी जरूरत नहीं है। वे अपने घर या दफ्तर से इंटरनेट से चलने वाले सोशल मीडिया पर अपनी बात उसी अंदाज में कह सकते हैं, जो मंच से कहते हैं। यदि हमारे नेता ऐसा करने लग जाएं तो तमिलनाडु के करूर में हुए हादसे से बचा जा सकता था। दक्षिण के लोकप्रिय अभिनेता से नेता बने विजय थलापथि की पहचान और प्रसिद्धि भी मंचों से भाशण देने की बजाय फिल्मों और डिजिटल मीडिया से पूरे देष में बनी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रेडियो के माध्यम से मन की बात कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हैं। देष के कोने-कोने में इसके श्रोता कई करोड़ की संख्या में होते हैं।

विजय एक चुनावी रैली को बस की छत पर खड़े होकर संबोधित कर रहे थे। उम्मीद थी कि दस हजार की संख्या में लोग आएंगे, लेकिन पहुंच गए पचास हजार से भी ज्यादा। प्रषासन से भी दस हजार लोगों के पहुंचने की अनुमति दी गई थी। चूंकि पूरे दक्षिण भारत में अभिनेताओं का दर्जा भगवान का रहा है। फलस्वरूप अपने प्रिय नायक को सुनने से कहीं ज्यादा देखने के लिए लोग पहुंच गए। सभास्थल के आसपास की सड़के भीड़ से जाम हो गई। सांस लेना तक कठिन हो गया। यह स्थिति इस कारण और बनी, क्योंकि विजय सभास्थल पर छह घंटे से भी अधिक की देरी से पहुंचे। उनके पहुंचते ही लोग मंच की तरफ बढ़ने लगे। इसी बीच एक नो साल की बच्ची के गुम होने की खबर फैल गई। विजय ने उसे ढूंढने की अपील मंच से की और भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में महिला व बच्चों समेत 39 लोगों की मृत्यु की खबर है।

विजय थलापथि ने 2 फरवरी 2024 को टीवीके नाम से एक नए राजनीतिक दल का गठन किया है। उन्होंने 2026 के तमिलनाडु विधानसभा के चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा की है। इसके चलते विजय राज्यभर में आमसभाएं कर रहे हैं। इसका उद्देश्य जनता को पार्टी के अजेंडे और विचारधारा से अवगत कराना है। इन सभाओं में वे स्वयं को सत्तारूढ़ दल डीएमके के सबसे प्रमुख विरोधी की छवि गढ़ने में लगे हैं। तमिलनाडू की राजनीति में अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का जबरदस्त प्रभाव रहा है। वही मुख्यमंत्री बनते रहे है। इसका आरंभ एमजी रामचंद्रन ने 1972 में अपनी पार्टी अन्ना द्रविड मुनेत्र कड़गम किया था। उन्हें बड़ी सफलता मिली और वे राज्य के मुख्यमंत्री भी बने। जे जयललिता भी 1982 में इस पार्टी में शामिल हो गई। लेकिन बाद में उन्होंने अपनी पार्टी बनाई और मुख्यमंत्री बनीं। 2008 में चिरंजीवी ने अपनी प्रजा राज्यम पार्टी की स्थापना की। इसी वर्श पवन कल्याण ने जनाषन पार्टी बनाई। लेकिन ये अभिनेता कमाल नहीं दिखा पाए। अब विजय इसी परंपरा को आगे बढ़ाने में लगे है। उन्हें कितनी सफलता मिली है, यह 2026 में साफ होगा।

भारत में पिछले डेढ़ दशक के दौरान मंदिरों और धार्मिक आयोजनों में उम्मीद से कई गुना ज्यादा भीड़ उमड़ रही हूरै। यही स्थिति राजनेताओं की सभाओं में देखने में आ रही

है। जिसके चलते दर्शन-लाभ की जल्दबाजी व कुप्रबंधन से उपजने वाली भगदड़ व आगजनी का सिलसिला हर साल देखने में आ रहा है। धर्म स्थल हमें इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि हम कम से कम शालीनता और आत्मानुशासन का परिचय दें। किंतु इस बात की परवाह आयोजकों और प्रशासनिक अधिकारियों को नहीं होती, अतएव उनकी जो सजगता घटना के पूर्व सामने आनी चाहिए, वह अक्सर देखने में नहीं आती? लिहाजा आजादी के बाद से ही राजनीतिक और प्रशासनिक तंत्र उस अनियंत्रित स्थिति को काबू करने की कोशिश में लगा रहता है, जिसे वह समय पर नियंत्रित करने की कोशिश करता तो हालात कमोबेश बेकाबू ही नहीं हुए होते? अतएव देखने में आता है कि आयोजन को सफल बनाने में जुटे अधिकारी भीड़ के मनोविज्ञान का आकलन करने में चूकते दिखाई देते हैं।

जरूरत से ज्यादा प्रचार करके लोगों को यात्रा के लिए प्रेरित किया जाता है। फलतः जनसैलाब इतनी बड़ी संख्या में उमड़ जाता है कि सारे रास्ते पैदल भीड़ से जाम हो जाते हैं। विजय को देखने जो भीड़ उमड़ी थी, उसके अवागमन के प्रबंधन के लिए जिस प्रबंध कौशल की जरुरत थी, उसके प्रति घटना से पूर्व सर्तकता बरतने की जरूरत थी? इसके प्रति प्रबंधन अदूरदर्शी रहा। क्योंकि सभी रास्ते विजय के सभास्थल पर आने से पहले ही ठसाठस भर गए थे। भीड़ प्रबंधन की सीख हम विदेशी साहित्य और प्रशिक्षण से लेते हैं। जो भारतीय मेलों और जनसभाओं के परिप्रेक्ष्य में कतई प्रासंगिक नहीं है। क्योंकि दुनिया के किसी अन्य देश में किसी एक दिन और विशेश मुहूर्त्त के समय लाखों-करोडों.की भीड़ जुटने की उम्मीद ही नहीं की जाती? बावजूद हमारे नौकरशाह भीड़ प्रबंधन का प्रशिक्षण, लेने खासतौर से योरूपीय देशों में जाते हैं। प्रबंधन के ऐसे प्रशिक्षण विदेशी सैर-सपाटे के बहाने हैं, इनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता। ऐसे प्रबंधनों के पाठ हमें खुद अपने देशज ज्ञान और अनुभव से लिखने होंगे।

दरअसल दर्शन-लाभ और पूजापाठ जैसे अनुश्ठान अशक्त और अपंग मनुश्य की वैशाखी हैं। जब इंसान सत्य और ईश्वर की खोज करते-करते थक जाता है और किसी परिणाम पर भी नहीं पहुंचता है तो वह पूजापाठों के प्रतीक गढ़कर उसी को सत्य या ईश्वर मानने लगता है। यह मनुष्य की स्वाभाविक कमजोरी है। यथार्थवाद से पलायन अंधविश्वास की जड़ता उत्पन्न करता है। भारतीय समाज में यह कमजोरी बहुत व्यापक और दीर्घकालीक रही है। जब चिंतन मनन की धारा सूख जाती है तो सत्य की खोज मूर्ति पूजा और मुहूर्त की शुभ घड़ियों में सिमट जाती है। जब अध्ययन के बाद मौलिक चिंतन का मन-मस्तिश्क में ह्रस हो जाता है तो मानव समुदाय भजन-कीर्तन में लग जाता है। यही हश्र हमारे पथ-प्रदर्शकों का हो गया है। नतीजतन पिछले कुछ समय से सबसे ज्यादा मौतें भगदड़ की घटनाओं, जनसभाओं और सड़क दुर्घटनाओं में उन श्रद्धालुओं की हो रही हैं, जो ईश्वर और नेता से खुशहाल जीवन की प्रार्थना करने धार्मिक यात्राओं पर जाते हैं। नेता बने विजय भी सभाओं में अपी पार्टी की लोक-कल्याणकारी सुधार योजनाएं बताने के लिए पहुंच रहे हैं। जिससे चुनाव से पहले तय हो जाए कि जनता को ज्यादा लाभ देने में कौन सक्षम है।

राजनीतिक दल और नेताओं को अपनी विचारधारा आमजन तक पहुंचना जरूरी है। लेकिन बदलते तकनीकि समय में जरूरी है कि नेता और दल प्रचार के तरीकों में बदलाव लाएं। क्योंकि जिस 1997 से 2012 के बीच जन्मीं पीढ़ी को डिजिटल दुनिया और सोषल मिडिया का अनुगामी माना जा रहा है, उस तक अपनी बात पहुंचाने के लिए विषाल जनसभाओं की जरूरत नहीं रह गई है। इन्हीं माध्यमों से नेता या युग प्रवर्तक अपनी बात बड़े जनसमुदाय तक पहुंचा सकते हैं। यही नहीं जो पीढ़ी उम्रदराज है, वह भी नेताओं की बात घर बैठे टीवी और डिजिटल माध्यमों के जरिए सरलता से सुन व देख सकती है। यदि नेता की बात में सरल जीवन जीने के लाभदायी तरीके होंगे, तो जनता उनका अनुकरण करेगी अन्यथा नाकार देगी। अतएव आम सभाओं में संदेश देने की बजाय डिजिटल माध्यमों से संदेष का प्रसारण राजनेता आरंभ कर दें तो लोगों के बेमौत मारे जाने का सिलसिला थम जाएगा।

भारत में ग्रामीण शिक्षा

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,
शैक्षिक स्तंभकार, पंजाब

शिक्षा व्यापक दुनिया का द्वार है। शिक्षा हमें जीवन के प्रति बेहतर दृष्टिकोण प्रदान करती है तथा ग्रामीण भारत के बच्चों के लिए यह दरवाज़ा किस हद तक खोलने में सक्षम हुई है, इसके बिना ग्रामीण बुनियादी ढांचे का खुलासा अधूरा है। शिक्षा, जैसा कि हम सभी जानते हैं, बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा न केवल व्यावसायिक उद्देश्य के लिए बल्कि व्यक्तियों की मानसिक वृद्धि के लिए भी आवश्यक है। उचित शिक्षा के बिना, आज की आधुनिक दुनिया में जीवित रहना बहुत कठिन है। यह एक तथ्य है कि अधिकांश भारतीय लोग अभी भी गांवों में रहते हैं और इसलिए भारत में ग्रामीण शिक्षा का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण लोगों के बीच शिक्षा के लिए सरकार कई प्रावधान प्रदान कर रही है। हालांकि, बड़ा सवाल यह है कि क्या ग्रामीण भारतीय शिक्षा की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए नामांकन और उपस्थिति सही पैरामीटर है तथा इस तथ्य पर विचार करना आवश्यक है कि संख्याओं की खोज में शिक्षा की गुणवत्ता को नजरअंदाज नहीं किया जा रहा है।

इन दिनों चिंता का मुख्य विषय नामांकन आंकड़े नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण भारत में दी गई शिक्षा की गुणवत्ता है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) नामक सर्वेक्षण से पता चलता है कि स्कूलों में पढ़ने वाले ग्रामीण छात्रों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन पांचवीं कक्षा के आधे से अधिक छात्र द्वितीय श्रेणी की पाठ्यपुस्तक नहीं पढ़ सकते हैं और सरल गणित संबंधी समस्याओं को हल करने में असमर्थ हैं तथा सामान्य जागरूकता शून्य थी। और जोड़ने के लिए, अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में गणित का स्तर और भी कम हो रहा है जो स्पष्ट रूप से हमारी ग्रामीण शिक्षा का स्तर दर्शाता है। यद्यपि कई अन्य सर्वेक्षण सरकारी तथा गैर-सरकारी समूहों द्वारा भी किए जाते हैं, लेकिन परिणाम समान पाए गए। हालांकि सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या यह है कि वे सही दिशा में नहीं हैं। ऐसे व्यवहार के कारण कई हैं। शिक्षकों की खराब उपस्थिति, बुनियादी ढांचे का अभाव तथा सरकारी शिक्षकों की रुचि ग्रामीण स्तर पर गरीब शिक्षा के कारणों में से एक है।

शिक्षा और ग्रामीण भारत बाकी भारत की तुलना में शिक्षा के स्तर और शैक्षिक अवसरों में बहुत अंतर है। यह कहना गलत नहीं होगा कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक भी स्तर की शिक्षा से कम चिंतित हैं। यह ऐसा नहीं है कि हमारे शहरों और गांवों के बच्चों को अलग-अलग चीजें सिखाई जाती हैं। पाठ्यक्रम स्पष्ट रूप से एक ही मानक का होना चाहिए। लेकिन समस्या यह है कि भारत में औपचारिक शिक्षा की अवधारणा शुरू होने के समय से ही इन क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर नजरअंदाज कर दिया गया था। और यह लापरवाही अभी भी प्रचलित है और ग्रामीण भारत में शिक्षकों को कोई सुधार करने की चिंता नहीं होती। यह पहचानना बुद्धिमानी होगी कि विभिन्न संदर्भों ने अलग-अलग अंतर्निहित कौशल और क्षमताओं को बढ़ावा दिया है। ग्रामीण बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में अलग-अलग कौशल पर जोर दिया गया होगा। चूंकि उनका पालन-पोषण शहरी बच्चों से बहुत अलग है, इसलिए ग्रामीण और शहरी बच्चों की क्षमताओं की तुलना करना वास्तव में अनुचित होगा। मूलतः, मुद्दा यह है कि इन ग्रामीण बच्चों को एक अलग गुणवत्ता बेसलाइन से शुरुआत करनी होगी।

न केवल छात्र और उनकी सामान्य क्षमताएं, बल्कि शैक्षिक वातावरण भी बहुत भिन्न होता है। अवसरों के संदर्भ में बहुत अंतर है; बुनियादी ढांचा तथा मानसिकता। कई ग्रामीण स्कूलों में कम मजबूत इमारतें हैं, मौसमी भिन्नताओं के साथ पहुंच में समस्याएं होती हैं और यहां तक कि यदि उनके पास अच्छे शिक्षक हों तो भी ज्ञान केंद्रों की एक श्रृंखला तक पहुंच कम होती है। ये समस्याएं ऐसी नहीं हैं जिन्हें

हम नहीं जानते। हमारे ग्रामीण स्कूलों में इनमें से अधिकांश समस्याएं अच्छी तरह ज्ञात हैं। हर कोई जानता है कि अपर्याप्त बुनियादी ढांचे जैसी कुछ मूलभूत समस्याएं - ठोस दीवारें और छत जो लीक नहीं होती हैं, ग्रामीण छात्रों के लिए एक दूर का सपना है। अधिकांश में शौचालय या विश्वसनीय बिजली नहीं है। शिक्षण उपकरण मूलभूत ब्लैकबोर्ड और क्रिट तक ही सीमित है, तथा पाठ्यपुस्तक हमेशा समय पर छात्रों तक नहीं पहुंचते। ये सभी कारण हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के निम्न स्तर के कुछ कारण हैं। ग्रामीण भारत में शिक्षा के स्तर को लगातार घटाने के लिए कई अन्य कारण भी हैं। हमारे ग्रामीण सरकारी स्कूलों में एक तिहाई से अधिक के पास पूरे विद्यालय के लिए एक शिक्षक है। इसका मतलब यह है कि यदि शिक्षक बीमार या अनुपस्थित हैं तो स्कूल बंद हो जाता है। इसका मतलब यह भी है कि प्रत्येक कक्षा न केवल एक बहु-क्षमता वर्ग होती है, बल्कि हर कक्षा में ऐसे छात्र होते हैं जिन्हें विभिन्न पाठ्यपुस्तकों के साथ अलग-अलग ग्रेड/मानक में अध्ययन करना होता है।

ग्रामीण भारत और सरकार भारत में चीन के बाद दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। भारत ने शिक्षा को जनता के बीच सामाजिक परिवर्तन लाने का सबसे अच्छा तरीका माना। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के तुरंत बाद, शिक्षा को सभी लोगों तक पहुंचाना सरकार की प्राथमिकता बन गई थी और देश में ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की गईं। सरकार ने देश के शिक्षा मानकों को बढ़ाने के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का अधिकार अधिनियम (आरटीई) तैयार किया। सरकार देश में शिक्षा के कारण को लेकर बहुत गंभीर है, लेकिन फिर भी रास्ते में कई बाधाएं हैं।

कुछ असफलताओं के बावजूद, ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम 1950 के दशक में भी निजी संस्थानों की सहायता से जारी रहे। गांधी ग्राम ग्रामीण संस्थान की स्थापना और भारत में 200 सामुदायिक विकास ब्लॉक स्थापित होने के समय ग्रामीण शिक्षा का एक बड़ा नेटवर्क स्थापित किया गया था। नर्सरी स्कूल, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय और महिलाओं के लिए वयस्क शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किए गए। हमारी 50% से अधिक आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आती है और हमारी सरकार उनकी उन्नति को लेकर बहुत गंभीर है। सरकार ग्रामीण शिक्षा को एक एजेंडा के रूप में देखती रही जो नौकरशाही पिछड़ेपन और सामान्य स्थिरता से अपेक्षाकृत मुक्त हो सकती है। हालांकि, कुछ मामलों में वित्तपोषण की कमी से भारत के ग्रामीण शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राप्त लाभ संतुलित हो गए।

ग्रामीण विकास योजना के अंतर्गत कई कार्यक्रम और स्कूल आए। शिक्षा मंत्रालय प्रतिदिन इस समस्या से निपटने के लिए नए और अभिनव विचार लेकर आ रहा है, जिनमें से कुछ सही हैं जबकि उनमें से कुछ भारत के गरीबों में स्वीकार्य नहीं पाए गए और सरकार द्वारा किए गए निवेश कभी-कभी कम परिणाम दिए। आज सरकारी ग्रामीण स्कूलों में धन की कमी है। ग्रामीण विकास फाउंडेशन (हाइडराबाद) जैसी कई नींव उच्च गुणवत्ता वाले ग्रामीण स्कूलों का सक्रिय रूप से निर्माण करती हैं, लेकिन सेवा देने वाले छात्रों की संख्या कम है। आज समस्या से निपटने के लिए कुछ जागरूकता और सशक्तिकरण लाने की आवश्यकता है। सरकार अपनी ओर से काम कर रही है, और अब सरकार द्वारा खर्च किए जा रहे संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने की आवश्यकता है तथा इसके लिए जागरूकता आवश्यक है।

समस्या से निपटने के तरीके भारत सरकार, साथ ही राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारें कई दशकों से इन क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के लिए पर्याप्त ग्रामीण शिक्षा बुनियादी ढांचे स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्र भी बनाए हैं। जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, अधिकांश सरकारी स्कूलों में मजबूत स्कूल भवन, कक्षाएं, ब्लैकबोर्ड, प्रभावी ढंग से बैठने और अपने शिक्षकों को सुनने के लिए उचित बेंच, पेयजल, मनोरंजन और अन्य अवकाश सुविधाओं के लिए खेल स्थल, शौचालय सुविधाएँ, विद्यालय परिसर की सफाई आदि जैसी बुनियादी संरचना नहीं है। उदाहरण के लिए, कठोर ब्लैकबोर्ड कुछ कुशल शिक्षकों को भी इस पर कुछ लिखने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता। इससे शिक्षकों को कुछ महत्वपूर्ण चित्रों और इसलिए केवल मौखिक शिक्षण से बचने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इससे छात्रों के लिए ज्ञान का स्तर कम हो जाएगा।

कुछ गंभीर सुधारों की आवश्यकता है। इस समय की आवश्यकता बुनियादी लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सुविधाओं में तुरंत सुधार करना है। अधिकांश सरकारी स्कूलों में शिक्षकों और अन्य प्रशासनिक कर्मचारियों के बीच जवाबदेही की कमी है। शिक्षक अपने काम में नियमित नहीं होते, साथ ही जब वे आते हैं तो वे ईमानदारी से अपना काम करने के मूड में भी नहीं रहते। स्कूल प्रशासनिक कर्मचारियों और शिक्षकों के बीच मित्रता शिक्षा के कई पहलुओं की लापरवाही के लिए जिम्मेदार है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में निजी स्कूल कई परीक्षा परिणामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। कुछ स्कूलों में भी जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी के कारण लेखा विभाग में भ्रष्टाचार प्रचलित है। कई शिक्षक और अन्य कर्मचारी भी आलसी हैं। इस प्रकार इन सभी गलत प्रथाओं के अंतिम पीड़ित निर्दोष बच्चे हैं जो जीवन में उत्कृष्ट बनना चाहते हैं। शिक्षा मंत्रालय को स्कूलों में नियमित जांच करने के साथ-साथ आश्चर्यचकित निरीक्षण करना चाहिए कि क्या सब कुछ ठीक चल रहा है। इसके अलावा, छात्रों से शिक्षकों की प्रतिक्रिया मांगनी चाहिए और स्कूल के परिणाम को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विद्यालयों और क्षेत्र प्रमुखों के बीच नियमित बैठक होनी चाहिए जो किसी विशेष क्षेत्र में शिक्षा योजनाओं का ध्यान रखती हैं।

भारत के पास भविष्य का ईंधन

मानवेन्द्र त्रिपाठी
लखनऊ

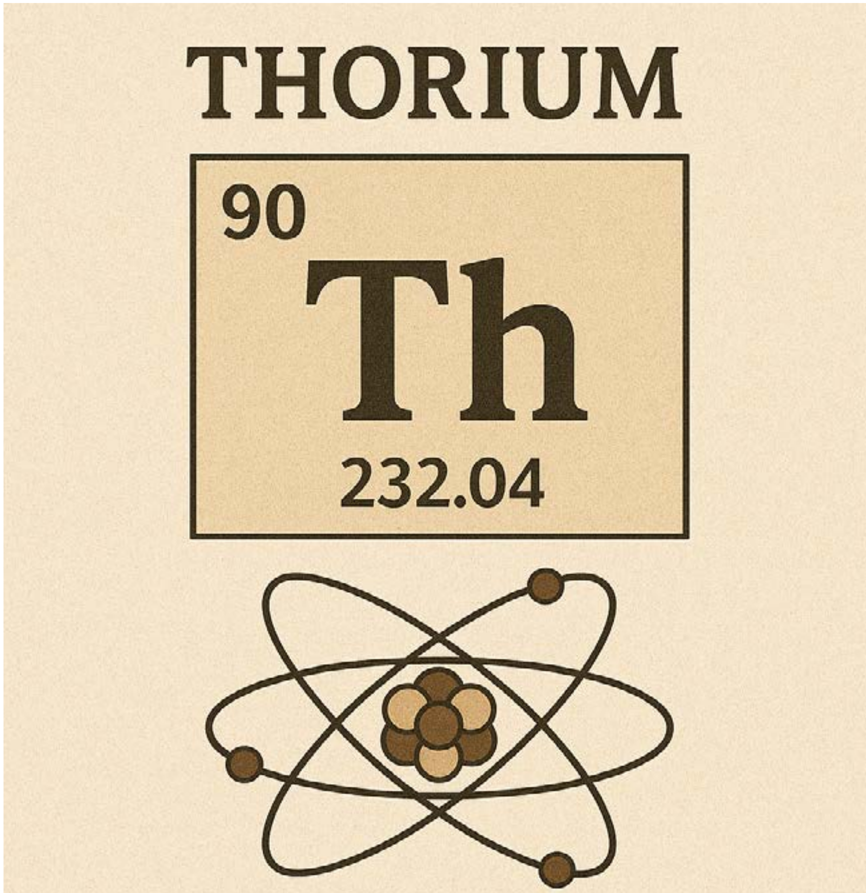

भारत प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर देश है और ऊर्जा के क्षेत्र में यहाँ मौजूद थोरियम का महत्व असाधारण है। यह तत्व एक ऐसा खनिज है जिसे अभी तक पूरी तरह उपयोग में नहीं लाया गया है, किंतु आने वाले समय में यह भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करने वाला सबसे बड़ा साधन बन सकता है। थोरियम एक रेडियोधर्मी धातु है जो प्रकृति में मोनाज़ाइट नामक रेत के रूप में उपलब्ध होती है। भारत के समुद्री तटीय क्षेत्रों में यह खनिज इतनी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है कि भारत को विश्व का सबसे बड़ा थोरियम भंडार वाला देश माना जाता है। अनुमान के अनुसार, भारत के पास विश्व के कुल थोरियम भंडार का लगभग एक चौथाई हिस्सा मौजूद है। यह तथ्य केवल सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं है, बल्कि भारत के भविष्य की ऊर्जा रणनीति का आधार भी है।

थोरियम की खोज वर्ष 1828 में नॉर्वे के वैज्ञानिक बेरजीलियस ने की थी और इसका नाम उन्होंने नॉर्स पौराणिक कथाओं के देवता थोर के नाम पर रखा। थोरियम सीधे परमाणु रिएक्टर में ईंधन की तरह काम नहीं करता क्योंकि यह स्वयं फिसाइल नहीं है। इसे परमाणु रिएक्टर में डालने पर यह न्यूट्रॉन अवशोषित करके यूरेनियम-233 में परिवर्तित होता है और वही ऊर्जा उत्पादन का कार्य करता है। यही कारण है कि थोरियम को भविष्य का ईंधन या ब्रीडर फ्यूल कहा जाता है। इसकी विशेषता यह है कि यह यूरेनियम और अन्य परमाणु ईंधनों की तुलना में अधिक सुरक्षित माना जाता है, इससे कम परमाणु कचरा उत्पन्न होता है और उसका जीवनकाल भी अपेक्षाकृत कम होता है। इस कारण परमाणु अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या भी कुछ हद तक हल हो जाती है।

आज भारत में कई अनुसंधान केंद्र और प्रयोगशालाएँ इस दिशा में काम कर रही हैं। मुंबई का भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और तमिलनाडु का इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र इस क्षेत्र के प्रमुख संस्थान हैं। कल्पक्कम स्थित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर भारत की इस दिशा में प्रगति का प्रमाण है। आने वाले दशकों में जब तीसरे चरण की योजनाएँ पूरी तरह लागू होंगी तो भारत थोरियम आधारित रिएक्टरों का विश्व में अग्रणी देश बन जाएगा।

भारत में थोरियम का वितरण मुख्य रूप से तटीय इलाकों में है। केरल के अलेप्पी, चवरा और क्विलोन क्षेत्र थोरियम रेत से सबसे समृद्ध माने जाते हैं। तमिलनाडु के मन्नार की खाड़ी और रामेश्वरम क्षेत्र में भी थोरियम की मात्रा काफी अधिक है। आंध्र प्रदेश का विशाखापट्टनम और ओडिशा का गंजाम क्षेत्र

तथा चिल्का झील का इलाका भी थोरियम की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त राजस्थान, बिहार और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में भी थोरियम पाया जाता है, लेकिन वहाँ इसकी मात्रा अपेक्षाकृत कम है। यदि समग्र दृष्टि से देखा जाए तो भारत के पास इतना बड़ा भंडार है कि यदि वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से सही दिशा में इसका उपयोग किया जाए तो आने वाले कई सौ वर्षों तक भारत को ऊर्जा की कमी नहीं होगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत ने यह समझ लिया था कि ऊर्जा आत्मनिर्भरता किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए अत्यावश्यक है। डॉ. होमी जहांगीर भाभा ने परमाणु ऊर्जा के महत्व को पहचानते हुए एक तीन-चरणीय कार्यक्रम का खाका प्रस्तुत किया। पहले चरण में यूरेनियम आधारित रिएक्टरों का उपयोग किया गया जिनसे ऊर्जा उत्पादन के साथ-साथ प्लूटोनियम भी प्राप्त होता था। दूसरे चरण में इस प्लूटोनियम का उपयोग फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों में किया गया जिससे अधिक ईंधन और ऊर्जा दोनों प्राप्त होते हैं। तीसरा चरण थोरियम को आधार बनाकर संचालित होना था, जहाँ थोरियम को यूरेनियम-233 में परिवर्तित करके बड़े पैमाने पर ऊर्जा उत्पन्न की जानी थी। भारत का यह दूरदर्शी कार्यक्रम इस दृष्टि से अद्वितीय है कि उसने थोरियम जैसे भविष्य के ईंधन पर प्रारंभ से ही ध्यान केंद्रित किया।

आज भारत में कई अनुसंधान केंद्र और प्रयोगशालाएँ इस दिशा में काम कर रही हैं। मुंबई का भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और तमिलनाडु का इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र इस क्षेत्र के प्रमुख संस्थान हैं। कल्पक्कम स्थित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर भारत की इस दिशा में प्रगति का प्रमाण है। आने वाले दशकों में जब तीसरे चरण की योजनाएँ पूरी तरह लागू होंगी तो भारत थोरियम आधारित रिएक्टरों का विश्व में अग्रणी देश बन जाएगा।

वैश्विक स्तर पर भी थोरियम के भंडार मौजूद हैं। अमेरिका, ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया और नॉर्वे जैसे देशों के पास पर्याप्त मात्रा में थोरियम है, लेकिन उन देशों में यूरेनियम की प्रचुरता होने के कारण उन्होंने थोरियम पर उतना ध्यान नहीं दिया। भारत की स्थिति अलग है क्योंकि यहाँ यूरेनियम की उपलब्धता सीमित है और थोरियम की प्रचुरता अत्यधिक है। यही कारण है कि भारत ने थोरियम अनुसंधान को प्राथमिकता दी और यह कहना गलत नहीं होगा कि आज थोरियम आधारित तकनीक में भारत विश्व में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

थोरियम का उपयोग केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक और आर्थिक महत्व भी हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए स्थायी और स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध कराना आवश्यक है। कोयला और पेट्रोलियम जैसे पारंपरिक स्रोत सीमित हैं और इनके अत्यधिक प्रयोग से प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन की समस्याएँ बढ़ रही हैं। सौर, पवन और जल ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोत महत्वपूर्ण तो हैं लेकिन इनसे निरंतर और स्थायी ऊर्जा आपूर्ति करना कठिन है। ऐसे में थोरियम एक दीर्घकालिक और सुरक्षित विकल्प के रूप में सामने आता है। यदि भारत इसमें सफल होता है तो यह केवल ऊर्जा संकट का समाधान नहीं होगा बल्कि आर्थिक विकास को भी नई गति मिलेगी।

थोरियम से जुड़ी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह सीधे उपयोग योग्य नहीं है। इसे यूरेनियम-233 में परिवर्तित करने की प्रक्रिया जटिल और महँगी है। इसके लिए विशेष तकनीक, अनुसंधान और भारी निवेश की आवश्यकता होती है। थोरियम रिएक्टर की तकनीक अभी प्रारंभिक अवस्था में है और इसे व्यावहारिक स्तर पर लाने के लिए वर्षों तक वैज्ञानिक प्रयोग और परीक्षण की ज़रूरत होगी। इसके साथ ही परमाणु सुरक्षा, अपशिष्ट प्रबंधन और राजनीतिक इच्छाशक्ति भी इस दिशा में बाधा बन सकती हैं। इसके बावजूद थोरियम के लाभ इतने बड़े हैं कि इन चुनौतियों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। थोरियम आधारित ऊर्जा से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं होता और यह जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्याओं से निपटने में सहायक हो सकता है। इससे परमाणु दुर्घटनाओं की संभावना भी कम होती है क्योंकि यह अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित ईंधन है। इस कारण इसे भविष्य की स्वच्छ और स्थायी ऊर्जा का आधार माना जा रहा है।

भारत में थोरियम के उपयोग से केवल ऊर्जा आत्मनिर्भरता ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर नेतृत्व की संभावना भी जुड़ी हुई है। यदि भारत थोरियम आधारित रिएक्टरों को सफलतापूर्वक विकसित और संचालित कर पाता है तो वह न केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा करेगा बल्कि अन्य देशों के लिए भी तकनीक और ऊर्जा का प्रदाता बन सकता है। यह भारत की वैज्ञानिक क्षमता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दोनों को नई ऊँचाइयाँ देगा। इस दिशा में भारत सरकार ने कई योजनाएँ तैयार की हैं। अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ विदेशी सहयोग और तकनीकी आदान-प्रदान की भी संभावनाएँ खोजी जा रही हैं। विश्व ऊर्जा संकट, जलवायु परिवर्तन और बढ़ती जनसंख्या के बीच भारत का थोरियम भंडार एक वरदान की तरह है। यह केवल खनिज संपदा नहीं बल्कि भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा की कुंजी है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत में थोरियम का भंडार केवल प्राकृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी संभावना है जो आने वाले समय में देश की दिशा और दशा बदल सकती है। यदि वैज्ञानिक अनुसंधान, सरकारी नीतियों और जनहितकारी दृष्टिकोण के साथ थोरियम का सही दोहन किया गया तो भारत न केवल अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करेगा बल्कि पूरे विश्व को स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा का विकल्प भी प्रदान करेगा। थोरियम भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता, पर्यावरणीय सुरक्षा और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में ले जाने की क्षमता रखता है और यही कारण है कि इसे भविष्य का ईंधन कहा जाता है।

भारत में थोरियम व परमाणु ऊर्जा प्रोजेक्ट्स से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण आँकड़े: भारत के पास अनुमानित थोरियम भंडार लगभग 846,000 टन थोरियम धातु (Th) का है।

भारत ने पाया हुआ मोनाज़ाइट संसाधन लगभग 11.93 मिलियन टन (in situ) है, जिसमें थोरियम की मात्रा बहुत बड़ी है।

संसाधन-पात्र मोनाज़ाइट खनन स्थलों में से वर्तमान में लगभग 17 क्षेत्रों को "exploitable" (उपयोग योग्य) पहचाना गया है, जिनमें लगभग 4 मिलियन टन मोनाज़ाइट शामिल है।

इन पहचाने गए "exploitable" संसाधनों का लगभग 70% हिस्सा संभवतः खनन योग्य (mine-able) है।

परमाणु बिजलीघर एवं भविष्य की क्षमता:

दिसंबर 2024 तक भारत की स्थापित परमाणु बिजली उत्पादन क्षमता लगभग 8,180 मेगावाट (MW) हो गई है।

सरकार ने लक्ष्य रखा है कि यह क्षमता बढ़कर लगभग 22,480 MW (लगभग 22.48 GW) हो जाएगी 2031-32 तक।

भारत ने तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम तैयार किया है जिसमें तीसरे चरण में थोरियम आधारित रिएक्टरों के ज़रिए बड़े पैमाने पर बिजली उत्पादन करने की योजना है।

Kalpakkam में 500 MWe (मेगावाट विद्युत) क्षमता वाला Prototype Fast Breeder Reactor (PFBR) है जो वर्तमान में सक्रिय हो रहा है।

भविष्य में IPHWR-700 प्रकार के रिएक्टरों की योजना है (जैसे कि Mahi Banswara Nuclear Power Plant, 4×700 MW = कुल 2,800 MW) स्थापित करने की।

थोरियम चक्र (Thorium Cycle) सम्बन्धी संभावनाएँ:

CSTEP की रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि यदि "driver fuel" के रूप में प्लूटोनियम या हल्के समृद्ध यूरेनियम (SEU = Slightly Enriched Uranium) का उपयोग किया जाए, तो थोरियम-यू-233 (Th-U-233) आत्म-निर्भर चक्र (self-sustaining cycle) के लिए क्षमता कुछ चरणों में विकसित की जा सकती है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2020 तक लगभग 5 GWe की क्षमता हो सकती है अगर SEU ड्राइवर ईंधन हो।

वर्ष 2035 और 2050 के लिए भी इससे जुड़े लक्ष्य और योजनाएँ विकसित की जा रही हैं।

इन आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि थोरियम-आधारित ऊर्जा की दिशा में भारत ने काफी groundwork तैयार कर लिया है। यदि ये योजनाएँ समय पर पूरी हों, तकनीकी चुनौतियाँ हल हों और निवेश व नीति एकरूप हों, तो थोरियम से जुड़े प्रोजेक्ट्स न सिर्फ ऊर्जा उत्पादन बढ़ाएँगे बल्कि देश को लंबे समय तक स्वच्छ, स्थायी और आत्मनिर्भर ऊर्जा की ओर ले जाएंगे।

कहकशां नहीं, कहर है बारिश का प्रकृति का उग्र चेहरा

सुनील कुमार महला
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

पाठकों को बताता चलूं कि इस साल यानी कि 2025 में भारत में मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से अधिक बारिश हुई है, जो दीर्घकालिक औसत का लगभग 105% रही है। हालांकि,बारिश की मात्रा राज्य दर राज्य भिन्न रही है, लेकिन पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्री-मॉनसून अवधि (1 मार्च से 31 मई) में 185.8 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 42% अधिक थी।

मानव की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है और आज मानव अपनी इच्छाओं, लालच और सुविधाओं की अंधी दौड़ में प्रकृति के संतुलन को लगातार बिगाड़ता चला जा रहा है और इसका परिणाम मानव को किसी न किसी रूप में भुगतना पड़ रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, अनियंत्रित विकास कार्य, खनिजों व जल का अंधाधुंध दोहन,अधिक ऊर्जा का उपयोग, जीवाश्म ईंधनों का दहन, वन्यजीवों का विनाश, अनियंत्रित मानवीय गतिविधियां आदि कुछ कारण हैं,जो प्रकृति का विनाश कर रहे हैं।प्रकृति से खिलवाड़ के दुष्परिणाम यह हो रहें हैं इससे धरती पर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि, स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे अस्थमा, एलर्जी, कैंसर आदि, जल संकट और खाद्य संकट, मानसिक तनाव और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के साथ ही साथ जैव विविधता का नुकसान हो रहा है। यदि यूं ही सब चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब मानव कहीं का नहीं रहेगा।इस

उत्तराखंड, हिमाचल इत्यादि राज्यों में जो दृश्य हाल के दिनों में दिख रहे हैं, वे एक चेतावनी हैं कि हमारी नीतियां और तैयारियां, दोनों ही इस खतरे के सामने अपर्याप्त हैं। इस वर्ष समय से पहले आए मानसून ने हिमालय से सटे राज्यों के अलावा पंजाब जैसे मैदानी क्षेत्रों और देश की राजधानी समेत आसपास के क्षेत्रों को भी नहीं बख्शा। लिहाजा इन आपदाओं से निपटने के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है।

साल 5 अगस्त 2025 को उत्तरकाशी के धराली और सुक्खी टॉप में बादल फटने की घटना हुई।बादल फटने के कारण यहां मूसलधार बारिश हुई, जिससे भारी बाढ़ आई और इस त्रासदी में कम से कम 5 लोगों की मृत्यु, 50 से अधिक लोग लापता, 40-50 घर और 50 होटल बह गए।इसी प्रकार से थराली, चमोली में भी 23 अगस्त 2025 को रात के समय बादल फटने से मूसलधार बारिश हुई, जिससे मलबे के साथ बाढ़ आई, जिसमें एक व्यक्ति की मृत्यु, एक व्यक्ति लापता तथा कई घर, दुकानें और सड़कें मलबे से प्रभावित हुईं। इसके बाद देहरादून के सहस्त्रधारा और मालदेवता में 16 सितंबर 2025 को बादल फटा। जानकारी के अनुसार वहां रातभर की मूसलधार बारिश के कारण बादल फटा, जिससे बाढ़ आई और इससे कम से कम 4 लोगों की मृत्यु, 16 लोग लापता, कई दुकानें और वाहन बह गए।यह भी खबरें आईं हैं कि टोंस नदी में बहने से 15 मजदूरों की मौत हो गई।इसी दिन हरिद्वार, टिहरी और नैनीताल में भी मूसलधार बारिश के कारण नदियाँ उफान पर आ गईं, और कई स्थानों पर भूस्खलन और जलभराव हुआ, जिससे कई सड़कें अवरुद्ध हो गई, फसलों और घरों को नुकसान पहुंचा, तथा कई लोग फंस गए। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हिमालयी क्षेत्र में बार-बार बादल फटने की घटनाएं हो रहीं हैं।यह दर्शाता है कि आज मानसून की प्रकृति में पहले की तुलना में काफी बदलाव आ चुके हैं और यह कहीं न कहीं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव है। इस साल हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, पंजाब समेत देश के विभिन्न राज्यों में प्रकृति का प्रकोप देखने को मिला और यह अचानक से हुई घटनाएं नहीं हैं, अपितु कहीं न कहीं मानव को प्रकृति का एक संकेत है कि यदि हम अभी भी नहीं संभले तो आने वाले समय में हमें प्रकृति के और भी रौद्र रूप का सामना करना पड़ेगा। दरअसल, पहाड़ी क्षेत्रों में पहाड़ों से टकराकर हवा ऊपर उठती है। इससे नमी तेजी से संघनित होती है और छोटे क्षेत्र में अधिक पानी जमा हो जाता है। यही बादल फटने का बड़ा कारण है। अत्यधिक नमी और गर्म हवा का मिलना, हवा का संतुलन बिगड़ना, जलवायु परिवर्तन तथा वनों की कटाई और निर्माण बादल फटने के अन्य कारण हैं। हाल ही में देहरादून में अतिवृष्टि से तमसा, कारलीगाड़, टोंस व सहस्त्रधारा में जलस्तर बढ़ने से आसपास के घरों और दुकानों इत्यादि में एकाएक पानी तर गया। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार ऋषिकेश की चंद्रभागा नदी भी उफान पर है। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस साल देहरादून में सितंबर में हुई बारिश ने बीते कई दशकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है, और इस बार पूरे उत्तराखंड में आसमान से आफत बरसाने में मानसून ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

पाठकों को बताता चलूं कि इस साल यानी कि 2025 में भारत में मानसून सीजन (जून से सितंबर) में सामान्य से अधिक बारिश हुई है, जो दीर्घकालिक औसत का लगभग 105% रही है। हालांकि,बारिश की मात्रा राज्य दर राज्य भिन्न रही है, लेकिन पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में प्री-मॉनसून अवधि (1 मार्च से 31 मई) में 185.8 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य से 42% अधिक थी। जानकारी के अनुसार जून 2025 महीने में 180 मिमी वर्षा हुई, जो सामान्य 165.3 मिमी से 8.89% अधिक थी।इसी प्रकार से अगस्त 2025 के दौरान दिल्ली में 400.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 233.1 मिमी से 72% अधिक थी। पंजाब और हरियाणा का हाल किसी से छिपा नहीं हुआ है कि वहां पर किस कदर बारिश ने कहर बरपाया है। राजस्थान भी भारी बारिश का शिकार बना। आंकड़े बताते हैं कि 1 जून – 14 सितंबर 2025 तक पंजाब में 617.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 409.7 मिमी से 51% अधिक है। इसी अवधि में हरियाणा में 145% अधिक वर्षा हुई, जो सामान्य 409.7 मिमी से अधिक है।राजस्थान में इस अवधि में 436.7 मिमी वर्षा दर्ज की गई, जो सामान्य 435.6 मिमी से अधिक है। सच तो यह है कि 2025 में भारत में बारिश की अत्यधिक घटनाएँ मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन, मानसून की अनियमितता, और अन्य मौसमीय कारकों के संयोजन के कारण हुईं। विशेषकर पंजाब, हरियाणा, और राजस्थान में यह स्थिति अधिक गंभीर रही, जिससे व्यापक बाढ़, फसल क्षति, और जनजीवन प्रभावित हुआ। मैदानी क्षेत्र तो मैदानी क्षेत्र, पहाड़ों को बारिश ने बुरी तरह से प्रभावित किया।

दरअसल, हिमालयी क्षेत्र की भौगोलिक बनावट और नाजुक पारिस्थितिकीय तंत्र इस क्षेत्र को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाते हैं। मौसम विभाग ने हाल फिलहाल उत्तराखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर राज्यों, कर्नाटक से लेकर तमिलनाडु तक भारी बारिश के दौर के जारी रहने की संभावनाएं जताई हैं। बहरहाल,

यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि बादल फटने की घटनाएं भू-स्खलन और बाढ़ का कारण बनती हैं और साथ ही, स्थानीय समुदायों, बुनियादी ढांचे और आजीविका को भी भारी नुकसान पहुंचाती हैं। आज प्रकृति में निरंतर बदलाव आ रहें हैं और इसके लिए कहीं न कहीं मनुष्य और उसकी गतिविधियां जिम्मेदार हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि हम प्रकृति का सम्मान करें, उसकी रक्षा व संरक्षण करें। इसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे और जंगलों की रक्षा करनी होगी।पानी और ऊर्जा का सावधानी से उपयोग करना होगा। प्रदूषण कम करने के लिए पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को अपनाना होगा। प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना होगा और प्लास्टिक के विकल्प तलाशने होंगे। जैव विविधता की रक्षा में सहयोग करना होगा। इतना ही नहीं, सबसे बड़ी बात यह है कि हमें जलवायु परिवर्तन पर जागरूकता फैलानी होगी।

वास्तव में उत्तराखंड, हिमाचल इत्यादि राज्यों में जो दृश्य हाल के दिनों में दिख रहे हैं, वे एक चेतावनी हैं कि हमारी नीतियां और तैयारियां, दोनों ही इस खतरे के सामने अपर्याप्त हैं। इस वर्ष समय से पहले आए मानसून ने हिमालय से सटे राज्यों के अलावा पंजाब जैसे मैदानी क्षेत्रों और देश की राजधानी समेत आसपास के क्षेत्रों को भी नहीं बख्शा। लिहाजा इन आपदाओं से निपटने के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है। इतना ही नहीं, हमें मौसम पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को भी अधिक मजबूत बनाने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है। आपदा प्रबंधन और प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास पर भी हमें ध्यान देना होगा।इतना ही नहीं, स्थानीय जनता को मौसम विभाग की भविष्यवाणी और सूचनाओं के प्रति जागरूक बनाने के लिए बहुस्तरीय प्रयास किए जा सकते हैं। मौसम विभाग से प्राप्त जानकारी को सरल भाषा में समझाकर साझा किया जाए, ताकि आमजन सतर्क हो सके। साथ ही साथ गलत सूचनाओं को तुरंत खंडित करने के लिए प्रशासन और मीडिया के बीच समन्वय स्थापित होना चाहिए। पंचायत, नगर निगम, स्वयंसेवी संगठन, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को जागरूकता अभियान में शामिल किया जाना चाहिए। हिमालयी क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों पर भी स्थानीय प्रशासन और लोगों को अपनी नज़र रखनी होगी, क्यों कि अवैध निर्माण के कारण अनेक प्रकार की दिक्कतों और परेशानियों का सामना स्थानीय जनता को करना पड़ता है। ताजा आपदा हमें यह याद दिलाती है कि प्रकृति के साथ खिलवाड़ की कीमत बहुत भारी हो सकती है। हमें यह चाहिए कि हम प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करें और प्रकृति के नियमों का सम्मान करें। हमें यह चाहिए कि हम विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकता अनुसार उपयोग करें, न कि असीमित दोहन। वन, जल, मिट्टी, हवा, पशु-पक्षी सबकी रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है। विकास करते समय हम पर्यावरणीय संतुलन का ध्यान रखें और अपनी जीवनशैली को प्रकृति अनुकूल बनाना सीखें, तभी वास्तव में हम प्रकृति के रौद्र रूप से बच सकते हैं।

नदियों का प्रदूषण दूर करना हमारा कर्तव्य

डॉ. बी. आर. नलवाया
मंदसौर

वर्तमान में हमारे देश की नदियों में जल प्रदूषण का विकराल रूप धारण किया है इसलिए नदियों को प्रदूषण एवं उसके बचाव की समस्या के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। नदियों की रक्षा को लेकर 2005 में विश्व नदी दिवस मनाने की शुरुआत की गई थी । प्रतिवर्ष सितंबर महीने के चौथे रविवार को नदी दिवस मनाया जाता है। जिसमें प्रदूषण के प्रति चिंतन और प्रदूषण को दूर करने की कार्य योजना पर विचार किया जाता है।

आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में प्राचीन काल से ही नदियों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश के सभी धार्मिक शहर नदियों के किनारे ही बसे है, साथ ही नदियों के किनारे व्यापार एवं यातायात की सुविधाओं के कारण देश के अधिकांश नगर भी नदियों के किनारे ही विकसित हुए है। देश की अधिकांश जनसंख्या को कृषि कार्य एवं पीने के लिए नदियां ही आज भी जल उपलब्ध करवाती है। फिर भी हमारी नदिया दिनोदिन दूषित होती जा रही है। बढ़ते प्रदूषण की वजह से जलवायु में भी परिवर्तन हुआ है, जिसके कारण भी नदियां सिकुड़ती जा रही है। नदियों के सिकुड़ने का 40 से 50 प्रतिशत हो चुका है।

भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों अमेरिका, पोलैंड, दक्षिणअफ्रीका, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, कनाडा, ब्रिटेन आदि देशों द्वारा आम जनता में नदियों के संरक्षण की भावना को जागृत करने के लिए विश्व नदी दिवस मनाया जाता है। नदियों के साथ अब हमें उचित व्यवहार की आवश्यकता है, क्योंकि नदियों के जल को बहुत ही पवित्र माना जाता है। स्पष्ट है कि विश्व प्रसिद्ध महांकाल ज्योतिर्लिंग मंदिर उज्जैन में 26 दिसंबर, 2022 को भव्य कलश यात्रा के समापन पर देश की 313 पवित्र नदियों के जल से भगवान महाकाल का महाभिषेक किया गया, साथ ही देश भर के 800 जलविदो द्वारा जल संरक्षण के लिए मंथन भी किया गया।

यदि नदियों का संक्षिप्त वर्णन देखें तो देश में सबसे ज्यादा नदिया मध्यप्रदेश के बाद उत्तरप्रदेश में बहती है। वैसे देश में करीबन 400 नदियां हैं, इनकी कुल लंबाई करीब 2 लाख किलोमीटर होगी । इतने में पांच बार धरती का चक्कर लगाया जा सकता है, यह अपने साथ 1869 अरब

घन मीटर पानी लेकर चलती है। इतने में पूरा देश 2 फीट पानी में डूब सकता है। यह नदियां 125 करोड लोगों की प्यास बूझाकर देश की सांस्कृतिक धरोहर को पुष्पित पल्लवित करती हैं इसके बावजूद हम उनकी नदियों की रखरखाव अच्छा नहीं कर पा रहे। सिंधु नदी विश्व की बड़ी नदियों में से एक है। अफ्रीका के नॉर्थ ईस्ट में बहने वाली नील नदी विश्व की सबसे लंबी नदी है, जबकि दक्षिण अमेरिका की अमेज़न नदी विश्व की सबसे बड़ी नदी है। गंगा नदी भारत की सबसे पवित्र नदी है जो हिमालय से निकलकर उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश और बिहार से होती हुई, बंगाल की खाड़ी में जाकर मिल जाती है। गंगा नदी को शीघ्र प्रदूषण मुक्त करना बहुत आवश्यक है ,क्योंकि अन्य नदियों को साफ रखने के लिए इससे प्रेरणा दी जा सकती है। अधिकांश नदियां प्रदूषित है। दुनिया में कोई भी नदी ऐसी शेष नहीं बची है जो प्रदूषित नहीं है, अगर हमने चिंता ना की तो सभी नदियां अपना अस्तित्व खो देगी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल की माने तो देश की कुल नदियों में से करीब आदि बुरी तरह प्रदूषित है। कुछ नदियां तो इतनी प्रदूषित है, कि उनका पानी न तो पीने योग्य है, और नहीं अन्य किसी कार्य के लिए उपयुक्त हैं। जन सहयोग के बिना नदियों को प्रदूषण मुक्त किया जाना संभव नहीं है। विदेश में नदियों को पुराने स्वरूप में लाने के लिए बान्ध तोड़े गए । इससे पर्यावरण तेजी से बदलने लगा, यह स्पष्ट है, कि यदि नदियाँ का पानी बचाना और तबाही से बचना तो नदियों को अविरल बहने दे, और उनके मार्ग में कोई निर्माण न करें। राजस्थान में कई नदियां समुद्र में नहीं मिलती है, बल्कि वे नमक के झीलों में मिलकर रेत में जम जाती है। देश की सबसे छोटी नदी अरवरी नदी राजस्थान में 90 किलोमीटर की सीमा में बहती है। जबकि गंगा नदी 2525 किलोमीटर, गोदावरी नदी 1465 किलोमीटर, ब्रह्मपुत्र नदी 2900 किलोमीटर, नर्मदा नदी 1312 किलोमीटर बहती है। नर्मदा और ताप्ती नदी पश्चिम की ओर बहने वाली मुख्य नदियां है। मेघालय की उमंगोत नदी को देश की सबसे साफ नदी का खिताब हासिल है। गंगा को भारत की सबसे लंबी नदी के रूप में माना जाता है एवं वर्ष 2008 में इसे भारत की राष्ट्रीय नदी के रूप में स्वीकार किया गया। बांग्लादेश में नदियों की संख्या सबसे अधिक है। एक सर्वे में 800 नदियों का अध्ययन किया गया, जिसमें 87 % नदिया गर्म हो रही है तो वही 70% नदियों में ऑक्सीजन की कमी होने लगी है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह नतीजा हमें एक बड़ी चेतावनी दे रहा है।

भारत में प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ सबसे ज्यादा कर बरपाती है। देश में प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान का कुल 50% केवल बाढ़ से ही होता है। देश के विभिन्न भागों में सुखे और बाढ़ की समस्या से स्थाई रूप से निजात पाने के लिए काफी लंबे समय से नदियों को जोड़ने की परियोजना पर 1980 में केंद्रीय सिंचाई मंत्रालय ने कुल 30 परियोजनाओं को राष्ट्रीय स्वरूप का बताते हुए उन्हें मंजूर किया था, जिनमें 14 हिमालय के क्षेत्र की थी। इस नदी जोड़ परियोजना पर तेजी से काम शुरू तो हुआ, लेकिन उस पर अमल नहीं हुआ। अब 42 साल के बाद केन-बेतवा नदी जोड़ परियोजना पर मोदी सरकार ने काम शुरू किया है।

हमारे देश में जल प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या है। नदियों के प्रदूषण एवं उसके बचाव की समस्या के प्रति हमारा जागरूक होना अत्यंत आवश्यक है। देश में प्रतिवर्ष 8 लाख व्यक्ति जल प्रदूषण के कारण मरते हैं, प्रदूषित नदियों के जल द्वारा सिंचाई करने से फसलों को नुकसान पहुंचता है। इसी जल से सब्जी, फसल, फल खराब होते हैं और इन्हें खाकर हम बीमार होते है। वैसे तो चीन में भी हजारों नदियां लुप्त हो गई है ,उनका चीन में भी 80 से 90 प्रतिशत भूजल और उसका आधा पानी पीने योग्य नहीं है, चीन में भी आधे से अधिक भूजल और एक चौथाई नदी जल इतना प्रदूषित है कि उनका उपयोग उद्योगों या खेती के लिए भी नहीं किया जा सकता।

देश की सबसे पवित्र कहीं जाने वाली गंगा नदी आज की सबसे दूषित नदी बन चुकी है। इस पवित्र नदी में बस्तियों के मल, उद्योगों के

अवशिष्ट पदार्थ के साथ शवो को जलाए बिना इसमें बहा दिया जाता है। गंगा नदी के साथ यमुना नदी की भी यही स्थिती बनी हुई है। वास्तव में हमारे देश में जल प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुकी है। सभी स्थानीय निकायों द्वारा आम जनता को जागरूक कर श्रमदान द्वारा नदियों की सफाई प्रति वर्ष अनिवार्य रूप से करना ही चाहिए।

नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न कानून और नियम बनाए हैं। 1987-88 में नदियों के जल की गुणवत्ता की निगरानी हेतु 170 निगरानी केंद्र खोले गए। केंद्र सरकार ने गंगा नदी के सफाई अभियान को प्राथमिकता देकर यह सिद्ध कर दिया है की नदियों का प्रदूषण दूर किया जा सकता है। नदियों में स्नान, शवदाहकर्म, शव विसर्जन, पूजन सामग्री का विसर्जन, मूर्तियों का विसर्जन आदि कार्य जनता के सहयोग से ही रोका जाना संभव है इसे ही नदियों का उद्धार हो पाएगा। दूसरी और मध्य प्रदेश राजस्थान की प्रसिद्ध नदी चंबल भी प्रदूषित हो गई है, इस में मछलियां सहित अन्य जीव जीवन तोड़ रहे हैं, दूसरी ओर इनमें गंदा फैक्ट्री का पानी मिल रहा है, इससे पानी बहुत गंदा हो चुका है। नदी दिवस के अवसर पर हम प्रण करें कि नदियों को स्वस्थ रखेंगे, साफ सुथरा रखेंगे, गंदगी नहीं फेलाएंगे-- इसके प्रति हमें जागरूक रहना हमारा कर्तव्य होगा।

हम ही तथ्य है हम ही सत्य है

उमेश मानव

आज कि चर्चा इस बात कि है कि हम आपने को न समझकर दूसरों कि तर्ज पर चलना चाहते है। यह भी कि हम सभी अपनी चीजों को दूसरों पर लादना चाहते है। गुरुवर श्री अशोक मानवजी कहते है कि "हम 'पूर्ण' हैं हमें किसी की आवश्यकता नहीं जो हमे पूर्ण बनाये। प्रकृति के इस सत्य को न जान समझकर हम दूसरो के भरोसे पर हो जाते है। हमें लगता है कि कोई दूसरा हमे सही राह दिखा पायेगा। हम जैसे हैं जो है उसी में पूर्ण है कुछ और जोड़ने या पाने की जरूरत नहीं फिर भी हम अपने को कमतर मानकर साहार खोजने में लग जाते है। यही सबसे बड़ा अवरोध है हमारे सफर का।"

गुरुवर कहते है कि जब हम अपने को कहीं पहुंचाने के लिए प्रयास करने लगाते है या किसी अन्य के द्वारा बताये मार्ग पर चलने का प्रयास करने लगते हैं। तब हम विपत्ति में पड़ जाते है। इसके लिए सर्वप्रथम यह समझना अनिवार्य है कि हमें जो प्रकृति से मिला है जैसे यह शरीर, जैसे हमारा स्वभाव, जैसे हमारा परिवेश यह सभी कुछ पर्याप्त है। यह भी कि यही सारी चीजें ही हमें पूर्ण बनाती है। इसके लिए हमें दूसरों के ताने बाने की जरूरत नहीं है। जो हमें मिला है वह इसीलिए कि हम उन सभी के एहसास से गुजरें, यही एहसासों का समुच्य हमें पूर्ण विराम तक ले जायेगा। तनिक विचार करिये यदि ऐसा कुछ होता कि कोई एक चीज ही है जो सभी के लिए पर्याप्त है, सभी उसी

गुरुवर कहते है कि जो भी एहसास हमें हो रहा है वही हमारा सत्य है, वही हमे पूर्ण करेगा, वही हमारा सच्चा साथी है। गुरुवर और समझाते हुए कहते है कि हमारा सत्य हमारा एहसास यही तथ्य है। बाकि जो हम दूसरों से लेने या जुड़ने का प्रयास करते हैं वह दूसरों का विचार है। किसी अन्य का विचार उन्हीं के ही फिट है। तभी उन्हें उससे कुछ मिला। परन्तु यदि हम उसे अपनाते है तो हम यह तब तक नहीं कर सकते जब तक वह विचार हमारे रासायनिक गुण से मेल न खा जाये।

से, उसी मार्ग से ही पूर्ण हो जायेंगे। तो प्रकृति क्यों सभी को अलग अलग मार्ग देती, क्यों सभी को अपने मार्ग के एहसास से गुजरना होता। एक मार्ग सभी के लिए ही बना न देती। उसी पर चलकर सब पूर्ण हो लेते। यही बात तो हमारी समझ आनी है। हर किसी की अलग यात्रा है, स्वयं की स्वयं में यात्रा है। दूसरा हमारे लिए चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता। कोई दूसरा हमारे लिए सिवाय सिर दर्द के कुछ नही दे सकता। यदि कहीं ये उदाहरण आता भी है कि कोई किसी अन्य व्यक्ति की मदद कर रहा है तो यह भी किसी गुण मिलान के कारण ही होगा। कोई भी यू ही हमें कुछ नहीं दे सकता है। हम यह भी देख सकते है की समाज में कोई दो व्यक्ति एक दूसरे का सहयोग कर रहे है तो वह तभी हो सकता है जब दोनों का गुण एक हो या किन्हीं परिस्थितियों में दोनों एक ही प्रकार के एहसास से गुजर रहे हो।

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि जब दोनों में किसी गुण विशेष के मिलान की बात होगी तब दोनो साथ आयेंगे और उतने ही समय तक साथ रहेंगे फिर अलग - अलग हो जायेंगे। यह कोई समझ नही पाता बस उदाहरण लेकर, दूसरो के आइडिया को अपना बनाने में लग जाते है।

दरसल होता यह है कि ग्रंथों में पढ़कर, ज्ञानीजनों का साथ पाकर हमे लगने लगता है कि कही कोई बहुत बड़ी कमी है। हम जो कर रहे है उससे कुछ नहीं होने वाला। यह साधारण जीवन जी कर हमें मोक्ष नहीं मिलेगा। लोग तो घरद्वार छोड़कर अन्य वस्त्र त्यागकर पहाड़ो और जंगलो में जी रहे है। हम तो साधारण ही रह गये विषय वस्तुओं का भोग करते करते।

गुरुवर श्री अशोक मानवजी बताते है कि ‘यही से जिसे हम दुख कहते है, उसका प्रारम्भ होता है ‘ गुरुवर कहते है कि हम जो हैं जैसे है वैसे ही पूर्ण है। परन्तु जैसे ही हम अपने को अधूरा मानकर खोज शुरु करते है वही समस्या आती है। वे कहते है कि जो हमारा नही है, यानि हम जैसे नहीं है, दूसरो से समझकर वैसा बनने का प्रयास हमें कष्ट देता है क्योंकि अपने स्वभाव से विपरीत जब कोई चीज हमारे शरीर में प्रवेश करने का

प्रयास करती है तब हमारा मन, शरीर अदि उससे लड़ने लगाते है। यही टकराव गुरुवर कहते है कि दुःख है।

गुरुवर कहते है कि अच्छा बुरा, ज्यादा या कम जैसा भी जो हो हमें जो प्रकृति से मिला है वही हमारे लिए पूरक का काम करता है। यहाँ तक जो कुछ भी एहसास हमारे शरीर को हो रहा है वही सत्य है और हमारे लिए आवश्यक भी। इसी प्रकार हम एहसास लेते हुए और अपना जीवन जीते हुए हम सब पा लेंगे। एक उत्तम उदाहरण देते हुए गुरुवर कहते है कि माने लिजिए आप कहीं से कुछ खाकर आये जो शरीर के लिए जहर का काम किया, इतने पर ही आपके बिना जाने ही शरीर उसे अपने से बाहर करना शुरु कर देता है, दस्त या उल्टी के माध्यम से। वहीं हम समझदारी दिखाते हुए दस्त और उल्टी को ही गलत मानकर उसको रोकने के लिए दूसरो द्वारा बताई गई दवा खाना शुरु कर देते है।” वे आगे कहते है कि हमारी जो इच्छा होती है, जैसे कोई अमुक चीज खाने का मन होता है। तो खा लेनी चाहिए क्योंकि वही आपके शरीर की आवश्यता होती है। जो कि शरीर को लाभ पहुंचाती है। परन्तु होता यह है कि हम दूसरों के प्रभाव या दबाव में आकर वह खा लेते है जो हमें अरुचिकर है। जिसका स्वाद हमें बिलकुल अच्छा नही लगता। यह कैसी समझ है, यह कैसी स्वतंत्रता है। हम अपनी इच्छा अनुसार नहीं जी पाते है। यदि हम अपने स्वभाव को समझकर उसके अनुसार जीवन जीये तो हम सुख के रास्ते चल सकते है। हमारे शरीर के एहसास ही सत्य है। जो कि हमारे तथ्य होने का प्रमाण है। हम इन्हीं के बारे में विश्वास से कह सकते है, बता सकते है।

गुरुवर कहते है कि जो भी एहसास हमें हो रहा है वही हमारा सत्य है, वही हमे पूर्ण करेगा, वही हमारा सच्चा साथी है। गुरुवर और समझाते हुए कहते है कि हमारा सत्य हमारा एहसास यही तथ्य है। बाकि जो हम दूसरों से लेने या जुड़ने का प्रयास करते हैं वह दूसरों का विचार है। किसी अन्य का विचार उन्हीं के लिए ही फिट है। तभी उन्हें उससे कुछ मिला। यदि हम उसे अपनाते है तो हम यह तब तक नहीं कर सकते जब तक वह विचार हमारे रासायनिक गुण से मेल न खा जाये। हमारे स्वभाव की जमीन पर बाहर से आया विचार जब तारतम्य बना लेता है तब वह हमें हमारे एहसास के माध्यम से समझ आता है उससे पहले नहीं । उससे पहले की कोई भी कोशिश फिर व्यर्थ है स्वयं से युद्ध है। आज अधिकांशतः लोग इसी युद्ध से दुखी है। कुछ और, कुछ अलग करने की इच्छा, सम्पूर्णतः का लोभ ही आज सभी को टकराव और दुख दे रहा है । हास्यपद यह है कि इसकी जरूरत ही नहीं है। क्योंकि हमारे पास जो है वह काफी है वह सब पूरा करने के लिए, जो हम चाहते है।”

हमें अपने एहसास और अपनी धरती से ही वह सब मिलता है जिसके हम हकदार है। अपने में प्रकृति पर पूरा विश्वास रखें। आप पूर्ण है, एक सत्य है तथ्यात्मक विषय है। असत्य विचार नहीं। दिपावली की मंगल शुभकामनाओं के साथ।

कुत्ता और कानून

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

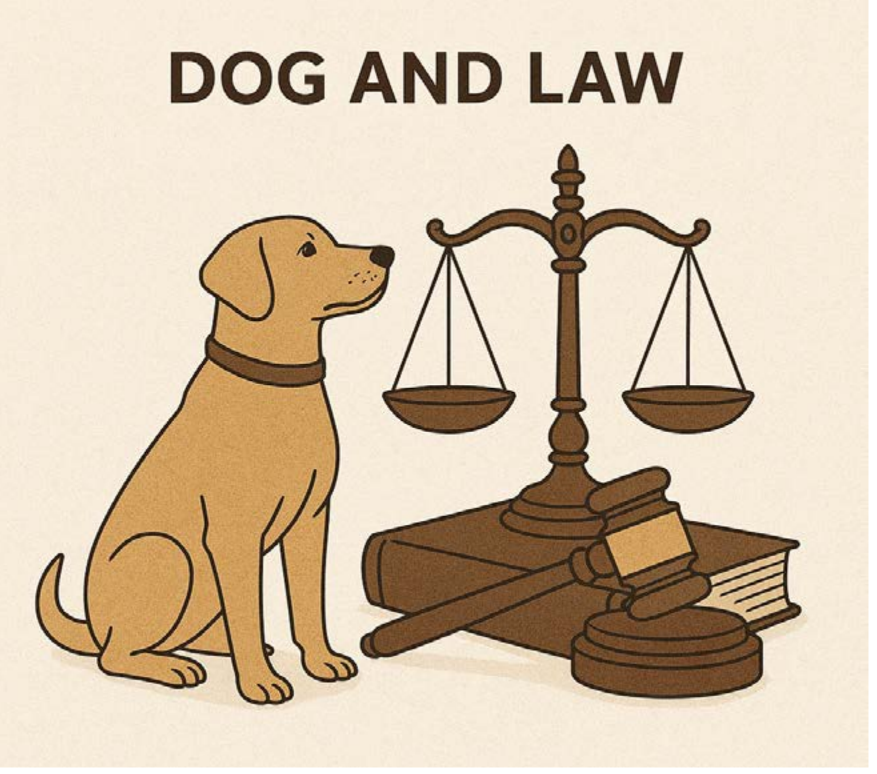

आज मैं एक ऐसे स्वामी भक्त कुत्ते की कहानी सुनाने जा रहा हूँ जो अब इस दुनिया में नहीं रहा। लेकिन उसका नाम उस घर में आज भी बडे.सम्मान के साथ लिया जाता है, जिसका नाम था "रामू"

यह चालिस साल पहले की कहानी है। मुखिया तब सचमुच गाँव का मुखिया होता था। आज की तरह तब झोल झाल नहीं होता था। ऐसे ही समय एक गाँव में कयला महतो नाम का एक छोटा मोटा ओझा वैध रहता था। झाड फूंक कर डायन भूत भगाता था और जंगली जडी बुटियों से मवेशियों का भी इलाज करता था। इसी क्रम में एक दिन आसनाटांड गाँव में लावारिस हालत में एक कुत्ते का बच्चा उसे मिल गया। कुतिया को किसी गाड़ी ने मार दिया था। बच्चा मृत माँ के पास टुअर की हालत में बैठा किंकिया रहा था। कयला महतो को उस पर दया आ गयी। वह उसे अपने साथ घर ले आया। घर में मिट्टी के एक बर्तन में उसे खाने को भात दिया। खाकर वह घर के आंगन के एक कोने में सो गया। सुबह उसे उसी बर्तन में फिर खाने को मांड भात मिला। उसने बडे. चाव से खाया और फिर आंगन के उसी कोने में जाकर बैठ गया। कयला महतो कहीं जा रहा था। कुत्ते का बच्चा उसके सामने आकर पूंछ हिलाने लगा। जैसे कह रहा हो। आपने मुझे नया जीवन दिया है, आज से आप मेरे स्वामी और मै आपका दास। कयला महतो ने उसकी भावना समझते हुए पीठ पर हाथ फेरते कहा आज से तु मेरा " रामू " है और मैं तेरा मामू ! कह बाहर निकल गया। शाम को लौटा तो रामू ने पूंछ हिला कर उसका स्वागत किया। कयला महतो ने उसका सर सहला दिया।

समय के साथ घर वालों से रामू परिचित होता गया। घर वालों के नाम और उनकी आवाज सब उसकी खोपडी में समाता गया। कौन घर वाले है और कौन बाहर बाहर वाले।

"रामू, मेहमान है आने दो.." जैसे शब्द को भी वह समझने लगा था।

भूरे रंग के रामू ने अपने लिए उस घर में एक जगह सुनिश्चित कर ली। गली से सटे दरवाजे का अंदर का कोना जहाँ बैठ कर घर में आने जाने वालों पर वह ठीक से नज़र रख सके। बैठने की जगह उसने पक्की कर ली। स्थायी पनाह मिल जाए, स्थायी खाना मिल जाए तो कोई भी प्राणी स्थिर हो ही जाता है। नसीब से रामू को यह सब मिल गया था। समय के साथ रामू बड़ा होता गया और छह माह बीतते बीतते वह गबरू जवान हो गया था। अब वह मोटा तगड़ा एक रामू हो चुका था। बच्चे चिढ़ाते -" मोटा रामू..मोटा रामू.. !" घर के बच्चे तो उसकी पीठ पर बैठ कर घोड़ा घोड़ा खेलने लगे थे । लेकिन रामू किसी को कुछ नहीं करता। उल्टे बच्चों के साथ रामू भी काफ़ी घूल मिल गया था। तभी एक ऐसी घटना घटी जिसने रामू की स्वामी भक्ति को उजागर करने का अवसर दे दिया था।

कयला महतो जरूरत के हिसाब से जडी बुटियों के लिए हर दूसरे तीसरे दिन जंगल जाता ही रहता था। इधर कुछ दिनों से रामू भी उसके पीछे लग जाता। हांलाकि कयला महतो ने कई बार उसे डांट कर घर में ही रहने को कहा। लेकिन रामू नहीं माना । उस दिन भी कयला महतो ने उसे पीछे आने से मना किया, तब रामू ने रोनी सूरत बना लिया -" ठीक है आओ " कयला महतो को कहना पडा था। उस दिन जडी बुटीक खोजते खोजते कयला महतो जंगल में काफी दूर निकल आया था।

किसी के लिए स्वेत प्रदर की विशेष दवा उन्हें बनानी थी। तभी उनको लगा वह पहाड़ी नाले में उतर आया है। रामू ऊपर ही रह गया था। नाले से बाहर निकलने को अभी वह सोच ही रहा था कि एक जंगली सुअर ने उस पर अचानक से हमला कर दिया। इससे पहले कि सूअर के नाखून उसे अपनी शिकार बनाता । पलक झपकते ही रामू सूअर के बीच में आ गया। दोनों के बीच गुथम गूथ शुरू हो गई। कभी रामू सूअर पर भारी पडता तो कभी सूअर रामू को घसीटता था। कयला महतो का बुरा हाल था। डर से एक पेड़ के पीछे दुबक गया था। एक बार तो रामू और सूअर दोनों झाडियों के बीच घूस गया और देर तक वहां से उठा पटक की आवाजें आती रही । कयला महतो को लगा अबकी रामू नहीं बचेगा सूअर उसे मार दिया होगा । बाहर निकल सूअर उसे भी मार देगा । भागने का ख्याल मन में आया ही था कि तभी देखा झाडियों के बीच से लडखडाता रामू बाहर निकल रहा है। वह दौडता हुआ रामू के पास पहुंचा था। फिर गले लगा लिया " रामू.. रामू ! आज तू नहीं होता तो मैं जीवित नहीं होता..! " इसी के साथ उसने रामू को कंधे पर उठा लिया और घर की तरफ दौड़ पडा । रामू का शरीर जख्मी हो चुका था।

कयला महतो के जीवन का शायद यह बुरा दौर था। सूअर के हमले से तो उसे रामू ने बचा लिया था। अबकी उस पर कानूनी हमला हुआ था और वह काफ़ी डर गया था। उसके एक खेत के बगल में परती टांड थी। जिस पर उगे पुटूस झाडियों को उसने काट कर साफ़ कर दिया था। टंडखेती करनी थी। उस पर कुरथी बुननी थी। एक दिन हल जोतते वक़्त थाने के एक सिपाही ने उसे देख लिया। वह उसी के गाँव के भीमा महतो को नोटिस देने आया था। उस पर भवासीन को डंडे से मारने का आरोप था। कयला महतो का हल जोतने की बात सिपाही ने थाने के जमादार को बताया। जमादार ने चौकीदार को बुलाया। दो दिन बाद चौकीदार ने कयला महतो के हाथ भी एक नोटिस थमा दिया। कयला महतो गिरता पड़ता मुखिया डिलू महतो के दरबार में पहुंचा। सारा वाक्या कह सुनाया।

"जमीन डूमरकेशन के बाहर है न..?" मुखिया ने पूछा था।

"डूमरकेशन से काफ़ी बाहर है मुखिया जी..!" कयला महतो ने रोते हुए बताया।

"ठीक है, तुम जाओ, चिंता मत करो मैं देख लूंगा.."

कयला महतो वापस घर लौट आया। लेकिन कपार में दर्द बना रहा । कयला महतो जब थाने नहीं पहुंचा तो दो दिन बाद थाने का जमादार खुद कयला महतो के घर पहुंच गया। उसने साईकिल घर के बाहर दीवार के सहारे खड़ा कर दिया और बिना दरवाजा खटखटाये बिना आवाज दिये, चुपचाप आंगन में उसने कदम रख दिया। रामू जो जख्म से उबर चुका था। और अपनी डियूटी बजाने लगा था। उसने जमादार को शक की नज़र से देखा। उसमें मालिक पर संकट के बादल उसे दिखा। हाफ पेंट और हाफ कुर्ता पहने उस अजनबी को अंदर जाते देख रामू के कान खड़े हो गए, वह फुर्ती से अपनी जगह से उठा था। जमादार अभी आंगन तक पहुंचा भी नहीं था कि पीछे से रामू ने जमादार पर हमला कर दिया। जमादार को ऐसे किसी हमले की अंदेशा न था। वह संभल पाता इससे पहले रामू ने उनके एक पांव को निशाना बनाया, मुंह मारा और नौ दो ग्यारह हो गया- "अरे, कुते ने काट लिया..!" जमादार चीखते हुए रामू के पीछे भागा - "किसका कुता था.. किसका कुता था..!" बकता हुआ जमादार वापस गली में आ गया था । परन्तु गली में उसे कोई नहीं मिला। घर में भी कयला महतो से मिल नहीं सका। आया था कपास ओटने, कुत्ते से कटवा बैठा। इस बीच रामू गधे की सिंग तरह जाने कहां गायब हो चुका था। जमादार ने उसका गुस्सा एक दूसरे कुत्ते पर उतारा। वह उसकी साईकिल पर मूत रहा था। जमादार ने लंगडाते हुए अपनी साईकिल उठायी और सीधे मुखिया घर पहुँच गया। मुखिया जी के पास कयला महतो पहले से बैठा हुआ था।

गाँव का चौकीदार कयला महतो का सहिया (सहयोगी) था। सूर्योदय से पहले वह कयला महतो को कह गया- "आज घर में मत रहना, रुपये ऐंठने जमादार कभी भी तेरे घर आ सकता है..!" और वह चला गया था। कयला महतो तभी से मुखिया घर आ बैठा था।

"जमादार यहां आयेगा ही..!" मुखिया ने कहा था।

और थोड़ी देर में जमादार भी मुखिया जी दरबार में पहुँच गया था..

"तो आपको लगता है, कयला महतो ने कानूनन जूर्म किया..?" मुखिया जी ने आते ही जमादार से सीधे सवाल किया था।

"वन विभाग की जमीन जोतना तो जूर्म है मुखिया जी..!"

"जमीन डूमरकेशन के अंदर है या बाहर..?"

"डूमरकेशन के बाहर है...।"

"फिर किस आधार पर आप कह रहे है, उस पर हल जोतना जूर्म है..?"

"डूमरकेशन से सटा हुआ है..!!!"

"आपने जमीन देखी है..?"

"नहीं, हमारा सिपाही कह रहा था..।"

"सुनिए, डूमरकेशन के बाहर की जमीन वन विभाग के अधीन नहीं आता। ऐसे गैर मजुरवा जमीन पर रैयत टंडखेती करता है और आप थाने का डर दिखा कर रैयत से पैसे वसूलने चले है, हमारे यहां यह सब नहीं चलेगा.. जाइए, नहीं तो आपकी शिकायत हमें बडे.साहब से करनी होगी..!"

"पर मुखिया जी..!"

"आप जाते है कि नहीं..?.. रूकिए, यह आपके पैरों का क्या हुआ..?"

"यहां आने के पहले कयला महतो के घर गया था..!"

"चोर की तरह चुपके से उसके घर में घूसा होगा, तभी कुत्ते ने काटा होगा।"

"आपको कैसे पता..?"

"गाँव में सबको पता है...!"

सूर्य नमस्कार से होता है शरीर में नई ऊर्जा का संचार

मुकेश कुमार सिंह
योगाचार्य

सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है यह अकेला अभ्यास ही साधक हो सम्पूण लाभ पहुचाने में समर्थ है। नियमित सूर्य नमस्कार से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाकर तनाव को कम करके रोग को हराया जा सकता है आज की आधुनिक जीवन शैली में इंसान दिन-रात काम कर रहा है। स्वस्थ रहने के लिए आहार-संयम और नियमित दिनचर्या के साथ-साथ शरीर के प्रत्येक अंग का सक्रिय रहना अति आवश्यक है इसलिए भोजन संयम, शयन और नियम, संयम के साथ -साथ नियमित योग की भी आवश्यकता है अक्सर देखा जाता है कि मानसिक श्रम करने वाले लोग शारीरिक श्रम करने से कतराते है और शरीरिक श्रम करने वाले बौद्धिक प्रगति को अनावश्यक समझते है। इससे शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टि से स्वस्थ लोग बहुत कम होते है। सूर्य नमस्कार स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा, वृद्धों सभी के लिए भी उपयोगी है। प्रातःकाल पूर्व दिशा में खड़े होकर शांत चित्त से सूर्य की स्तुति करते-करते सूर्यनमस्कार किया जाता है इस प्रकार शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ इसका धार्मिक महत्व भी है पूरे संसार को ऊर्जा देने वाले स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करने वाले विभिन्न ऋतुओं का सर्जन करने वाले, अन्न उत्पन्न करने वाले, जीवनदाता सूर्य को प्रभात में ही नमन करने से विशिष्ट किरणों का लाभ शरीर को प्राप्त होता है इससे शारीरिक व्यायाम तो होता ही है सूर्य नमस्कार से विचारात्मक और भावनात्मक स्पन्दन भी प्राप्त होते है सूर्योदय के समय यह व्यायाम करना बहुत ही लाभदायक होता है उगते सूर्य की किरणों द्वारा हमारे शरीर को विटामिन डी की भी प्राप्ति होती है इससे रक्त भी शुद्ध होता है तथा फेफडे. और हड्डियॉ मजबूत होती है। सूर्य नमस्कार में कुल बारह अवस्थाएँ या स्थितियॉ है इन बारह अवस्थाओं द्वारा शरीर के प्रत्येक अंग को उचित व्यायाम मिल जाता है । सूर्य नमस्कार रोज करने से हमारा शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है शरीर में ऊर्जा हमेशा बनी रहती है और शारीरिक एवं मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है। इसमें 7 प्रकार के आसनों से 12 प्रकार की स्थितियॉ बनायी जाती है वे इस प्रकार है।

1. प्रणामसन या नमस्कारासन 2. हस्त उत्तानासन 3. पाद हस्तासन 4. अश्व- संचालनासन 5. पर्वतसान 6. अष्टांग नमस्कार 7. भुजंगासन 8. पर्वतासन 9. अश्वसंचालन आसन 10. पाद हस्तासन 11. हस्त उत्तान आसन 12. प्रणाम आसन

क्रमपूर्वक इन आसनों को मंत्रों के साथ सूर्य नमस्कार के सात आसन व उसकी बारह स्थितियां इस प्रकार है-

1. प्रणाम आसन अपने आसन पर सीधे खड़े होकर दोनों हाथों को जोड़ कर सीने के सामने नमस्कार मुद्रा में रखें। श्वास सामान्य रखें।

2. हस्त उत्तान आसन नमस्कार मुद्रा में जोड़े गये दोनों हाथों को खोलकर श्वास भरते हुए बाहर की ओर रखते हुए भुजाओं को सिर के ऊपर से ले जाते हुए रीढ को पीछे की ओर झुकाते है अभ्यास धीरे -धीरे अपनी क्षमता

अनुसार करें क्योंकि ज्यादा पीछे जाने में भी चक्कर आता है जैसे-जैसे नियमित करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

3. पादहस्त आसन श्वास को छोड़ते हुए समाने की ओर झुकें अंगुलिया एवं हथेलियों को पैरों के बगल स्पर्श करवाना चाहिए, लेकिन पैर सीधे रहने चाहिए । यथासंभव झुकने का प्रयास करें। जैसे -जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

4. अश्वसंचालन आसन बायें पैर को जितना हो सके पीछे ले जॉए। इस स्थिति में जो पैर पीछे गया है उसका घुटना जमीन से स्पर्श करता रहेगा। साथ ही चेहरे को ऊपर की ओर ले जाना होता है और ऊपर की ओर देखना होता है ।

5. पर्वत आसन में दाहिने पैर को भी पीछे लाकर बायें पैर के बगल में रखना चाहिए। नितम्बों को ऊपर उठाकर सिर को दोंनों भुजाओं के भीतर से नीचे की ओर लायें। इससे पर्वत के समान आकृति बनती है । अन्तिम स्थिति में पैर एवं भुजाएं सीधी रहनी चाहिए। इस स्थिति में एड़ियों को भूमि से स्पर्श कराना चाहिए।

6. अष्टांग नमस्कार घुटनों को मोड़ते हुए शरीर को नीचे लाकर अष्टांग नमस्कार की स्थिति निर्मित करें । इसमें घुटने ,छाती,और ठुड्डी जमीन से स्पर्श करेंगे। नितम्ब का भाग थोड़ा उठा रहेगा । श्वास बाहर ही रूका रहना चाहिए।

7. भुजंग आसन में जंघाओं को भूमि पर सटा लेना चाहिए एवं सीने को ऊपर की ओर लाना चाहिए हथेलिया को सीने के बगल वाले स्थान पर टिकाकर शरीर को कमर से पीछे की ओर मोड़तें हुए अन्तिम स्थिति फन उठाये सॉप के समान होनी चाहिए। मेरूदण्ड धनुषाकार हो जाना चाहिए। कमर का भाग मोड़ते हुए श्वास को भीतर लेना चाहिए। मेरूदण्ड के निचले भाग पर सजगता रहनी चाहिए।

8. पर्वत आसन में दाहिने पैर को पीछे लाकर बायें पैर के बगल में रखना चाहिए। नितम्बों को ऊपर उठाकर सिर को दोंनों भुजाओं के भीतर से नीचे की ओर लायें। पर्वत के समान आकृति बनती है। अन्तिम स्थिति में पैर एवं भुजाऍ सीधी रहनी चाहिए । इस स्थिति में एड़ियों को भूमि से स्पर्श करनी चाहिए।

9. अश्वसंचालन आसन बायें पैर को जितना हो सके आगे ले जॉए इस स्थिति में जो पैर पीछे गया है उसका घुटना जमीन से स्पर्श करता रहेगा। साथ ही चेहरे को ऊपर की ओर ले जाना होता है और ऊपर की ओर देखना होता है ।

10. पादहस्त आसन में श्वास को छोड़ते हुए समाने की ओर झुकें। अंगुलिया एवं हथेलियों को पैरों के बगल स्पर्श करवाना चाहिए, लेकिन पैर सीधे रहने चाहिए । यथासंभव झुकने का प्रयास करें। जैसे -जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

11. हस्त उत्तान आसन में नमस्कार मुद्रा में जोडे. गये दोनों हाथों को खोलकर श्वास भरते हुए बाहर की ओर रखते हुए भुजाओं को सिर के ऊपर से ले जाते हुए रीढ़ को पीछे की ओर झुकाते है अभ्यास धीरे -धीरे अपनी क्षमता अनुसार करें। क्योंकि ज्यादा पीछे जाने में भी चक्कर आता है जैसे-जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

12. प्रणाम आसन में अपने आसन पर सीधे खडे. होकर दोनों हाथों को जोड़कर सीने के सामने नमस्कार मुद्रा में रखें। श्वास सामान्य रखें।

सूर्य नमस्कार करने से होने वाले महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ-

शारीरिक लाभः

1. सूर्य नमस्कार करने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। एवं सम्पूर्ण शरीर को लाभ मिलता है। सुबह खाली पेट और खुली जगह में सूर्य नमस्कार करना फायदेमंद होता है।

2. सूर्य नमस्कार करने से सोच सकारात्मक होती है।

3. सूर्य नमस्कार करने से मोटापा कम होता है।

4. सूर्य नमस्कार करने से पाचन तंत्र मजबूत कर कब्ज को मिटाता है ।

5. सूर्य नमस्कार प्रतिदिन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

6. सूर्य नमस्कार करने से रीढ़ की हड्डी मजबूत और कमर लचीली होती है।

7. सूर्य नमस्कार करने से शरीर को प्रयाप्त मात्रा में विटामिन डी मिलता है।

8. सूर्य नमस्कार रोज करने से आलस्य से मुक्ति मिलती है।

मानसिक लाभः

1. क्रोध पर नियन्त्रण होने से व्यक्तिव शान्त एवं संतुलित होता है ।

2. नियमित सूर्यनमस्कार से व्यक्ति तनाव मुक्ति होता है।

3. मन में निराशा चिडचिडापन ,अवसाद एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण रहता है।

4. नियमित सूर्यनमस्कार से एक मानसिक शांति मिलती है ।

5. सूर्य नमस्कार करने से स्मारण शक्ति बढ़ती है ।

6.सूर्य नमस्कार करने से भगवान के प्रति आस्था बढ़ती है। और अन्दर से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। जिससे नकारात्मक विचार खत्म होने लगते है। मन शांत हो जाता है।

सावधानियॉ एवं सीमायें

1. सूर्य नमस्कार तो सभी आयुवर्ग के लोग कर सकते है पर अपनी क्षमतानुसार ही करें ज्यादा उम्र के लोगों को योग गुरू की देख-रेख में ही करना चाहिए।

2. हदय रोग, ऑतों के रोग एवं मेरूदण्ड में समस्या हो, तो भी योग गुरू के निर्देशानुसार ही अभ्यास करना चाहिए।

क्या सामाजिक मनुष्य को समय के साथ बदलते रहना चाहिए ?

सुषमा त्रिपाठी

परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है और यह नियम संपूर्ण मानव जाति पर भी लागू होता है। देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार यदि हम अपने भीतर बदलाव नहीं करते अथवा समय के प्रवाह के साथ नहीं चलते, तो समय हमें अपनी परिधि से बाहर कर देता है। हमारी स्थिति उसी तालाब के स्थिर पानी जैसी हो जाती है, जो कालांतर में अपनी उपयोगिता खोकर केवल सड़ांध पैदा करता है।

हमारे समाज में यह बात तो हर व्यक्ति जानता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। हम सभी प्रकृति के कारण ही अस्तित्व में हैं। जिस दिन प्रकृति नहीं रहेगी, उस दिन पूरी मानव जाति एवं अन्य जीव-जंतुओं का भी अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसलिए हमें जीवन के कुछ मूलभूत आधारों को लेकर स्वयं में निरंतर परिवर्तन करते रहना चाहिए। यह परिवर्तन सदैव बुराई से अच्छाई की ओर होना चाहिए, न कि अच्छे से बुरे की ओर।

यदि हम अपने अंदर ऐसे बदलाव लाते हैं जो हमारे लिए, दूसरों के लिए और प्रकृति के लिए हितकारी हैं, तो उसका फल भी शुभ ही मिलता है। लेकिन यदि परिवर्तन गलत धारणाओं और विकृत सोच के आधार पर किया जाए, तो उसका दंड भी हमें ही भुगतना पड़ता है। हमारे शास्त्रों में कहा भी गया है – जैसी करनी, वैसी भरनी।

आज के युग में लोग अपने आप को इतना बदल चुके हैं कि वे अपने मूलभूत आधारों को ही भूलते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि चारों ओर अराजकता, शत्रुता, अश्लीलता और धार्मिक, राजनीतिक व सामाजिक अव्यवस्था का वातावरण दिखाई देता है। एक समय था जब समाज में यह मान्यता थी कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता विराजमान होते हैं। यह विश्वास था कि नारी का सम्मान ही सृष्टि की उन्नति का आधार है। लेकिन वर्तमान समय में अधिकतर लोग नारी का सम्मान करना भूल चुके हैं। वे उसे केवल भोग-विलास की वस्तु मात्र समझते हैं। जब तक हम इस बुरे बदलाव को अच्छे बदलाव में परिवर्तित नहीं करेंगे, तब तक समाज, देश और विश्व का कल्याण संभव नहीं है।

परिवर्तन केवल प्रकृति का ही नहीं, बल्कि मानव जीवन का भी नियम है। यदि हम देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को नहीं बदलते, तो समय हमें अपनी परिधि से बाहर कर देता है। हमारी स्थिति उस तालाब के स्थिर पानी जैसी हो जाती है, जो धीरे-धीरे सड़ांध में बदल जाता है और अपनी उपयोगिता खो बैठता है। जीवन तभी प्रवाहमान रहता है जब हम अपने विचारों और कर्मों में समयानुकूल परिवर्तन लाते हैं। विचारों के बीच होने वाला संघर्ष भी इसी परिवर्तन के पहिये को आगे बढ़ाता है और नए मूल्यों, आदर्शों तथा प्रतिमानों की स्थापना करता है।

पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में हमें अपने समाज के मूल्य, आदर्श और प्रतिमान कभी नहीं भूलने चाहिए। मूल सिद्धांत जैसे – सन्मार्ग पर चलना, दूसरों से अच्छा व्यवहार करना और वह न करना जो स्वयं को भी

अच्छा न लगे – कभी नहीं बदलने चाहिए। हाँ, कुछ बातें समय के साथ अवश्य बदलनी चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी समय बड़े परिवार को आदर्श माना जाता था, लेकिन आज जनसंख्या विस्फोट हमें बर्बादी की ओर ले जा रहा है। इसलिए छोटे परिवार का आदर्श अपनाना आवश्यक है। पहले नारी को महत्व नहीं दिया जाता था, लेकिन आज दिया जा रहा है, और यही हमारे समाज और परिवार को प्रगति की ओर ले जा रहा है।

समय के साथ अनेक उपयोगी चीज़ों का आविष्कार हुआ है। हमें उनके प्रति जागरूक रहना चाहिए और आवश्यकता अनुसार अपने आप को भी बदलना चाहिए। कहाँ बदलाव करना है और कहाँ नहीं, यह निर्णय हमारी विवेक शक्ति करती है। विवेक के जागरण के लिए भगवान के नाम का जाप, उपासना और गायत्री मंत्र का जप सहायक सिद्ध होते हैं।

क्योंकि बदलाव ही तो सृष्टि का नियम है। यदि बदलाव नहीं होगा, तो यह संसार आगे कैसे बढ़ सकेगा? इसलिए आगे बढ़ना है तो बदलना तो पड़ेगा ही। बदलाव एक आवश्यक प्रक्रिया है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बदलाव का पुरजोर विरोध करते हैं। वे अपनी पुरानी और जड़ सोच को ही महान बताते रहते हैं। लेकिन अंततः सच्चाई ही ऐसी चीज़ है जिसे सबको स्वीकारना ही पड़ता है, चाहे पहले करें या बाद में।

बदलाव भी एक सच्चाई है जिसे स्वीकार कर लेना चाहिए। बहुत साल पहले की बात है, जब लोग अपने कंधों पर हल रखकर खेती किया करते थे। मैंने स्वयं अपनी आँखों से यह सब होते हुए देखा है। परंतु आज के युग में खेती के साधन बदल गए हैं। यह भी बदलाव का एक उदाहरण है। यदि आज कोई वैसा ही करे तो उसे मूर्ख ही समझा जाएगा। इसलिए मनुष्य को समय के साथ बदलते रहना चाहिए।

ज्यादातर लोग समय के साथ बदल जाते हैं, लेकिन जो नहीं बदलते, उन्हें भी समय के अनुसार स्वयं को और अपने परिवार को बदलना चाहिए। जो अच्छा और सच्चा लगे, वही अपने अंदर अपनाना चाहिए। जो अपने और परिवार के कल्याण के लिए सुखद अनुभूति की मिसाल बने, वही असली बदलाव है। जिसने समय के साथ बदलाव करना सीख लिया, उसकी जिंदगी अच्छी जिंदगी बन जाती है।

मनुष्य को समय के साथ चलना और बदलना बहुत आवश्यक है। यदि आप जिंदगी में सुकून और सुखद जीवन की अनुभूति लाना चाहते हैं, तो इसके लिए हर कदम पर बदलाव लाना ही पड़ेगा। क्योंकि जो इंसान खुद को नहीं बदल पाते, वे पीछे छूट जाते हैं।

पिछले सौ वर्षों में तकनीकी और सामाजिक बदलाव बहुत तेजी से हुए हैं। पहले बदलाव धीमी गति से दिखाई देते थे, लेकिन अब हर क्षेत्र में नित नए परिवर्तन सामने आ रहे हैं। मैंने स्वयं अपने जीवन (53 वर्ष) में अनेक बदलाव देखे हैं। पहले घरों में सामान पीढ़ियों तक चलता था, जिसे लोग कहते थे – "दादा ले, पोता भरे।" लेकिन आजकल यदि कोई सामान तीन वर्ष भी चल जाए तो बड़ी बात है। आज के युग में स्थायित्व के बारे में सोचना कठिन हो गया है। अब तो लोगों को रिश्तों से भी जल्दी मन भर जाता है।

रिश्ते निभाते समय भी लोग स्वार्थ खोजते हैं। राखी जैसे त्यौहार में भाई और बहन जो भी उपहार देते हैं, उसी हिसाब से सम्मान का आदान-प्रदान होता है। इसमें भी प्रेम नाम की चीज़ कम होती जा रही है। नौकरी और व्यवसाय की बात करें तो कई पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो चुकी हैं। सुंदर लेखन, बॉयलर इंजीनियर और पुराने इलेक्ट्रॉनिक सामान बनाने का काम अब लगभग लुप्त हो गया है। महानगरों में जगह की कमी और उपभोक्तावादी सोच के कारण लोग पुरानी चीज़ों से मुँह मोड़ चुके हैं। अब तो नारा बन गया है – "पुराना हटाओ, नया खरीदो।"

जो बदलाव लाने के लिए तैयार रहते हैं, वही उन्नति करते हैं। हमें हमेशा वक्त की चाल को समझना चाहिए। तभी आप संबंधों और नौकरी में प्रगति कर सकते हैं। वरना सारी जिंदगी दूसरों को कोसते हुए ही बीत जाएगी। जिंदगी जीना आसान नहीं होता, यह तलवार की धार पर चलने के समान है। इसमें लापरवाही व्यर्थ है। नए विचार अपने में कोई बुराई नहीं है, किंतु आधारयुक्त इच्छाओं को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जन्म, बाल्यावस्था, यौवन और बुढ़ापा – जीवन का दूसरा नाम बदलाव ही है। आत्मा की मूलभूत खूबियाँ – शांति, परोपकार, कल्याण, आनंद, पवित्रता, शुद्धता, प्यार और सहयोग – शरीर छोड़ने तक एक जैसी रहती हैं। परिवर्तन यदि उचित हो तो कल्याणकारी होता है, परंतु जो बदलाव विकारों, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष और अहंकार से उत्पन्न हों, उन्हें अपने अंदर कभी नहीं लाना चाहिए। समय के साथ अच्छाई का बदलाव करते रहना ही मनुष्य का धर्म है।

रिक्तता

चिड़ियों के कलरव से पहले,
नयन सदा खुल जाते थे।
भोर सूर्य के दर्शन पा कर,
तन मन शक्ति जगाते थे।।

पुष्पों की जब मंद सुरभि भी,
आँगन में मुस्काती थी।
देख आपकी प्रेम प्रभा को,
पूर्वा शोर मचाती थी।।

सूर्य तेज सा चमकीला मुख,
सात्विक जीवन अपनाते।
दया प्रेम सँग मीठी बोली,
हँसकर ही करते बातें।।

क्रोध न दिखता क्षण भर
उनमें, काया थी निर्मल माटी।
नेक कार्य कर नाम कमाए,
छोड़ चले यह परिपाटी।।

लगता जब आनंदित जीवन,
क्यों बाधा घिर आती है।
हर्षित होता मन इक क्षण में,
दूजा दुःख थमाती है।।

पिता बिना संसार अधूरा,
सूना मेरा आँगन है।
आगे बढ़ने का प्रयास है,
किंतु सतत विह्वल मन है।।

वही भोर है वही किरण पर,
पात–पात हैं मुरझाए।
बिना छुए हम चरण आपके,
कैसे आगे बढ़ पाएँ।।

– प्रिया देवांगन "प्रियू"

विजयदशमी से महके कोना...!

कालचक्र सह असंख्य युद्ध संग्राम घटे,
सत्य की ज्योत जलाए 'श्रीराम' हैं डटे।
श्रीराम व रावण के बीच यह युद्ध हुआ,
अस्त्र-शस्त्र एवं छल बल से शुद्ध हुआ।

वन प्रजातियाँ युद्धभ्यास के न अनुभव,
इस युद्ध में श्रीराम ही उनके रहें वैभव।
एक ओर रहें प्रशिक्षित अनुभवी योद्धा,
दूसरी ओर वनवासियों में अद्भुत माद्दा।

प्रभु की विश्वास नय्या अनंत सागर पार,
उत्साह रूपी शस्त्र से हो जाएँ बेड़ा पार।
प्रभु की अगुवाई में जीत गई वानरसेना,
आओ मनाए विजयदशमी महके कोना।

यह समय है बड़ा अदभुत और हैं पावन,
इस धरा पर आए न जाने कितने रावण।
युगों तक मानव बुद्धि के तर्कों से निरस्त्र,
असुरी शक्तियाँ रावण-सी होती रहें पस्त।

- संजय एम तराणेकर

हिंदी हमारी आन, बान और शान

हिंदी हमारी आन, बान और शान है,
हर दिल में बसती इसकी पहचान है।
एकता के सूत्र में सबको पिरोती,
न किसी भाषा से यह द्वेष बोती।

भावों की नदियाँ इसमें निरंतर बहतीं,
मन की हर बात यहाँ सहज कहती।
सशक्त माध्यम अभिव्यक्ति का प्यारा,
हर शब्द बनता है रिश्तों का सहारा।

वैज्ञानिक शब्दावली से समृद्ध,
ज्ञान का प्रकाश करे यह अनूठा।
साहित्य से लेकर संस्कृति तक,
हर पहलू में इसका है उजाला।

विश्व की सिरमौर भाषा बनती जाए,
हिंदी की महिमा जग में फैलती जाए।

- सुनील कुमार महला

शब्द कभी मरते नहीं

शब्द कभी मरते नहीं
शाश्वत विचरण करते हैं
कभी मौन में व्यक्त होते हैं
कभी कोलाहल में तैरते हैं
शब्द नदी बन बहते रहते
जीवन की अविरल धारा में

मन की देहरी पर
भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं शब्द
शब्द बोलते हैं, भेद खोलते हैं
शब्दों में छिपे हैं मोती फूलों के
और तीर-तलवारें भी
शब्द हृदय में चुभते भी हैं
और मिटाते मन की पीड़ा

शब्दों से भाषा बनती है
भाषा भाव विचारों से
शब्द न हों तो, जादू कैसा
शब्दों का ही हेर-फेर है
कभी चाशनी से मीठे हैं
कभी नीम से कड़वे शब्द
शब्द बनाते रिश्तों का पुल
शब्दों की ताकत अनमोल

शब्द भाव हैं, शब्द प्रेम है
शब्द प्रार्थना, भक्ति, शक्ति
शब्द हँसाएं, शब्द रुलाएं
सुख-दुःख का कारण हैं इनसे
शब्दों की मर्यादा होती
शब्दों में दिखता व्यवहार
हृदय जीत लें, पल में चाहे
शब्दों का अद्भुत है खेल

शब्द राग है, शब्द गीत है
शब्द ही माँ की लोरी है
अंधियारों में राह बनाते
जीवन को संबल देते हैं
शब्द आत्मा की वाणी हैं
शब्द प्रेरणा का संगीत
शब्द आदि हैं, शब्द अंत हैं

मिटकर भी ये कभी न मिटते।

– नमिता वैश्य

तू कापुरुषों का पूत नहीं

चलने से पहले तय कर ले, दुर्गम पथ है अँधियारों का।
हे वीर व्रती ! तब बढ़ा चरण, होगा रण भीषण वारों का।।
यह भी तय है तू जीतेगा,शासन होगा उजियारों का।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

नदियाँ लावे की बहती थीं, जिनकी शुचि रक्त शिराओं में।
जो हर युग में गणनीय रहे, धू-धू करती ज्वालाओं में।।

तू उन अमरों का अजर पुत्र, आर्यों की अमर निशानी है।
तेरी नस-नस में तप्त रक्त, पानीदारों का पानी है।।

हे सूर्य अंश ! अब दिखा कला, कर सिद्ध शौर्य अंगारों का।
सुनकर माँगेगा बैर नीर, पथ है कर्कश टंकारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

तेरी जननी की हरी कोख, करुणा की तरल पिटारी से।
अवतरण हुआ है हे कृशानु ! तेरा बुझती चिनगारी से।।

हे हुताशनी पावक सपूत ! बलधर अकूत दमदारी से।
कर दानवता को भस्मभूत, अनलत्व भरी किलकारी से।।

खूँखारों की ललकारों का, सुन अट्टहास हथियारों का।
अब सहनशक्ति से बाहर है, कर ध्वंस वंश बटमारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

जो सीधे पथ के राही हैं, जिनके जीवन में मोड़ नहीं।
जिनको मरने तक जीना है, उन सबसे तेरी होड़ नहीं।।

मरकर भी नहीं मरे अब तक, जिनके साहस की जोड़ नहीं।
उनसे ही तेरी तुलना है, जिनका दुनिया में तोड़ नहीं।।

हो चुका निवेदन ज्वारों का, अब समय गया मनुहारों का।
हे अग्निपथिक ! संकोच त्याग, दायित्व निभा अधिकारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

दुश्मन छाती पर आ पहुँचा, लिखने को नई कहानी है।
हर बार हारकर लौटा पर, हिम्मत उसकी शैतानी है।।

इस बार साथ ला रहा शत्रु अन्धी आँधी तूफानी है।
हे युग प्रताप ! उठ देर न कर पानी में आग लगानी है।।

आ गया समय आहुतियों का, वैश्वानर की जयकारों का।
साहस की प्राण प्रतिष्ठा का, विस्फोटक की हुंकारों का।।
तू कापुरुषों का पूत नहीं, वंशज है अग्निकुमारों का।।

(कापुरुष=कायर, कृशानु=अग्नि, हुताशनी=अग्निधर्मा, उत्सर्ग प्राण=वीर गति, वैश्वानर=अग्नि,)

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

लौटने वाले को मत रोको

पंछी से पूछो
नीड़ में लौटने का मतलब
थके हुए पथिक से पूछो
घर लौटने का मतलब ।
लौटने में एक उम्मीद है
कल को बचाए रखने की ।
घर की मिट्टी जुड़ी है देह की मिट्टी से
इसलिए तो प्राणांत के समय
फड़फड़ाता रूह का पंछी
तकता है घर की ओर।
यह भी सच है
जो आज लौटा है, वही कल निकलेगा
फिर लौटेगा
लौटना अवश्यंभावी है,बढ़ते रहने के लिए
लौटने वाले को मत रोको।

- डॉ. कविता विकास

दूधी घास

प्रकृतिमेल डेस्क

हरियाली में छुपी प्रकृति कि गुणकारी रासायनिकता अकसर हमारी नजरों में नहीं आती है। हम कई ऑषधियों को अपने पैरों के नीचे दबाकर चले जाते है। कईयों को मामूली घास समझकर, बेकार समझकर मैदान से हटा देते है। ऐसा ही एक प्रकृति का उपहार है जिसे हम दूधी घास के नाम से जानते है। कुछ जगह इसे दुग्धिमा भी कहा जाता है। यह छोटी किस्म की घास जैसी दिखने वाली पौध रास्ते में, मैदानों में हर कहीं देखी जा सकती है।

इसको तोड़ने पर इसमें से दूध जैसा पदार्थ निकलता है। यही सफेद तरल पदार्थ इसे खास बनाता है। कहते है कि दूधी घास में फ्लैवोनोइड्स, अफ्जेलिन, क्वेसिट्रिन, मायरिस्ट्रिन, क्वेर्सिटिन, एंटी ऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल, जैसे तर पाये जाते है जो कि शरीर को स्वस्थ रखते है। दूधी में कई सारे और भी तत्व होते है जो कि शरीर में किसी प्रकार की सूजन या फंगल इंफेक्शन से लड़ने में मदद करते है।

मधुमेह के रोगियों के लिए यह प्रभावकारी है। दूधी घास शरीर में इंसुलिन की मात्रा को बढ़ाता है और खून में शकरा के स्तर को सही रखता है । सांस की दिक्कत में यह बहुत असरकारक है। कहा जाता है कि इसका काढ़ा बनाकर पीने से फेफड़ो की दिक्कत जैस फेफड़ो मे सूजन सांस की तकलीफ दूर होती है। यह खाँसी, दमा में भी लाभकारी होती है। दूधी हमारे फेफड़ों को मजबूत बनाकर सांस संबंधी विकारों को दूर करती है।

दूधी में पाया जाने वाला एंटीबैक्टीरियल गुण त्वचा की समस्याओं में लाभ देता है। इसके पत्तों का पेस्ट बनाकर लगाने से कील-मुंहासे, खुजली आदि से बचा जा सकता है। पेट से जुड़ी समस्याओं के लिए यह बहुत कारगर औषधी है। दस्त, पेट दर्द में यह बहुत लाभकारी है। दूधी में मौजूद रासायन खून साफ करता है और रक्त विकारों को दूर करता है। इसकी पत्तियों का पेस्ट बनाकर बालों में लगाने से बालों की चमक बड़ती है, बाल मजबूत होते है, घने भी होते है।

प्रकृति हर प्रकार से हमारा सहयोग करती है। हमारे चारों तरफ गुणों की खान है, अब जब चले झो देखकर पाव रखें।

“

वाह्य पुस्तिका में भौगोलिकता की सामान्य जानकारी होती है। ज्ञान की वैज्ञानिकता तो अपनी पुस्तिका में होती है। उसे पढ़ना सीखें। जिसका पन्ना तर्क से ख़त्म होकर एहसास से शुरू होता है।

– अशोक मानव

”

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।